जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

अजमेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

अजमेर, गुरुवार 17 जुलाई, 2025

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

International Year of Cooperatives
2025
Cooperatives Build a Better World

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के अवसर पर

सहकार एवं रोजगार उत्सव

मुख्य अतिथि

श्री अमित शाह

माननीय केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री

गरिमामय उपस्थिति

श्री भजनलाल शर्मा

माननीय मुख्यमंत्री

अन्न भण्डारण योजना के तहत निर्मित 24 गोदामों का लोकार्पण

श्री अन्न के प्रोत्साहन हेतु संचालित 64 मिलेट्स आउटलेट्स का लोकार्पण

गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना के तहत 1400 लाभार्थियों को ₹ 12 करोड़ का ऋण वितरण

दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों को 2346 माइक्रो एटीएम का वितरण

श्वेत क्रांति 2.0 पीडीसीएस ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन प्लेटफार्म की लॉन्चिंग

थानों,सशस्त्र बलों,ट्रूप कैरीअर तथा प्रशिक्षण हेतु 100 नए पुलिस वाहनों का फ्लैग ऑफ़

8 हजार से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरी के नियुक्ति पत्रों का वितरण

17 जुलाई, 2025 । प्रात: 11:00 बजे । स्थान - दादिया, वाटिका, जयपुर

सहकार से समृद्धि

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

विचार बिन्दु

प्रतिभा का अर्थ है बुद्धि में नई कोपलें फूटते रहना। नई कल्पना, नया उत्साह, नई खोज और नई स्फूर्ति प्रतिभा के लक्षण हैं। –विनोबा

साहित्य, कला और संस्कृति अकादमियों में सन्नाटा पसरा है

राजस्थान में भजन लाल शर्मा सरकार के गठन के 19 माह बाद भी प्रदेश की साहित्य कला, भाषा और संस्कृति के उन्नयन के लिए गठित एक दर्ज़न से अधिक अकादमियों में सन्नाटा पसरा है। अकादमियों में व्याप्त इस सन्नाटे को अगर जल्द नहीं तोड़ा गया तो इसका असर बहुत गहरा होगा। गहलोत सरकार के दौरान गठित अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारी अपना इस्तीफ़ा दे चुके है मगर भजन लाल सरकार एक लम्बे अर्से बाद भी अब तक इन अकादमियों को पुनर्गठित नहीं कर पायी है जिससे सम्बंधित सभी प्रकार की गतिविधियां ठप्प पड़ी है। कला,संस्कृति और साहित्य के बिना जीवन अधूरा है। इसीलिए किसी भी देश, प्रदेश, सरकार और समाज को वहां की संस्कृति, कला साहित्य को बढ़ावा देने के लिए समुचित प्रयास करने होंगे।

राज्य सरकार की अकादमियों के प्रति इस बेरुखी से प्रदेश भर के साहित्य और संस्कृति कर्मियों में भारी रोष व्याप्त है। एक जानकारी के मुताबिक राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ,राजस्थान ललित कला अकादमी, राजस्थान साहित्य अकादमी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, राजस्थान उर्दू अकादमी, राजस्थान सिंधी अकादमी, राजस्थान संस्कृत अकादमी, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी एवं राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, बाल साहित्य अकादमी, पंजाबी अकादमी, आदि प्रशासनिक अधिकारियों के हवाले है। अध्यक्ष, सचिव और सदस्यों की नियुक्तियां नहीं होने से प्रशासनिक अधिकारियों के भरोसे चल रही अकादमियां कलाकारों और विद्वानों के लिए पुरस्कार समारोह के आयोजन, ग्रंथों के प्रकाशन के साथ ही नीतिगत निर्णय नहीं ले पा रही हैं।

पिछली गहलोत सरकार के दौरान भी कई वर्षों तक अकादमियों में नियुक्तियां नहीं हुई थी। इन स्वायत्तशाषी संस्थाओं का प्रमुख उद्देश्य, क्षेत्रीय भाषाओं और लोक साहित्य का संरक्षण, कलाकारों, लेखकों और साहित्यकारों को प्रोत्साहन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, संगोष्ठियों, नाट्यय महोत्सवों का आयोजन, पारंपरिक लोककलाओं को आधुनिक मंच देना, युवा पीढ़ी में रुचि और चेतना पैदा करना हैं। राज्य सरकार की उपेक्षा के कारण कलाकारों, शोधार्थियों और संस्कृति क्षेत्र से जुड़े लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इससे कला, साहित्य, भाषा, संगीत और संस्कृति से जुड़ी अकादमियों के कार्य प्रभावति हो रहे हैं। इन संस्थाओं के लेखकों और कला प्रेमियों के जुड़े होने से नराशा का सामना करना पड़ रहा है।

राजस्थान अपनी आन, बान,शान, शौर्य, साहस, कुर्बानी, त्याग, बलिदान तथा वीरता के लिए सम्पूर्ण विश्व में ख्यात है। राजस्थान को भारतीय संस्कृति का गौरव कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ की स्थापत्य कला, संगीत, नृत्य, लोकगीत, वेशभूषा, हस्तशिल्प, वीर-प्रथाएँ, लोक कथाएँ और बोलियाँ - ये सभी भारत की विविधता में एकता का भव्य उदाहरण हैं। हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं से पूरी दुनिया प्रभावित है। राजस्थान साहित्य और संस्कृति के साथ त्योहारों और मेलों के लिए विश्व विख्यात है जो आमजन को कोई न कोई सन्देश देते है। इस सांस्कृतिक सम्पदा को संरक्षित करने और अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य अकादमियों, संस्कृति विभागों और साहित्य संस्थानों का होता है। लेकिन जब वही संस्थान निष्क्रिय हो जाएँ या खाली पड़े हों, तो यह सम्पदा दम तोड़ने लगती है।

राजस्थान अपनी आन, बान,शान, शौर्य, साहस, कुर्बानी, त्याग, बलिदान तथा वीरता के लिए सम्पूर्ण विश्व में ख्यात है। कला, साहित्य और सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि विश्व में अपनी अलग पहचान रखती है। राजस्थान को भारतीय संस्कृति का गौरव कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ की स्थापत्य कला, संगीत, नृत्य, लोकगीत, वेशभूषा, हस्तशिल्प, वीर-प्रथाएँ, लोक कथाएँ और बोलियाँ – ये सभी भारत की विविधता में एकता का भव्य उदाहरण हैं। यहाँ ढोला-मारू की प्रेमगाथा है, तेजाजी महाराज की लोक आस्था है, मांड और पिंगल जैसी काव्य विधाएँ हैं। मेवाड़, मारवाड़, हाड़ौती, शेखावाटी आदि क्षेत्रों की अपनी-अपनी सांस्कृतिक पहचान है। राजस्थान की कला और संस्कृति विश्वभर में प्रसिद्ध है। हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं से पूरी दुनिया प्रभावित है। राजस्थान साहित्य और संस्कृति के साथ त्योहारों और मेलों के लिए विश्व विख्यात है जो आमजन को कोई न कोई सन्देश देते है। इस सांस्कृतिक सम्पदा को संरक्षित करने और अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य अकादमियों, संस्कृति विभागों और साहित्य संस्थानों का होता है। लेकिन जब वही संस्थान निष्क्रिय हो जाएँ या खाली पड़े हों, तो यह सम्पदा दम तोड़ने लगती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि अकादमियों में बिना भेदभाव के योग्य साहित्यकार, लेखक, संस्कृतकर्मी और कलाकारों की नियुक्ति की जाये ताकि नए प्रतिभाशाली लोगों को उनका समुचित सम्मान और प्रत्साहन मिले।

–अतिथि सम्पादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
(वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार)

सुशासन में जनप्रतिनिधि की आवाज का प्रभावशाली माध्यम: संसदीय समितियाँ

डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा

संसदीय समितियां सदन का लघु रूप होती है। लोकतांत्रिक पद्धति में जितनी सदन की कार्यवाही महत्वपूर्ण होती है, उसी प्रकार संसदीय समितियों की कार्यवाही भी महत्व रखती है। संसदीय समितियों की कार्यवाही लोकतंत्र की पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन के लिए अत्यंत आवश्यक है। देश की विभिन्न राज्यों की विधान सभा की समितियों द्वारा परंपराओं के अनुसार, जनप्रतिनिधियों की सहभागिता, प्रशासन की जवाबदेही और लोकतंत्र की गुणवत्ता का वास्तविक परीक्षण किया जाता है। लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने देश के विधान मण्डलों की समितियों की सुदृढता की समीक्षा के लिए सात विधान सभा अध्यक्षों की एक समिति का गठन किया है। राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष श्री वासुदेव देवनानी इस समिति के सदस्य है। यह समिति देश के विभिन्न राज्यों की विधान सभाओं में गठित समितियों का तुलनात्मक अध्ययन कर विधान सभा समितियों की सुदृढता के लिए एक रिपोर्ट तैयार कर रही है। इस समिति में राजस्थान विधान सभा के साथ मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश और ओडिसा विधान सभा के अध्यक्ष भी शामिल है। समिति द्वारा तैयार की जाने वाली रिपोर्ट को लोकसभा अध्यक्ष को प्रस्तुत की जायेगी।

समितियों की सुदृढता के लिये महत्वपूर्ण सुझाव समिति की पहली बैठक मध्य प्रदेश विधान सभा में आयोजित हुई। इस बैठक में राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने महत्वपूर्ण सुझाव दिये। समितियों की बैठकों में सदस्यों की उपस्थिति बढ़ाये जाने के लिये सदस्यों का वर्चुअली जुडाव और समितियाँ में सदस्यों का चयन दलीय आधार के साथ-साथ योग्यता और विशिष्टता के आधार पर भी किया जाना चाहिए। समितियों में चार-पाँच वर्ष पुराने मामलों का परीक्षण होता है। समितियाँ द्वारा निकटस्थ वर्षों के मामलों का परीक्षण किया जाना चाहिए ताकि समितियों के सुझावों की क्रियान्विति के लिये उसी वर्ष के बजट में समावेश के अवसर मिल सकें। समितियों की बैठकों में सदस्यों की उपस्थिति को बढ़ायें जाने के लिये सदस्यों के वर्चुअली/ऑनलाइन जुडने पर विचार किये जाने का सुझाव भी आया।

समितियों की रिपोर्ट पर सदन में हो चर्चा - बैठक में प्रस्ताव आया कि समितियों की रिपोर्ट पर सदन में चर्चा कराये जाने पर विचार करना चाहिये। इससे विधायकों की समितियों के कार्यों में रुचि बढेगी। सदन में समितियों की रिपोर्ट पर चर्चा होने से जवाबदेही भी तय होगी। सदन में समितियों की रिपोर्ट पर चर्चा से विधायकों की समितियों के कार्यों में सहभागिता में वृद्धि हो सकेगी।

राजस्थान विधान सभा में समिति प्रणाली का सुदृढ़ीकरण, नवाचार व सुधार की दिशा में राजस्थान विधान सभा अग्रणी- राजस्थान विधान सभा में वर्तमान में 17 समितियों कार्यरत हैं। कुछ समितियों जिनका कार्य अपेक्षाकृत सीमित था। उन्हें अन्य अधिक सक्रिय समितियों में सृजनात्मक रूप से विलय कर पुनर्गठित किया गया है जैसे पुस्तकालय समिति को सरकारी आश्वासन समिति में और सदाचार समिति को याचिका समिति में समाहित किया गया है, जिससे समितियों का समेकित और प्रभावी संचालन सुनिश्चित हो सके।

राजस्थान विधान सभा में नवाचार- सामान्य प्रयोजनों संबंधी समिति का गठन- सभी समितियों की गतिविधियों की समयबद्ध समीक्षा हेतु सामान्य प्रयोजन समिति का गठन किया गया है। राजस्थान विधान सभा में ऐसी समिति का गठन पहली बार हुआ है। इस समिति की अध्यक्षता स्वयं अध्यक्ष करते हैं और जिसमें सभी समितियों के सभापति शामिल होते हैं

प्रत्येक तीन माह में बैठक आयोजित होती है, जिसमें समितियों की बैठक संख्या, परीक्षणों की प्रगति, सदस्यों की उपस्थिति आदि की गहन समीक्षा की जाती है। यह समिति समितियों की सक्रियता को आंकने का एक पारदर्शी माध्यम बन गई है, जिससे ना केवल कार्यप्रणाली में सुधार हुआ है, बल्कि सदस्यों की सहभागिता में भी बढ़ोतरी हुई है। अब समिति सदस्यों की वार्षिक उपस्थिति को ध्यान में रखते हुए पुनर्निर्युक्ति का निर्णय लिया जाता है। जो सदस्य अत्यंत न्यूनतम उपस्थिति दर्ज कराते हैं, उन्हें दोबारा समिति में शामिल न करने पर भी विचार किया जाता है।

सुशासन में जनप्रतिनिधि की आवाज का प्रभावशाली माध्यम- संसदीय समितियों के माध्यम से ही जनप्रतिनिधियों की आवाज़ को सुशासन की व्यवस्था में प्रभावशाली रूप से स्थापित किया जा सकता है। यह आवश्यक है कि न केवल समितियाँ सक्रिय रहें, बल्कि उनका दायित्व और परिणाम भी जनता तक पहुंचे। यह लोकतांत्रिक कर्तव्य भी है और दायित्व भी।

अगली बैठक राजस्थान में- समिति प्रणाली की समीक्षा के लिए गठित पीठासीन अधिकारियों की समिति की अगली बैठक को राजस्थान में किये जाने का प्रस्ताव राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने रखा। देवनानी के इस प्रस्ताव को बैठक में चर्चा के बाद स्वीकार किया गया।

–डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा,
उप निदेशक, जनसम्पर्क,
राजस्थान विधान सभा

सीएम भजनलाल शर्मा की पहल पर टीबी मुक्त राजस्थान की ओर तेजी से बढ़ते कदम

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में चिकित्सा विभाग टीबी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत राजस्थान को टीबी मुक्त बनाने के निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहा है। प्रदेश में 25 जून, 2025 से चल रहे सक्रिय क्षय रोग खोज अभियान के माध्यम से अब तक 74 लाख (44 प्रतिशत) से अधिक अति संवेदनशील जनसंख्या की घर-घर जाकर स्क्रीनिंग की जा चुकी है। अभियान का लक्ष्य 1.67 करोड़ संवेदनशील व्यक्तियों तक पहुंचना है। स्क्रीनिंग में अब तक 2,35,054 व्यक्तियों में टीबी के लक्षण पाए गए हैं, जिन्हें पुष्टि हेतु स्वास्थ्य संस्थानों में रेफर किया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के टीबी मुक्त भारत के संकल्प की दिशा में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशानुसार प्रभावी रणनीति के साथ काम किया जा रहा है। स्क्रीनिंग का अभियान 21 जुलाई 2025 तक चलेगा, जिसका उद्देश्य टीबी के छिपे मामलों की शीघ्र पहचान कर समय पर नि:शुल्क उपचार उपलब्ध कराना है। उन्होंने बताया कि अभियान के अंतर्गत पीएलएचआईवी, डायबिटीज रोगी, 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग, कुपोषित व्यक्ति, धूम्रपान/मद्यपान करने वाले, प्रवासी श्रमिक, आदिवासी समुदाय, पूर्व टीबी रोगी तथा खनन एवं निर्माण स्थलों, जेलों एवं शहरी झुग्गी बस्तियों में रहने वाले लोगों की घर-घर जाकर स्क्रीनिंग की जा रही है।

अति संवेदनशील जनसंख्या की स्क्रीनिंग सुनिश्चित करने के लिए राज्य और जिला स्तर पर अधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। अभियान की प्रगति की दैनिक समीक्षा भी की जा रही है। राजस्थान में घर-घर जाकर क्षय रोग के लक्षणों की जांच का यह अभियान, राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन लक्ष्य की दिशा में एक निर्णायक कदम है। जिला टीमों की मेहनत और आमजन की भागीदारी से समय पर अधिकतम रोगियों की पहचान संभव हो रही है, जिससे संक्रमण की श्रृंखला को तोड़ा जा रहा है।

मुख्यमंत्री के सतत पर्यवेक्षण के चलते प्रदेश में टीबी मुक्त ग्राम पंचायत अभियान के तहत वर्ष 2024 में 3,350 ग्राम पंचायतों को टीबी मुक्त घोषित किया गया है, जिससे समुदाय स्तर पर जागरूकता और भागीदारी में वृद्धि हुई है। इस अभियान में राजस्थान देशभर में तीसरे स्थान पर रहा है। अभियान के तहत अब तक 35,117 निक्षय मित्र पंजीकृत हो चुके हैं, जो टीबी मरीजों को पोषण, मानसिक सहयोग और आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करवा रहे हैं। निक्षय पोर्टल के माध्यम से टीबी मरीजों की पहचान, उपचार, एवं भुगतान की रियल टाइम निगरानी सुनिश्चित की जा रही है। टेक्नोलॉजी के साथ टीबी उन्मूलन की ओर सटीक और तेज कदम बढ़ाते हुए राज्य में टीबी रोगी खोज अभियान का सर्वेक्षण आशा डिजिटल हेल्थ ऐप के माध्यम से किया जा रहा है, और इसकी रीयल टाइम निगरानी डैशबोर्ड के जरिए सुनिश्चित की जा रही है। सभी संभावित मामलों में नाट आधारित परीक्षण को प्राथमिकता देकर राज्य ने सटीक व शीघ्र निदान की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। सहभागिता आधारित मॉडल के तहत एनजीओ, सीएसआर भागीदारों और निजी चिकित्सकों की सहभागिता से टीबी नियंत्रण प्रयासों को मजबूती मिली है। जिला स्तर पर इंटर-डिपार्टमेंटल समन्वय के माध्यम से पुलिस, महिला एवं बाल विकास, शिक्षा, श्रम विभाग जैसे विभागों के साथ मिलकर सुगठित व समग्र रणनीति बनाई जा रही है। संवेदनशील समूहों पर केंद्रित, माइक्रो प्लानिंग, 100 प्रतिशत डेटा प्रविष्टि और रिपोर्टिंग के साथ अभियान का संचालन हो रहा है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के निर्देशानुसार जिला और ब्लॉक स्तर पर नाट मशीन (629) माइक्रोस्कोपी, एक्स-रे मशीन, लैब तकनीशियन आदि की क्षमता वृद्धि के प्रयास किए गए हैं। चिकित्सा विभाग द्वारा वर्ष 2024 में राज्य में कुल 1,71,415 टीबी रोगियों का नोटिफिकेशन किया गया, जो निर्धारित लक्ष्य का 101 प्रतिशत है। जून 2025 तक 89,132 टीबी रोगियों का नोटिफिकेशन किया गया है, जो लक्ष्य का 110 प्रतिशत है। गौरतलब है कि नाट तकनीक टीबी की जल्दी और सटीक पहचान करने में सक्षम है, जिससे रोगी को समय पर उपचार मिल पाता है और संक्रमण का प्रसार भी रोका जा सकता है।

–तरूण जैन
अपनिदेशक सूचना एवं
जन सम्पर्क विभाग

दलहन आयात नीति- किसानों के लिए घातक - दलहन उत्पादन में देश को आत्मनिर्भर बनाने की घोषणा - 'थोथा चना बाजे घना'

राजपाल जाट

नीति आयोग के अनुसार वर्ष 2021-22 में देश में दलहन उत्पादन 246.5 लाख टन तथा मांग 267.2 लाख मीट्रिक टन थी, अर्थात मांग की तुलना में उत्पादन 23.7 लाख टन कम था। इसकी पूर्ति के लिए सरकार आयात के विकल्प को अधिक महत्व देती है। अनुमानत: वर्ष 2021-22 से लेकर वर्ष 2028-29 तक दलहन की मांग में 7.3 लाख मैट्रिक टन की बढ़ोतरी रहेगी। इसके अनुसार वर्ष 2025 में मांग 290 लाख टन होगी तथा उत्पादन 257.38 लाख टन रहेगा अर्थात देश में दलहन की 37.62 लाख टन की कमी रहेगी। वर्ष 2028-29 में दलहन का उत्पादन 318.3 लाख टन तथा मांग 297.9 लाख टन रहेगी। इसके अनुसार देश में दलहन की 20.4 लाख टन कमी रहेगी। इसके उपरांत भी भारत सरकार ने 72.6 लाख मीट्रिक टन का आयात किया है। इस आयातित दलहन को उत्पादन में जोड़ने पर देश के भंडार में 325 लाख टन दलहन है, जबकि मांग 290 लाख मीट्रिक टन की है। मांग से 35 लाख टन दालों का भंडारण अधिक होने से दालों के दाम घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी कम हो गए। इससे दलहन उत्पादक किसानों को बाजार में अपनी उपज न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी कम दामों में बेचनी पड़ रही है। भारत सरकार ने संसद में किसी भी किसान को घोषित 'न्यूनतम समर्थन मूल्य' से कम दामों में अपनी उपज बेचने के लिए विवश नहीं होने देने का वचन दिया हुआ है। दूसरी ओर भारत सरकार ने 'न्यूनतम समर्थन मूल्य' को 'गारंटीड मूल्य' की श्रेणी में रखा हुआ है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी नोटों पर 'मैं धारक को पञ्च सौ रुपये अदा करने का वचन देता हूं' अंकित रहता है, यह भारतीय रिजर्व बैंक की गारंटी है। इसी के कारण कागज के टुकड़े की बाजार में 500 रुपए क्रय शक्ति है, इसका पालन नहीं करने पर दंड का प्रावधान है। न्यूनतम समर्थन मूल्य को गारंटीड मूल्य तो घोषित किया हुआ है किंतु उसके लिए दंड का विधान नहीं है। इसलिए गारंटी होते हुए भी उत्पादक किसानों को अपना उत्पाद औने-पौने दामों पर बेचना पड़ता है।

विश्व में भारत दालों का सबसे बड़ा आयातक है। भारत सरकार ने दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता का संकल्प व्यक्त किया हुआ है। वर्ष 2021-22 में खरीफ एवं रबी में मूंग, उड़द, अरहर, मसूर, चना सभी दलहनों का उत्पादन 27.3 मिलियन टन था, जो वर्ष 2022-23 में 26.1, वर्ष 2023-24 में 24.3 तथा वर्ष 2024-25 के द्वितीय अग्रिम आकलन के अनुसार 23.0 मिलियन टन रह गया। इसमें चना वर्ष 2021-22 में 13.4, वर्ष 2022-23 में 12.3, वर्ष 2023-24 में 11.0 मिलियन टन रह गया। चने के आयात पर 65% तक आयात शुल्क लगाया गया था, जिसे घटाकर शून्य कर दिया गया।

पीली दाल का उपयोग चना एवं अरहर के विकल्प के रूप में किया जाता है तथा बेसन जैसे उप उत्पाद तैयार किए जाते है। पीली दाल चना एवं अरहर की तुलना में कम मूल्य पर प्राप्त होती है। दिसंबर 2023 में पीली दाल को आयात शुल्क से मुक्त करने से दलहन के आयात में पीली दाल की भागीदारी 2023-24 में 24.6% से बढ़कर 2024-25 में अप्रैल से लेकर नवंबर तक 37.4 प्रतिशत हो गई। इससे देश में दलहनों का उत्पादन विपरीत रूप से प्रभावित होता है। किसानों को तो घोषित 'न्यूनतम समर्थन मूल्य' भी प्राप्त नहीं हो पाता है। उन्हें औने पौने दामों में अपने उत्पाद बेचने पड़ते हैं। इसे दृष्टिगत रखते हुए 'कृषि लागत एवं मूल्य आयोग' ने वर्ष 2025-26 की 'खरीफ फसलों की मूल्य नीति' में पीली दाल के आयात को प्रतिबंधित करने की अनुशंसा की है।

इसके उपरांत भी भारत सरकार ने 31 मई 2025 को अधिसूचना प्रसारित कर पीली दाल के आयात की अवधि 31 मार्च 2026 तक बढ़ा दी है। यह 'करेला और नीम चढ़ा' की लोकोक्ति को चरितार्थ करता है। अलनीनो के प्रभाव के कारण वर्ष 2016 एवं 2017 में उत्पादन की मात्रा घट गई थी, जिसका कारण सरकार ने अलनीनो के प्रभावको माना था। देश में उस समय आयातित चार मिलियन टन पीली दाल के ढेर लग गए। उसे पटरी पर लाने के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि की गई एवं सरकारी खरीद को प्रोत्साहित कर वर्ष 2018 में उत्पादन के क्षेत्रफल में बढ़ोतरी की नीति अपनाई गई। जिससे स्थिति में सुधार संभव हुआ।

भारत सरकार की दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता की घोषणा:-

केंद्रीय कृषि मंत्रालय के अनुसार दलहन फसलों का क्षेत्रफल वर्ष 2021-22 में 307.71 लाख हेक्टर था। जो वर्ष 2024-25 में घटकर 278.5 लाख हेक्टर रह गया। परिणामस्वरूप उत्पादन वर्ष 2021-22 के 273.02 लाख मीट्रिक टन से घटकर 2024-25 में 252.38 लाख टन रह गया। दालों का आयात खर्च वर्ष 2021-22 से 2024-25 में 15,540 करोड रुपए से बढ़कर 46,428 करोड रुपए हो गया। इसी प्रकार आयात की मात्रा भी वर्ष 2021-22 से 2024-25 तक 2,51,965 मीट्रिक टन से बढ़कर 72,55,585 मीट्रिक टन हो गया।

कानपुर स्थित 'इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ पल्सेस रिसर्च' के निदेशक जी. पी. दीक्षित के अध्ययन के अनुसार चना उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर रहने वाले मध्य प्रदेश का चना उत्पादन का क्षेत्रफल 5 वर्ष की अवधि में 35 लाख हेक्टर से घटकर 20 लाख हेक्टर रह गया। सिंचित क्षेत्र बढ़ाने तथा तुलनात्मक रूप से गेहूं के दाम चने की अपेक्षा अधिक मिलने से चने का स्थान गेहूं की खेती ने ले लिया। दलहन खेती मौसम की संवेदनशीलता से अन्य फसलों की अपेक्षा अधिक प्रभावित होती है।

आत्मनिर्भरता के लिए दलहन खेती का क्षेत्रफल बढ़ाने के लिए किसानों को 'न्यूनतम समर्थन मूल्य' प्राप्ति सुनिश्चित करना अपरिहार्य है।

अरहर, उड़द, मसूर की भांति चना एवं मूंग की दाने दाने की खरीद का मार्ग प्रशस्त करने के लिए 'प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान' के प्रावधानों में समुचित संशोधन कर कुल उत्पादन में से 25% से अधिक खरीद नहीं करने के प्रतिबंध को हटाने, खरीद की अवधि अधिकतम 90 दिन को विलुप्त कर वर्ष भर खरीद चालू रखने तथा मार्गदर्शिका के अनुसार तीन दिन में भुगतान करने की पालना कठोरता से करना समीचीन है। गेहूं एवं धान खरीद नीति की भांति दलहन के दाने-दाने की खरीद करना आवश्यक है। उसी क्रम में न्यूनतम समर्थन मूल्य से बाजार भावों के संधारण के लिए आयात शुल्क का निर्धारण करना चाहिए, जिसमें आयात शुल्क 100% से कम नहीं हो।

भारत सरकार की ओर से वर्ष 2024-25 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 5 वर्षों में भारत को अरहर, उड़द, मसूर, चना की दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने की नीति तैयार करने का वचन दिया हुआ है। इस दिशा में दलहन उपज के बाजार भाव में न्यूनतम समर्थन मूल्य से गिरावट नहीं आवे, जिससे किसानों को उनके उत्पादों के घोषित न्यूनतम दाम प्राप्त हो सके। किसानों को लागत मूल्य से वंचित नहीं रहना पड़े। यदि किसानों को लागत मूल्य प्राप्त नहीं होता है तो उत्पादन में उनका उत्साह ठंडा हो जाता है। घरेलू बाजार तथा न्यूनतम समर्थन मूल्य का अंतर अधिक होने से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद विपरीत रूप से प्रभावित होती है। इस समय उड़द, चना, मसूर, मूंग की उपज की स्थिति चिंताजनक है। यदि यही स्थिति जारी रहती है तो सस्ते आयात के कारण भारत का घरेलू दाल व्यापार समाप्त होकर भारत आत्मनिर्भर होने के स्थान पर शत-प्रतिशत आयात पर निर्भर हो जायेगा। इससे मुक्ति दिलाने के लिए आयात-निर्यात नीति की समीक्षा कर उसे उत्पादक किसानों के अनुकूल बनाना महत्वपूर्ण कदम रहेगा।

यह आश्चर्य मिश्रित दुखद तथ्य कि दलहन उत्पादन में भारत की वैश्विक भागीदारी 28.02% है तब भी भारत उन देशों से आयात करता है जिनमें से किसी भी देश की वैश्विक भागीदारी 5.4% से अधिक नहीं है। वर्ष 2017 से 2025 तक की अवधि में आयात-निर्यात नीति में अस्थिरता रही तथा उपभोक्ताओं को कम वहनीय मूल्य पर दालों की उपलब्धता के लिए, उत्पादक किसानों को लाभकारी मूल्य तथा आयात पर निर्भरता को कम करने के उद्देश्यों के प्रतिकूल, नीतियां बनाई गई।

–रामपाल जाट,
राष्ट्रीय अध्यक्ष किसान
महापंचायत

राशिफल गुरूवार 17 जुलाई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, रेवती नक्षत्र रात्रि 3:39 तक, अतिगंड योग प्रात: 9:24 तक, विष्टि करण प्रात: 8:06 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 3:39 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। भद्रा आज प्रात: 8:06 तक है। आज कालाष्मी, शीतला सप्तमी (उड़ीसा) है। पंचक रात्रि 3:39 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:29 तक, चर 10:52 से 12:33 तक, लाभ-अमृत 12:33 से 3:55 तक, शुभ 5:37 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:47, सूर्यास्त 7:18

मेष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

सिंह

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में आज प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।

धनु

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में अतिथियों उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या

स्वस्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। आज महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

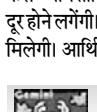

मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

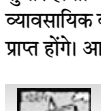

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना बनेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

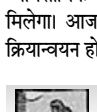

कुंभ

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

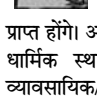

कर्क

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी।

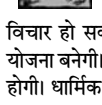

वृश्चिक

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

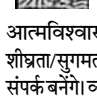

मीन

आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 वर्षः 29 संख्याः 346 प्रभात अजमेर, गुरुवार 17 जुलाई, 2025 आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

दादिया में गुरुवार को सहकार एवं रोजगार उत्सव का आयोजन

केन्द्रीय मंत्री अमित शाह प्रदेश को बड़ी सौगात देंगे, युवाओं को नियुक्ति पत्र मिलेंगे- मुख्यमंत्री भजनलाल

- दादिया में बड़ा सभा स्थल तैयार किया जा रहा है। रिंग रोड पर सभा स्थल पर तीन डोम बनाये गये हैं। तीनों डोम में लगभग एक लाख लोगों के बैठने की व्यवस्था की गई है।

जयपुर के ग्राम दादिया में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के मुख्य आतिथ्य में गुरूवार को होने वाले सहकार एवं रोजगार उत्सव के सभा स्थल की तैयारियों का मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने निरीक्षण किया और अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक, सांसद मदन राठौड़, सीपी जोशी, मुख्य सचिव सुधांश पंत मौजूद थे।

जयपुर, 16 जुलाई। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के मुख्य आतिथ्य में गुरुवार को जयपुर के ग्राम दादिया में सहकार एवं रोजगार उत्सव का आयोजन होगा। इसी क्रम में, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार शाम को सभा स्थल पर पहुंचकर तैयारियों का विस्तृत जायजा लेकर संबंधित अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए।

शर्मा ने कार्यक्रम स्थल पर मीडिया से बातचीत में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हमारी डबल इंजन की सरकार आमजन से संकल्प पत्र में किए गये वादों को पूरा कर रही है। अंतिम पायदान पर खड़े जरूरतमंद व्यक्ति को सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। युवाओं से किये वादे को पूरा करते हुए गुरुवार को आयोजित होने वाले रोजगार उत्सव में नियुक्ति पत्र दिये जाएंगे। उन्होंने कहा कि सहकारिता का गांव, किसान, गरीब और मजदूर से अहम जुड़ाव है। केन्द्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में इसके विस्तार से इन वर्गों का उत्थान हो रहा है।

मुख्यमंत्री ने सभा स्थल का निरीक्षण करते हुए, बैठक, पेयजल, पार्किंग सहित अन्य व्यवस्थाओं के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुप्रीम कोर्ट का ''उदयपुर फाइल्स'' पर रोक हटाने से इन्कार

उदयपुर,16 जुलाई (कासं)। सुप्रीम कोर्ट ने उदयपुर के कन्हैयालाल हत्याकांड पर बनी फिल्म की रिलीज पर रोक हटाने से फिलहाल इन्कार कर दिया। अब सुप्रीम कोर्ट इस मामले में 21 जुलाई को सुनवाई करेगा।

जस्टिस सूर्यकांत और जॉयमाला बागची की बैंच ने ये निर्देश फिल्म निर्माता कंपनी, जानी फायर फॉक्स मीडिया प्राइवेट लिमिटेड की अपील और कन्हैयालाल हत्याकांड के आरोपी मोहम्मद जावेद की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

- अदालत ने मौखिक टिप्पणी की कि फिल्म के रिलीज़ होने से मामले का ट्रायल प्रभावित हो सकता है।

जानकारी के अनुसार, इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने मौखिक टिप्पणी करते हुए कहा कि प्रथम दृष्ट्या ऐसा लगता है कि अगर उदयपुर फाइल्स फिल्म रिलीज होती है तो मामले में चल रहा ट्रायल प्रभावित हो सकता है। यदि ऐसा होता है तो यह बड़ा नुकसान होगा। अगर मूवी की रिलीज में देरी हो रही है तो आर्थिक नुकसान की भरपाई के लिए मुआवज़ा दिया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र की ओर से गठित कमेटी से भी कहा है कि वह मामले में जल्द फैसला ले।

प्रार्थी के वकील गौरव भाटिया ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारत को ''फिफ्थ जैनरेशन'' लड़ाकू विमानों को शामिल करने की स्वीकृति मिली

यह विमान भारत स्वयं ''डीआरडीओ'' में विकसित कर रहा है। इन आधुनिकतम विमानों को शामिल करने के बाद अमेरिका, रूस व चीन की श्रेणी में आ जायेगा भारत, जिनके पास ''फिफ्थ जैनरेशन'' आधुनिकतम लड़ाकू विमान की टुकड़ी है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 जुलाई। पाकिस्तान के साथ अपनी पश्चिमी सीमा पर सैन्य ताकत बढ़ाने के लिए भारत एक बड़ा कदम उठाने जा रहा है। अमेरिका में बने अपाचे अटैक हेलीकॉप्टर जल्द ही फ्रंटलाइन पर तैनात किए जाएंगे। साथ ही, भारत के घरेलू 5वीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान प्रोजेक्ट- 'एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एएमसीए)' को भी हरी झंडी मिल गई है।

ये दोनों पहल भारत की वायु शक्ति को अभी और भविष्य, दोनों में मज़बूत करने की दिशा में अहम मानी जा रही हैं, खासकर तब, जब क्षेत्र में तनाव और शक्ति संतुलन तेजी से बदल रहे हैं।

21 जुलाई को एएच -64ई अपाचे हेलीकॉप्टरों की पहली खेप हिंडन एयर फोर्स स्टेशन पर उतरेगी, जिससे भारतीय सेना की हमलावर और निगरानी क्षमता बढ़ेगी। अपाचे अटैक हेलीकॉप्टर्स को ''टैंक्स इन द एयर'' अर्थात ''हवाई तोपखाना'' कहा जाता है, क्योंकि ये अत्याधुनिक टारगेटिंग सिस्टम, नाइट विज़न नेविगेशन और मल्टी-रोल सेंसर से लैस हैं। ये हर मौसम और कई तरह के मिशनों, जैसे फ्रंटलाइन हमला, शांति मिशन और निगरानी में इस्तेमाल किए जा सकते हैं।

हालांकि, इनकी डिलीवरी लगभग 15 महीने की देरी से हो रही है, जिसकी वजह करोना महामारी और रूस-यूक्रेन युद्ध जैसे वैश्विक कारणों से आपूर्ति श्रृंखला में आई बाधाएं रही हैं।

भारतीय वायुसेना पहले से ही पठानकोट और जोरहाट में अपाचे के दो स्क्वाड्न चला रही है। उन्हें ये

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- साथ ही, 21 जुलाई को ''अपाची हैलिकॉप्टर'' जिन्हें ''टैंक्स इन दी एयर'' भी कहा जाता है, की पहली टुकड़ी हिण्डन एयर फोर्स स्टेशन पर पहुँचेगी, भारतीय सेना में शामिल होने के लिए।
- भारतीय सेना ने इन अपाची हैलिकॉप्टर की सप्लाई के लिए, 15 माह पहले ऑर्डर दिया था, पर, कई कारणों से, विशेषकर यूक्रेन-रूस युद्ध के कारण, हैलिकॉप्टरों की सप्लाई में भारी विलम्ब हो गया था। पर, अब ये हैलिकॉप्टर, हिण्डन एयरबेस पर पहुँच रहे हैं।
- भारत की इसी बढ़ी हुई हवाई ताकत की बराबरी करने में अभी पाकिस्तान को काफी समय लगेगा।

जम्मू-कश्मीर में उर्दू की अनिवार्यता पर मचा बवाल

नायब तहसीलदार परीक्षा में उर्दू की अनिवार्यता के राज्य सरकार के आदेश पर सैंट्रल एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रिब्यूनल ने रोक लगाई

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 जुलाई। केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण (सेन्ट्रल एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रिब्यूनल-सीएटी) ने जम्मू-कश्मीर सरकार के 9 जून के उस आदेश पर रोक लगा दी है, जिसमें नायब तहसीलदार पद के आवेदकों के लिए उर्दू भाषा का ज्ञान अनिवार्य किया गया था।

नौकरी के आकांक्षी उम्मीदवारों द्वारा इस शर्त को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई करते हुए, सीएटी ने जम्मू-कश्मीर सेवा चयन भर्ती बोर्ड (जेकेएसएसआरबी) को निर्देश दिया कि वह जम्मू-कश्मीर राजकीय भाषाएँ अधिनियम, 2020 के तहत हिंदी, कश्मीरी, अंग्रेज़ी, डोगरी या उर्दू-इन पांच आधिकारिक भाषाओं में से किसी एक भाषा का ज्ञान रखने वाले स्नातक उम्मीदवारों के आवेदन स्वीकार करे।

सीएटी की दो सदस्यीय पीठ, जिसमें न्यायिक सदस्य राजिंदर डोगरा, जिन्होंने बैंच की अध्यक्षता की, और प्रशासनिक सदस्य राम मोहन जौहरी शामिल थे, ने इस शर्त को ''प्रथम दृष्टया भेदभावपूर्ण'' बताया और प्रतिवादियों को नोटिस जारी करते हुए अगली सुनवाई की तारीख 13 अगस्त निर्धारित की।

- जम्मू-कश्मीर सरकार के इस आदेश का राज्य भाजपा व कई अभ्यर्थियों ने भारी विरोध किया था।
- फिर कुछ अभ्यर्थियों ने इस आदेश को सैंट्रल एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रिब्यूनल में चुनौती दी।
- ट्रिब्यूनल की दो सदस्यीय बैंच ने जम्मू-कश्मीर सलैक्शन रिक्रूटमैंट बोर्ड को आदेश दिया कि जम्मू-कश्मीर ऑफिशियल लैंग्वेज एक्ट 2020, के तहत हिंदी, कश्मीरी, अंग्रेजी, डोगरी और उर्दू में से किसी भी एक भाषा का जानकार परीक्षा का पात्र है।

भाजपा ने सीएटी के इस फैसले का स्वागत करते हुए उर्दू भाषा की अनिवार्यता को ''अवैध और भेदभावपूर्ण'' करार दिया है।

भाजपा के वरिष्ठ विधायक और अधिवक्ता आर. एस. पठानिया ने पत्रकारों से कहा, ''हम सीएटी द्वारा नेशनल कॉन्फ्रेंस सरकार के इस अवैध और भेदभावपूर्ण आदेश पर रोक लगाने के फैसले का स्वागत करते हैं। यह हमारी जीत है।''

हाईकोर्ट ने व्यवसायी की अवैध हिरासत पर जवाब मांगा

जयपुर, 16 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट ने शहर के एक व्यवसायी को अवैध रुप से हिरासत में रखने के मामले में भांकरोटा थाने के एसएचओ को 22 जुलाई को अदालत में उपस्थित रहने का निर्देश दिया है। वहीं, मामले में जयपुर पुलिस कमिश्नर को शपथ पत्र सहित जवाब देने के लिए कहा है। जस्टिस समीर जैन ने सांगानेर निवासी रामदेव हरितवाल की याचिका पर यह निर्देश दिया। अदालत ने आगामी सुनवाई तक मामले की अग्रिम कार्रवाई पर भी रोक लगा दी है। मामले से जुड़े अधिवक्ता मोहित खण्डेलवाल ने बताया कि शिकायतकर्ता व प्रार्थी के बीच में रुपयों के लेन-देन व इकरारनामे का विवाद था और कोर्ट में सिविल केस लंबित था। इस मामले में हाईकोर्ट ने भी

- जयपुर पुलिस कमिश्नर को शपथ पत्र देने व भांकरोटा एसएचओ को उपस्थित होने के निर्देश दिए।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चंद्रबाबू नायडू ने चुनाव आयोग को पत्र बहुत सोच समझकर लिखा है

नायडू ने मतदाता सूची में ''रिविज़न'' कर चिंता जताई है, जिससे मुसलमानों का मताधिकार संकट में पड़ सकता है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 जुलाई। तेलुगू देशम पार्टी (टीडीपी) प्रमुख और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने नरेन्द्र मोदी-अमित शाह नेतृत्व को स्पष्ट रूप से अपने असंतोष का संकेत दे दिया है। उन्होंने भारतीय निर्वाचन आयोग (ईसीआई) के उस निर्देश को लेकर असहमति जताई है, जिसमें बिहार में चल रही विवादास्पद प्रक्रिया की तर्ज पर, सभी राज्यों में मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण की बात कही गई है।

टीडीपी के शीर्ष सूत्रों ने इस बात की पुष्टि की है कि नायडू ने निर्वाचन आयोग को अपनी आपत्तियां बता दी हैं। उन्हें आशंका है कि इस तरह की प्रक्रिया से अल्पसंख्यक मतदाताओं, विशेष रूप से आंध्र प्रदेश के बड़े मुस्लिम मतदाता वर्ग, के मताधिकार पर असर पड़ सकता है। आयोग को भेजे गए टीडीपी के इस सुस्पष्ट पत्र ने राजनीतिक हलकों में बहस छेड़ दी है, और कई विश्लेषकों का मानना है कि यह पार्टी की एक रणनीतिक कोशिश है, ताकि पार्टी स्वयं को मतदाता सूची प्रबंधन के कथित सांप्रदायिक एजेंडे से दूर दिखा सके।

जहाँ नायडू अब भी भाजपा नेतृत्व वाले एनडीए गठबंधन का हिस्सा हैं, वहीं, टीडीपी के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि पार्टी पर बिल्कुल स्पष्ट रुख अपनाने का दबाव बढ़ता जा रहा है। मिश्रित जनसंख्या वाले क्षेत्रों में पार्टी कार्यकर्ता इस बात को लेकर चिंतित हैं कि यदि टीडीपी निर्वाचन आयोग के कदमों का समर्थन करती दिखाई देगी, तो पार्टी को मतदाताओं की नाराज़गी झेलनी पड़ सकती है।

इस बीच, नायडू अपने विकल्पों पर सावधानीपूर्वक विचार कर रहे हैं। उनकी सरकार को केन्द्र से वित्तीय सहायता का लाभ मिला है, खासकर पिछले चुनावी चक्र में। एक वरिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक के अनुसार, नायडू की रणनीति में व्यावहारिकता और पूर्वानुमान, दोनों शामिल हैं। उसमें यह भी शामिल है कि चूँकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इसी साल 75 वर्ष के हो जाएंगे, इसलिये भाजपा और आरएसएस में नेतृत्व परिवर्तन की संभावना पैदा हो सकती है।

संघ परिवार के भीतर भी मोदी की नीतियों को लेकर असंतोष बढ़ने की खबरें हैं। हालांकि नायडू की एनडीए से तत्काल बाहर निकलने की कोई योजना नहीं है, लेकिन टीडीपी सूत्रों की मानें, तो वे संघ-भाजपा के बदलते समीकरणों और राज्य स्तर की राजनीतिक हलचलों पर पैनी नज़र रखे हुए हैं।

फिलहाल, टीडीपी सर्तकता से सहयोग की नीति पर चल रही है, लेकिन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- नायडू मुस्लिम मतदाताओं को आश्वस्त करना चाहते हैं, जो ''रिविज़न'' में मताधिकार खोने की आशंका व भ्रम से आतंकित हैं।
- नायडू, मोदी व संघ परिवार के बीच सब कुछ ठीक न होने की चर्चा से प्रभावित हैं। अगर मोदी पचहत्तर साल की उम्र पार करने के बाद, प्र.मंत्री पद त्यागते हैं तो संघ व भाजपा के संबंधों में नये समीकरण बनेंगे। नायडू, इन नये समीकरणों को भी ध्यान में रखते हुए, मतदाता सूचियों पर अपना विकल्प खुला रखना चाहते हैं।

एसीबी केस में कनिष्ठ लेखाकार को 17 साल बाद सजा

जयपुर, 16 जुलाई। एसीबी मामलों की विशेष अदालत क्रम-2, महानगर द्वितीय ने 17 साल पहले जिला शिक्षा अधिकारी के झुंझुनूं कार्यालय में रिश्वत से जुड़े मामले में तत्कालीन कनिष्ठ लेखाकार शीशराम को दो साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही, पीठासीन अधिकारी प्रहलाद राय शर्मा ने अभियुक्त पर चालीस हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है।

- कनिष्ठ लेखाकार 12 मई 2008 को 5 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया था।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक मंजुला जैन ने अदालत को बताया कि ग्राम कांजड़ा-पिलानी स्थित एक निजी स्कूल के सचिव मंजीत सिंह तंवर ने एसीबी में शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायत में कहा गया था कि स्कूल को सीनियर सैकण्डरी में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'न्यायिक सेवा में तीन साल की प्रैक्टिस की अनिवार्यता ''मौलिक अधिकारों का उल्लंघन'' है'

एडवोकेट चंद्रसेन यादव ने सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका में यह दावा किया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 जुलाई। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता कॉलिन गोंजाल्विस ने सर्वोच्च न्यायालय में एक पुनर्विचार याचिका दायर की है, जिसमें न्यायालय के उस हालिया निर्णय को चुनौती दी गई है, जिसमें सिविल जज (कनिष्ठ श्रेणी) पद के लिए तीन साल की वकालत अनिवार्य कर दी गई थी।

मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई की अध्यक्षता वाली पीठ, जिसमें न्यायमूर्ति ए. जी. मसीह और के. विनोद चंद्रन शामिल थे, ने 20 मई को निर्णय सुनाया था कि न्यायिक सेवा में आने के लिए उम्मीदवार को कम से कम तीन साल की वकालत का अनुभव होना चाहिए।

कोर्ट ने देश के सभी उच्च न्यायालयों और राज्य सरकारों को निर्देश दिया था कि वे अपने सम्बन्धित सेवा नियमों में संशोधन कर के इस निर्णय को लागू करें।

हालांकि, अदालत ने यह भी स्पष्ट किया था कि जहाँ हाई कोर्ट सिविल जज (जूनियर डिविज़न) के पद के चयन प्रक्रिया इस निर्णय से पहले ही शुरु हो गई है, वहाँ यह नियम लागू नहीं होगा।

यह पुनर्विचार याचिका अधिवक्ता सत्य मित्र के माध्यम से दाखिल की गई है। इसमें इस फैसले को 17 आधारों पर चुनौती दी गई है।

याचिका के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट ने, अन्य बिन्दुओं के साथ ही, 1924 से 1986 तक की पाँच विधि आयोग रिपोर्टों को नज़रअंदाज किया है, जिनमें सर्वसम्मति से वकालत की अनिवार्यता को न्यायिक नियुक्तियों के लिए अनिवार्य मानने से इनकार किया गया था।

- सुप्रीम कोर्ट ने मई 2025 में न्यायिक सेवा के लिए 3 साल की प्रैक्टिस का नियम बहाल कर दिया था और तब से इसके खिलाफ याचिकाएं दायर हुई हैं, इस फैसले को 17 आधारों पर चुनौती दी गई।
- याचिका दायर करने वालों का कहना है कि इसमें सबसे बड़ा नुकसान न्यायिक सेवा में जाने की इच्छुक महिलाओं का होगा, क्योंकि उन पर जल्दी शादी करने का दबाव होता है। इसलिए वे तीन साल प्रैक्टिस की अनिवार्यता की शर्त को पूरा नहीं कर पाएंगी।

इसके अलावा, याचिका में दूसरे न्यायिक वेतन आयोग की रिपोर्ट (2022) का भी हवाला दिया गया है, जिसमें कहा गया था कि इस तरह के पात्रता नियमों को लागू करने से पहले, विस्तृत परामर्श की प्रक्रिया आवश्यक है।

पुनर्विचार याचिका के अनुसार, इस निर्णय में भारत के जुड़िसियल ट्रेनिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर में हुए महत्वपूर्ण परिवर्तन एवं विकास की अनदेखी की गई है।

याचिका में यह भी कहा गया है कि 2002 के बाद से राज्य न्यायिक अकादमियों द्वारा एक साल का ''स्ट्रक्चर्ड'' पूर्व-सेवा प्रशिक्षण, जिसमें एक साल का रेजिडेन्सियल प्रोग्राम भी शामिल है, अदालती और प्रशासनिक संलग्नता, और सख्त निर्देशों वाली न्यायालय की कार्यप्रणाली, साक्ष्य कानून, और स्थानीय कानूनी प्रक्रियाओं पर गहन प्रशिक्षण दिया जाता रहा है, जिससे नए जजों की तैयारी सुनिश्चित होती है।

याचिका में प्रक्रिया संबंधी निष्पक्षता (प्रॉसिजरल फेयरनैस) के बारे में प्रश्न खड़े किये गये हैं। पिछली सुनवाई के दौरान, उच्च न्यायालयों से प्राप्त शपथ-पत्रों को सार्वजनिक नहीं किया गया और न ही उम्मीदवारों के साथ साझा किया गया था, तथा इस प्रकार उन्हें प्रतिक्रिया देने या प्रक्रिया में सार्थक रूप से भाग लेने का अवसर नहीं मिल सका था।

इसके अतिरिक्त, महिलाओं पर प्रायः कम उम्र में विवाह करने का दबाव रहता है, इसलिये वे वकालत की अनिवार्य अवधि पूरी नहीं कर पातीं।

तीन साल की वकालत की अनिवार्यता से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के उम्मीदवारों को नुकसान होने की बात कही गई, क्योंकि उन्हें वरिष्ठ वकीलों का मार्गदर्शन तथा वित्तीय सहयोग नहीं मिल पाता है।

याचिका में यह दलील भी दी गई

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कांग्रेस शासन में लगे सरकारी वकीलों को हटाने पर अंतरिम रोक

जयपुर, 16 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट ने पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के दौरान शहर की निचली अदालतों में नियुक्त हुए सरकारी वकीलों को हटाने पर अंतरिम रोक लगा दी है। इसके साथ ही, अदालत ने इन्हें कार्य करते रहने देने की अनुमति दी है। अदालत ने मामले में मुख्य सचिव, प्रमुख विधि सचिव,

- हाई कोर्ट ने मुख्य सचिव, प्रमुख विधि सचिव आदि को नोटिस जारी किये।

एसीएस गृह और जयपुर कलेक्टर सहित अन्य को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। जस्टिस अनिल उपमन की एकलपीठ ने ये आदेश साजिया खान व अन्य की याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता रिपुदमन सिंह नरूका ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता पूर्व में शहर की निचली अदालतों में सरकारी वकील के तौर पर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अबीमा फोस्केम फैक्ट्री पर कृषि विभाग का छापा

उदयपुर । कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा के निर्देशन में अमानक खाद बनाने वाली फैक्ट्रियों पर जारी सख्त कार्रवाई के तहत बुधवार को उदयपुर के मादड़ी स्थित अबीमा फोस्केम प्राइवेट लिमिटेड फैक्ट्री पर कृषि विभाग की टीम ने छापा मारा। इस दौरान फैक्ट्री में खाद निर्माण और कच्चे माल से जुड़ी कई गंभीर अनियमितताएं सामने आईं।

जानकारी के अनुसार विभाग ने मौके पर मौजूद एक खाद के लॉट को सीज किया जिसकी कंटेंट क्वालिटी 14.5 प्रतिशत होनी चाहिए थी लेकिन प्रयोगशाला जांच में यह मात्र 1 प्रतिशत ही पाई गई। यह मानक से बहुत कम है और किसानों की उपज पर गंभीर असर डालने वाला है।विभागीय अधिकारियों ने आशंका जताई है कि इतनी कम गुणवत्ता वाली खाद आखिर क्यों बनाई गई और क्या यह अमानक खाद किसानों के खेतों तक पहुंच चुकी है, यदि ऐसा हुआ है तो यह एक बड़ा घोटाला बन सकता है और किसानों के साथ बड़ा विश्वासघात होगा। फैक्ट्री द्वारा खाद निर्माण के लिए जो कच्चा माल खरीदा गया था।

डंपिंग यार्ड के पास फैल रहे कचरे से परेशान ग्रामीणों ने रास्ता रोका

भीलवाड़ा। जिले की शाहपुरा नगर पालिका द्वारा बनाए गए डंपिंग यार्ड के पास फैल रहे कचरे से परेशान ग्रामीणों ने माता जी का खेड़ा के पास मुख्य सड़क को जाम कर दिया । विद्यालय के ताले लगा दिए, सूचना मिलते ही शाहपुरा से थानाधिकारी बालकृष्ण मौके पर पहुंचे तथा ग्रामीणों को समझाइश कर जाम खुलाया।

■ **शाहपुरा नगर पालिका द्वारा बनाए गए डंपिंग यार्ड के पास फैल रहे कचरे से परेशान ग्रामीणों ने माता जी का खेड़ा के पास सड़क को जाम किया**

आपको बताते हैं कि नगर पालिका द्वारा माताजी के खेडा के पास डंपिंग स्टेशन बनाया हुआ है लेकिन उसको काम में नहीं लिया जा रहा है बाहर कचरा डाला जा रहा है पास में उच्च माध्यमिक विद्यालय संचालित हो रहा है जिससे विद्यालय के छात्र-छात्राये परेशान हो रहे हैं, ठामीणों द्वारा विभाग को अवगत कराने के बाद भी सुनवाई नहीं होने से, विद्यालय के तालेबंदी कर रोड जाम किया गया। जाम में कुछ देर के लिए स्कूल बसें भी फसी रही।

डंपिंग यार्ड के पास फैल रहे कचरे से परेशान ग्रामीणों ने जाम लगा कर प्रदर्शन किया।

झरने पर सेल्फी लेते समय तेज बहाव में बहने से मौत

बून्दी (निसं)। बूंदी जिले में इन दिनों तेज बारिश का दौर जारी है जिसके चलते जिले के नदी नाले बांध झरने उफान पर है। बुधवार को भीमलत महादेव झरने पर सेल्फी लेते समय तेज बहाव में बहे छात्र की मौत हो गई। वह सुबह ही अपने 4 दोस्तों के साथ झरने पर पहुंचा था। हादसे की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची सदर थाना पुलिस, और सिविल डिफेंस की टीम ने छात्र के शव को रेस्क्यू कर बाहर निकाला। जानकारी के अनुसार बुधवार सुबह कोटा से जेईई की तैयारी करने वाले चार दोस्त पिकनिक मनाने भीमलत महादेव पहुंचे थे। जहां झरने पर सेल्फी लेते समय तेज बहाव में बहने व डूबने से मोहम्मद शेख उम्र 19 साल जाति मुस्लमान निवासी बरेली यूपी की मौत हो गई। सूचना पर सदर थाना पुलिस मौके पर पहुची और थाना अधिकारी रमेश आर्य के नेतृत्व में सिविल डिफेंस के जवानों ने 8 घंटे की मशक्कत के बाद युवक के शव को बाहर निकाला। युवक के परिजनों को हादसे की सूचना दे दी गई है परिजन आने के बाद युवक के शव का पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

चार सौ से अधिक गिरफ्तार

उदयपुर। शहर पुलिस ने बुधवार तडके जिले में आठ सौ से अधिक स्थानों पर दबीश देकर चार सौ से अधिक अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है। जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा, गोपाल स्वरूप मेवाड़ा,अंजना सुखवाल के निर्देशन में जिले के सभी पुलिस उप अधीक्षकों के सुपरविजन में सभी थानाधिकारियों के नेतृत्व में कार्रवाई की।

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर
टोडरमल लेन, सिविल लाईन्स, अजमेर, Email :- ajmerada@gmail.com,
Website :- www.rajasthan.gov.in/ada, Tel.No. :- 0145-2627748-2627749
अविप्रा

क्रमांक :- अविप्रा/प.2/तकनीकी/2025-26/राजकाज 16536581 दिनांक :- 15/07/2025

ई-निविदा सूचना संख्या 18/2025-26

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर की ओर से जारी विभिन्न कार्यों की अनुमानित लागत राशि 90.71 लाख की ई–निविदा दिनांक 28.07.2025 सांय 06:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट (http://eproc.rajasthan.gov.in) एवं (http://sppp.raj.nic.in) http://www.urban.rajasthan.gov.in/ada पर देखा जा सकता है।

UBN No. :- AJD2526WSOB00046 - 49

अधिशाषी अभियन्ता
अजमेर विकास प्राधिकरण

राज.संवाद/सी/25/6308

नगरपालिका मण्डल, रतनगढ़ (राजस्थान)

क्रमांक–निर्माण शाखा/निविदा/2025/1389–91 दिनांक : 10.07.2025

निविदा सूचना

नगर पालिका रतनगढ़ की और से नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजिकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र मे ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से ऑन लाईन निविदाऐ आमंत्रित की जाती है जो दिनांक 11.07.2025 से दिनांक 20.07.2025 शाम 6 बजे तक अनुसार डाऊनलोड तथा अपलोड एंव दिनांक 21.06.2025 को सांय 5 बजे खोली जायेगी। समस्त कार्यो के लिए धरोहर राशि कार्य की अनुमानित लागत पर नगर पालिका रतनगढ़ में पंजिकृत सक्षम संवेदको द्वारा 1/2 प्रतिशत राशि एवं अन्य विभागो में पंजिकृत सक्षम संवेदको द्वारा 2 प्रतिशत राशि का डी.डी. अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका रतनगढ़ के नाम व रूपये 500/– का चालान "M.D. RISL Jaipur" के नाम जयपुर में देय से ऑन लाईन निविदा खोलने से पूर्व नगर पालिका रतनगढ़ में प्रस्तुत करना होगा।

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट www.sppp.raj.nic.in http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

NIB code- DLB2526A3354

UBN:- DLB2526WSOB10468, DLB2526WSOB10470, DLB2526WSOB10471, DLB2526WSOB10475, DLB2526WSOB10476, DLB2526WSOB10477, DLB2526WSOB10478, DLB2526WSOB10479, DLB2526WSOB10480, DLB2526WSOB10481, DLB2526WSOB10482, DLB2526WSOB10483, DLB2526WSOB10484, DLB2526WSOB10485, DLB2526WSOB10486, DLB2526WSOB10487, DLB2526WSOB10488, DLB2526WSOB10489, DLB2526WSOB10490, DLB2526WSOB10491, DLB2526WSOB10492, DLB2526WSOB10493, DLB2526WSOB10494, DLB2526WSOB10495, DLB2526WSOB10496, DLB2526WSOB10497, DLB2526WSOB10498, DLB2526WSOB10499, DLB2526WSOB10501, DLB2526WSOB10502, DLB2526WSOB10503

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका रतनगढ

राज.संवाद/सी/25/6301

अलवर में युवक का अपहरण के 4 आरोपी गिरफ्तार

तालेड़ा में नाकाबंदी कर बोलेरो समेत पकड़ा

बूंदी। जिले की तालेड़ा थाना पुलिस ने अलवर में युवक का अपहरण करने के 4 आरोपियों को नाकाबंदी के दौरान गिरफ्तार कर बोलेरो जब्त की है। अलवर के विजय मंदिर थाना क्षेत्र से हुए अपहरण मामले में बूंदी पुलिस ने सफलता हासिल की है। तालेड़ा थाना पुलिस ने नाकाबंदी के दौरान बोलेरो में सवार अपहरण के चार आरोपियों को बापर्दा गिरफ्तार किया है।

बूंदी के जिला पुलिस अधीक्षक राजेन्द्र कुमार मीणा के अनुसार, थानाधिकारी अजीत बगडोलिया के नेतृत्व में पुलिस टीम ने कार्रवाई को अंजाम दिया। अपहरण की सूचना मिलते ही जिले के सभी थानों को नाकाबंदी के निर्देश दिए गए थे। उन्होंने बताया कि मामला 14 जुलाई 2025 का है, जब बालाडेहरा निवासी हंसराज पुत्र शेरसिंह का अलवर से अपहरण किया गया था। इस संबंध में विजय मंदिर थाने में मुकदमा नंबर 135/2025 दर्ज किया गया था।पुलिस ने आरोपियों की गिरफ्तारी के साथ उनकी बोलेरो को भी जब्त कर लिया है। सभी आरोपियों को विजय मंदिर थाना पुलिस के सुपुर्द कर दिया है।

बूंदी जिले की तालेड़ा थाना पुलिस ने अलवर में युवक का अपहरण करने के 4 आरोपियों को नाकाबंदी के दौरान गिरफ्तार किया।

साइबर ठगी का आरोपी गिरफ्तार

उदयपुर। साइबर थाना पुलिस ने कार्यवाही करते हुए ठगी के मामले में दो साल से फरार आरोपी को गिरफ्तार किया। प्रकरण के अनुसार पीडिता कविता डांगी पत्नी बंशीलाल डांगी निवासी गुमानपुरा वल्लभनगर ने साईबर पुलिस थाने में रिपोट्र दी। कि खराब होने के कारण मैने अपना मोबाईल मय सीम ठीक कराने के लिए रितशेदार को दिया। जिसने दुकान पर ठीक करवाने के लिए रखा। उक्त सीम नम्बर बैंक खाते से लिंक है जिससे मैं नैट बैंकिग का उपयोगी लेती थी। जिस दिन मोबाईल ठीक करवाने दिया उसके कुछ दिन बाद मेरे खाते से 1 लाख 37 हजार रूपये किसी ने निकाल लिए। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा के सुपरविजन में साईबर थानाधिकारी रामनिवास विश्नोई के नेतृत्व में एएसआई राजुदेवी, रज्जाक मो. मय टीम ने अनुसंधान कर खुलासा करते हुए हुक्मीचंद पुत्र डालूजी निवासी कूका हौटल के पास सालेरा कला डबोक को पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया।

फैक्ट्रियों से निकलने वाली गर्द गांव के लिए मुसीबत बनी

बीकानेर । खारा औद्योगिक क्षेत्र में पीओपी फैक्ट्रियों से निकलने वाली गर्द एक बार फिर गांव के लिए मुसीबत बन गई है। एनजीटी के निर्देश पर हाल ही में जयपुर से प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड का दल जांच के लिए आया था, लेकिन बारिश होने के कारण जांच पूरी नहीं हो सकी।

इधर बोर्ड ने लापरवाही बरतने वाली फैक्ट्रियों को बंद करने की तैयारी कर ली है। खारा औद्योगिक क्षेत्र में पीओपी की 120 से अधिक इंडस्ट्रियां हैं। यहां पर प्रदूषण का मानक पीएम 10 से अधिक यानी खतरनाक स्तर पर पहुंचने के कारण सभी फैक्ट्रियों में डस्ट कलेक्टर, सेटलिंग चैंबर और वाटर स्क्रबर लगाए गए थे। कुछ समय तक सब सही चले, लेकिन अब वापस पहले वाले हालात पैदा हो गए हैं। काफी फैक्ट्रियों ने यह सिस्टम बंद कर दिए हैं। फैक्ट्रियां चलने पर अब धुआं चिमनी के बजाय नीचे से ही बाईपास हो रहा है, जिसमें से काफी गर्द निकल रही है। इस गर्द के कारण आसपास के वातावरण और गांव में वायु प्रदूषण फिर से फैलने लगा है। खारा गांव के ग्रामीणों ने बताया कि जयपुर से आए दल ने जांच के बाद कहा था कि फैक्ट्री संचालक सिस्टम फॉलो नहीं कर रहे हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि बोर्ड के रीजनल कार्यालय की ढिलाई के कारण फैक्ट्री संचालकों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है। प्रदूषण का मामला फैक्ट्रियों में काम करने वाले श्रमिकों पर डालकर इतिश्री की जा रही है। गौरतलब है कि पिछले दिनों प्रदूषण मानकों पर खरा नहीं उतरने पर कुल 20 फैक्ट्रियां बंद कर दी गई थीं। बाद में पांच वापस शुरू हो गईं। शेष बंद पड़ी हैं या गांवों में शिफ्ट हो गई हैं। प्रदूषण स्तर की मार्च में अंतिम बार जांच हुई थी, जिसमें 150 से 200 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर बीच पाया गया था, लेकिन मानसून में वापस बढ़ गया है। उसके बाद सर्दियों में स्थिति और भी खराब हो जाएगी। खारा में पीओपी का प्रदूषण हवा में उड़ता हुआ। एनजीटी के निर्देश पर शुरू हुई जांच खारा, करणी और बीछवाल औद्योगिक क्षेत्रों में वायु और जल प्रदूषण का मामला एनजीटी में पहुंचने के बाद इसकी जांच शुरू हो गई है।

कार्यालय नगर निगम, अजमेर
पृथ्वीराज मार्ग, अजमेर (राजस्थान) फोन नं. 0145–2429971, 2429920

क्रमांक :–MEW/2025-26/693 दिनांक:– 11.07.2025

:: ई–निविदा सूचना संख्या 26/2025–26 ::

नगर निगम अजमेर की ओर से नगर निगम अजमेर एवं राजकीय विभाग में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको जो कि केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, डाक एवं दूरसंचार, रेलवे या अन्य राज्य सरकार, केन्द्रीय सरकार के अधिकृत संगठनो जो राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदको के समकक्ष हो (निविदा पात्रता पंजीकरण के नियमो के अनुसार मान्य) जो निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से निम्न कार्यो की ऑनलाईन ईनिविदा आमंत्रित की जाती है।

निविदा कार्यो की कुल लागत	राशि 37.20 लाख (02 कार्य)
ऑनलाईन निविदा प्रपत्र डाउनलोड/अपलोड करने की अवधि	Date 12.07.25 से 21.07.25 को 6:00 PM तक
Technical निविदा खोलने की तिथि व समय	Date 22.07.25 को 11:00 AM पर
Financial निविदा खोलने की तिथि	सफलतम निविदादाता को उचित माध्यम के द्वारा सूचित कर दिया जावेगा।

विस्तृत विवरण वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in एवं http:/www.eproc.rajasthan.gov.in पर एवं नगर निगम के निर्माण विभाग के कार्यालय में भी देखी जा सकती है।

Nib Code :- ANN2526A0069

UBN NO. ANN2526SLOB00079, ANN2526SLOB00080

अधिशाषी अभियन्ता
नगर निगम अजमेर

राज.संवाद/सी/25/6266

AGRICULTURAL RESEARCH SUB STATION
(S. K. Rajasthan Agricultural University- Bikaner),
HANUMANGARH TOWN-335513

No. :- ARSS/HMO/2025/78 - 82 Dated :- 14/07/2025

खुली निविदा

कृषि अनुसंधान उप केन्द्र हनुमानगढ टाउन पर विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं व फार्म पर कृषि से सम्बधित कार्य ठेका पद्धति द्वारा करवाने हेतु जानकारी रखने वाले ठेकेदारों से खुली मोहरबन्द निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्य की लगभग 600000/–रू. है के निविदा फार्म कार्यालय में 500/–(पॉच सौ रू. मात्र) नगद/डीडी जो प्रभारी अधिकारी, कृषि अनुसंधान उप केन्द्र, हनुमानगढ टाउन के पक्ष में देय होगी, जमा करवाकर दिनांक 21.07.2025 सें 28.07.2025 समय 11.00 बजे तक प्राप्त कर सकते है, भरे हुये सीलबन्द निविदा फार्म कार्यालय में दिनांक 28.07.2025 समय 12.00 बजे तक धरोहर राशि 12000/–रू. का डीडी जो कि प्रभारी अधिकारी, कृषि अनुसंधान उप केन्द्र, हनुमानगढ टाउन के पक्ष में देय हो संलग्न कर कार्यालय में जमा कराये जा सकते है, जो उसी दिन दोपहर 2.00 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जावेगी। निविदा को बिनाकारण बताये निरस्त करने का अधिकार अधौहस्ताक्षरकर्ता के पास सुरक्षित रहेगा। निविदा कारणवश दिनांक 28.07.2025 को नहीं खोली जाती है तो यह निविदा दिनांक 29/07/2025 को 2.00 बजे खोली जावेगी। निविदा की शर्ते एवं विभिन्न कृषि कार्यो का विवरण निविदा फार्म के साथ संलग्न है।

निविदा प्रपत्र वेवसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in तथा www.raubikaner.org पर देखा तथा डाउन लोड किया जा सकता है। निविदा को सम्पूर्ण अथवा किसी भी भाग को बिना कारण बताये स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करनें का पूर्ण अधिकार, प्रभारी अधिकारी कृषि अनुसंधान उप केन्द्र, हनुमानगढ टाउन को होगा।

UBN No. : SKA2526WSOB00046

राज.संवाद/सी/25/6311 अधिष्ठाता

नगर विकास न्यास, पाली
डाक बंगला परिसर, पाली, फोन नं. 02932-223222, ई मेल – uitpali@gmail.com

क्रमांक :- न्या.पा./निविदा/2025/राजकाज 16551449 दिनांक :- 16/07/2025

ई-निविदा सूचना संख्या - 26/2025-26

नगर विकास न्यास, पाली की ओर से न्यास/राजकीय विभाग से नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्योरमेन्ट प्रक्रिया से सिविल कार्यों हेतु ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। इन कार्यों की अनुमानित लागत, निविदा बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, निविदा शर्तें आदि सम्पूर्ण विवरण https://eproc.rajasthan.gov.in, sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है तथा न्यास कार्यालय, पाली में कार्य दिवस के दौरान देखी जा सकती है। **यूबीएन नं. :– ITP2526WSOB00032**

राज.संवाद/सी/25/6322 अधिशाषी अभियन्ता

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. खण्ड वल्लभनगर

क्रमांक-496 दिनांक-07.07.2025

''निविदा संशोधन सूचना-2''

इस कार्यालय द्वारा जारी निविदा सूचना संख्या 03/2025-26 के क्रमांक 399 दिनांक 12.06.2025 द्वारा जारी की गयी थी जिसमें निम्नानुसार संशोधन किया जाता है।

	पूर्व में प्रकाशित	संशोधित
1	ऑनलाईन निविदा मिलने की दिनांक 18.06.2025 से 08.07.2025 सायं 6.00 बजे तक	ऑनलाईन निविदा मिलने की दिनांक 18.07.2025 सायं 6.00 बजे तक की जाती है।
2	ऑनलाईन निविदा खोलने की दिनांक 09.07.2025 सायं 4.00 बजे	ऑनलाईन निविदा खोलने की दिनांक 21.07.2025 सायं 4.00 बजे की जाती है।

निविदा की अन्य शर्ते यथावत रहेगी।

(अचल गुप्ता)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड वल्लभनगर

DIPR/C/9713/2025

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर
अध्यापक कल्याण कोष न्यास छात्रवृत्ति सूचना वर्ष 2025

अध्यापक कल्याण कोष न्यास द्वारा प्रतिवर्ष सेवारत शिक्षक/शिक्षिका के आश्रितों को तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा यथा–मेडिकल, आयुर्वेद, इंजीनियरिंग, वेट्रीनरी, बी.एड., एम.एड., एम.बी.ए., एल.एल.बी., पी.एच.डी., पॉलीटेक्निक, एस.टी.सी., कम्प्यूटर साइंस, एम.सी.ए. तथा महाविद्यालय पाठ्यक्रमों में नियमित अध्ययन करने हेतु छात्रवृत्ति दी जाती है। न्यास द्वारा वर्ष 2025 की छात्रवृत्ति हेतु निम्नानुसार ऑनलाईन आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं :–

1- बोर्ड की सैकण्डरी/सी.सैकण्डरी स्तर की उत्तरपुस्तिका जाँचने हेतु परीक्षक के रूप में पंजीकृत सेवारत शिक्षक/शिक्षिका जो कम से कम 05 वर्ष से अध्यापन कार्य में संलग्न है तथा कम से कम 02 वर्ष तक सैकण्डरी/प्रावेशिका/उच्च माध्यमिक/वरिष्ठ उपाध्याय कक्षाओं से संबंधित हो अथवा रहे हों एवं साथ ही बोर्ड की उत्तरपुस्तिका जाँचने हेतु कम से कम तीन बार परीक्षक का कार्य किया हो, के नियमित अध्ययनरत पुत्र/पुत्री पत्नी/पति ही 10 माह के लिए छात्रवृत्ति हेतु पात्र होंगे।

2- सेवारत शिक्षक/शिक्षिका एवं उसके परिवार की समस्त संसाधनों से वार्षिक आय रूपये 14,00,000/– से अधिक नहीं होनी चाहिए।

3- सेवारत शिक्षक/शिक्षिका के परिवार में अधिकतम दो आश्रितों को छात्रवृत्ति देय होगी, किन्तु एक सत्र में केवल एक ही आश्रित की छात्रवृत्ति हेतु आवेदन प्रस्तुत किया जा सकेगा। एक सत्र में एक से अधिक आवेदन करने पर समस्त आवेदन पत्र निरस्त कर दिए जायेगें।

4- छात्रवृति एक सत्र हेतु ही दी जाएगी। अगले सत्र पुनः आवेदन करना होगा।

5- बोर्ड वेबसाईट www.rajeduboard.rajasthan.gov.in पर TWF Scholarship लिंक पर अपनी Employee ID व मोबाईल नम्बर से लॉगिन कर अंतिम तिथि 18.08.2025 तक ऑनलाईन आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं।

6- मोबाईल नम्बर दर्ज नहीं होने की दशा में कार्यालय की हेल्पलाईन 0145–2632866, 2632867, 2632868 पर मोबाईल नम्बर सूचित कर अंकित करा सकते है।

7- विस्तृत जानकारी बोर्ड की वेबसाईट www.rajeduboard.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

निर्देशानुसार ऑनलाईन आवेदन करने के उपरान्त अंतिम रूप से मुद्रित होकर प्राप्त आवेदन पत्र (Hard Copy) मय संलग्नकों के दिनांक 10.09.2025 तक इस कार्यालय में अवश्य पहुँच जाने चाहिए। उक्त तिथि के पश्चात प्राप्त आवेदन पर किसी प्रकार का विचार नहीं किया जाएगा तथा उसे निरस्त कर दिया जाएगा। सचिव

कार्यालय नगर पालिका निवाई

क्रमांक : न.पा.नि./स्टोर/2025–26/4544 दिनांक :–09.07.2025

ई–बोली सूचना संख्या :– 17/2025–26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्न कार्य के लिए राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के बोलीदाताओ हेतु निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्युरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑन–लाईन बोली आमंत्रित की जाती है। बोली फार्म एवं ई–बोली से सम्बन्धित विवरण व शर्ते वेब साईट www.sppp.rajasthan.gov.in व http://www.eproc.rajsthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

निविदा का कार्य	:	NIB Code:- DLB2526A3578 (कुल 01 कार्य)
Unique Bid Number		DLB2526GLOB11371
निविदा की कुल लागत	:	Rs 24.90 लाख रुपये
निविदा जारी करने की दिनाक	:	दिनांक 17.07.2025
निविदा दस्तावेजो को डाउनलोड करने की शुरूआती दिनांक व समय	:	दिनांक 17.07.2025 को 11:00 बजे से
ऑन लाईन निविदा जमा कराने की अन्तिम दिनांक	:	दिनांक 28.07.2025 सांय 6:00 बजे तक
भौतिक रूप से कार्यालय में बोली शुल्क व धरोहर राशि जमा कराने की दिनांक	:	29.07.2025 को अपराह 12:00 बजे तक नगर पालिका निवाई कार्यालय में
ऑनलाईन तकनीकी बिड खोलने की दिनांक	:	30.07.2025 को अपराह 12:00 बजे
वित्तीय बिड खोलने की दिनांक व समय	:	Will be Intimated latter to the Technically qualified Bidders
बिड की वैधता समयावधि		120 Day

अध्यक्ष अधिशाषी अधिकारी

राज.संवाद/सी/25/6284

बैंक अधिकारियों को नोटिस

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने कोटक महिंद्रा बैंक लिमिटेड के प्रबंध निदेशक ए. वासवानी एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष राव साहेब कांगणे को नोटिस जारी किया है। कोर्ट ने स्पष्ट करने को कहा है कि उनके खिलाफ अदालत की अवमानना की कार्यवाही क्यों न कि जाए। यह नोटिस बैंक की ओर से एक पूर्व कर्मचारी की सेवा बहाली से संबंधित आदेश की अवहेलना के आरोप में जारी किया गया है। मामला बैंक के जोधपुर शाखा में वरिष्ठ प्रबंधक के पद पर कार्यरत रहे अरज शर्मा से जुड़ा है। शर्मा की सेवा जनवरी 2022 में बिना किसी अनुशासनात्मक जांच के समाप्त कर दी गई थी। शर्मा ने यह आदेश राजस्थान दुकान एवं वाणिज्यिक प्रतिष्ठान अधिनियम, 1958 के तहत चुनौती दी थी। उनके वकील सिद्धार्थ टाटिया के माध्यम से की गई पैरवी के बाद, सक्षम प्राधिकारी ने नवंबर 2022 में सेवा समाप्ति आदेश को रद्द करते हुए उन्हें समस्त प्रतिफल लाभों सहित पुनः बहाल करने का आदेश दिया। बैंक द्वारा इस आदेश को चुनौती देते राजस्थान हाईकोर्ट में रिट याचिका दर्ज करू गई। लेकिन, हाईकोर्ट ने नवंबर 2023 में उक्त याचिका खारिज कर सेवा बहाली आदेश को यथावत रखते हुए तत्काल अनुपालना के निर्देश दिए थे।

दिव्यांगजन के कल्याण के लिए राज्य सरकार तत्पर : दिया कुमारी

अजमेर । राजस्थान महिला कल्याण मण्डल, चाचियावास के स्वर्ण जयन्ती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करते हुए उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने दिव्यांगजन के कल्याण और विकास के लिए राज्य सरकार के द्वारा हर स्तर पर कार्य करने की बात कही।

राजस्थान महिला कल्याण मण्डल की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर संस्था परिसर में आयोजित स्वर्ण जयन्ती समारोह का उद्घाटन उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी, केबिनेट मंत्री सुरेश सिंह रावत, देहात जिलाध्यक्ष भाजपा जीतमल प्रजापत, शहर भाजपा अध्यक्ष रमेश सोनी, उपमहापौर नीरज जैन, प्रो जगदीश जाधव, संस्था निदेशक राकेश कुमार कौशिक, सचिव एवं मुख्यकार्यकारी क्षमा आर कौशिक ने संयुक्त रूप से की। कौशिक दम्पति ने दिया कुमारी सहित सभी अतिथियों का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए संस्था की पचास वर्षों की स्वर्णिम यात्रा, संस्था के कार्यक्रमों एवं भविष्य की संभावनाओं से अवगत कराया।

■ **राजस्थान महिला कल्याण मण्डल, चाचियावास का स्वर्ण जयन्ती समारोह आयोजित**

समारोह के दौरान उप मुख्यमंत्री के द्वारा संस्था के स्वर्ण जयन्ती लोगो का अनावरण, पचास वर्ष विकास यात्रा की फोटोग्राफ की पुस्तिका का विमोचन करते हुए संस्था डोक्यूमेन्ट्री को रीलीज किया। पचास वर्ष पूर्ण होने पर संस्था के सहयोग से अपना स्वरोजगार विकसित करने वाली स्वयं सहायता समूह की सदस्य 50 महिलाओं को नारी उद्यम गौरव से सम्मानित किया गया। 20 दिव्यांगों को स्वरोजगार विकसित करने के लिए दस–दस हजार के चेक वितरित किए गए तथा संस्था से प्रशिक्षण प्राप्त कर बागवानी, ऑफिस सहायक आदि क्षेत्र में रोजगार करने वाले दिव्यांगजन को कर्मवीर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए केबिनेट मंत्री सुरेश सिंह रावत ने कहा कि वे दिव्यांगजन के कल्याण और विकास के लिए सदैव तत्पर रहते हुए सदैव संस्था के साथ खड़े रहेंगे। रावत ने संस्था के द्वारा किए जा रहे कार्य को उनके विधानसभा क्षेत्र में योगदान के रूप में बताया तथा कहा कि ये उनके लिए सौभाग्य की बात है कि उनके क्षेत्र में इस तरह की संस्था कार्यरत है।

उपमुख्य मंत्री दिया कुमारी जी कार्यक्रम में शिरकत करने से पहले संस्था परिसर स्थित शिव सांई धाम में पूर्जा अर्चना की एवं संस्थापक सागरमल कौशिक की मूर्ति पे माल्यार्पण किया। संस्था परिसर का विजिट करते हुए मीनू स्कूल, सेन्सरी पार्क, दक्ष फ्लोरा नर्सरी आदि के बारे में विस्तृत जानकारी लेते हुए दिव्यांगजन के लिए किए जा रहे कार्यों व गतिविधियों का अवलोकन किया। मीनू स्कूल की बाल संसद के बच्चों से मुलाकात कर शिक्षण प्रशिक्षण के बारे में चर्चा की एवं स्वरोजगार विकसित करने वाली स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्यों से रू–ब–रू होते हुए उन्हें निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए दिया कुमारी ने कहा कि संस्था दिव्यांगजन के लिए वास्तविक रूप से धरातल पर कार्य कर रही है, इसी का परिणाम है कि आज संस्था ने अपने कार्य के 50 वर्ष पूर्ण किए है।

कृषि महाविद्यालय, हनुमानगढ़
स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)
E-mail : coahmg@raubikaner.org, Phone: 01552-294230, Mobile: 6377575773

No. :- F.( )/COA/HMO/2025-26/167 Dated :- 14/07/2025

खुली निविदा

कृषि महाविद्यालय, हनुमानगढ पर विभिन्न कार्यालय एवं फिल्ड से सम्बधित कार्य ठेका पद्धति द्वारा करवाने हेतु जानकारी रखनें वाले ठेकेदारों से खुली मोहरबन्द निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्य की लागत लगभग 600000/–रू. है के निविदा फार्म कार्यालय में 500/–(पॉच सौ रू. मात्र) नगद /डीडी जो अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, हनुमानगढ के पक्ष में देय होगी, जमा करवाकर दिनांक 21.07.2025 से 28.07.2025 समय 11.00 बजे तक प्राप्त कर सकते है, भरे हुये सीलबन्द निविदा फार्म कार्यालय में दिनांक 28/07/2025 समय 01.00 बजे तक धरोहर राशि 12000/– रू. का डीडी जो कि अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, हनुमानगढ के पक्ष में देय हो संलग्न कर कार्यालय में जमा कराये जा सकते है, जो उसी दिन दोपहर 3.00 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जावेगी। निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करनें का अधिकार अधोहस्ताक्षरकर्ता के पास सुरक्षित रहेगा। निविदा कारणवश दिनांक 28.07.2025 को नहीं खोली जाती है तो यह निविदा दिनांक 29.07.2025 को 3.00 बजे खोली जावेगी। निविदा की शर्ते एवं विभिन्न कृषि कार्यो का विवरण निविदा फार्म के साथ संलग्न है।

निविदा प्रपत्र वेवसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in तथा www.raubikaner.org पर देखा तथा डाउनलोड किया जा सकता है। निविदा को सम्पूर्ण अथवा किसी भी भागको बिना कारण बताये स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करनें का पूर्ण अधिकार, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, हनुमानगढ़ टाउन को होगा।

UBN No. : SKA2526WSOB00045

राज.संवाद/सी/25/6310 अधिष्ठाता

हिण्डौन में भाजपा का वन एवं पर्यावरण अभियान शुरू

हिण्डौन सिटी। भारतीय जनता पार्टी शहर मण्डल हिन्डोन द्वारा बाबा शंकर पैलेस में राष्ट्रव्यापी ''वन एवं पर्यावरण अभियान'' के तहत एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला कार्यक्रम संयोजक महेंद्र मीना और मुख्य वक्ता विभान्शु मोदी ने कार्यकर्ताओं को अभियान की विस्तृत जानकारी दी।

मण्डल महामंत्री ओमप्रकाश गुप्ता और कार्यक्रम संयोजक भूपेंद्र गुर्जर ने बताया कि ''एक पेड़ मां के नाम'' अभियान के तहत हिन्डोन शहर में 5 अगस्त तक 3,000 पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। प्रत्येक बूथ पर एक संयोजक और पालक नियुक्त कर 50–50 पौधे लगाए जाएंगे। मण्डल अध्यक्ष बबली चतुर्वेदी और संयोजक भूपेंद्र गुर्जर ने कार्यकर्ताओं को पौधे वितरित किए, जिन्हें सभी कार्यकर्ता इस अभियान के तहत रोपेंगे। अभियान की शुरुआत वर्धमान नगर बूथ पर 50 पौधे लगाकर की गई। मण्डल महामंत्री गुप्ता ने बताया कि 17 जुलाई को जयपुर में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कार्यक्रम में हिन्डोन शहर से मण्डल अध्यक्ष बबली चतुर्वेदी के नेतृत्व में सैकडों भाजपा कार्यकर्ता बसों और निजी वाहनों से जयपुर रवाना होंगे। कार्यशाला में जिला संयोजक महेंद्र मीना, जिला महामंत्री दिलीप गुप्ता, जिला प्रवक्ता डॉ. हेमलता, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष लज्जा रानी, अल्पसंख्यक मोर्चा जिलाध्यक्ष अल्लानूर, ललित शर्मा, हिमांशु मोदी, सम्पत कोली, उपाध्यक्ष गजेंद्र सोलंकी, कोषाध्यक्ष सोन्टू गोयल, महामंत्री लाडम, चंद्रप्रकाश, गौरव शर्मा, प्रतिपक्ष नेता दिनेश सैनी, पार्षद राहुल हरसाना, ज्योति सहारिया, सचिन बैसला, गिर्राज मित्तल, राजीव सहारिया सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

हिण्डौन सिटी में 5 अगस्त तक 3 हजार पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है ।

'वर्षा के दौरान अधिकारी सक्रिय रहकर कार्य करे'

करौली। करौली–धौलपुर सांसद भजनलाल जाटव ने कहा कि वर्षा के मौसम को देखते हुए अधिकारी जलभराव वाले स्थानों का चिन्हित कर किसी भी स्थिति से निपटने के लिए कंटीजेंसी प्लान के अनुसार सक्रिय रहकर कार्य करें। जिससे आमजन को किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़े। सांसद भजनलाल जाटव बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक में अधिकारियों को संबोधित करते हुए बोल रहे थे। उन्होंने बताया कि वन क्षेत्र में हरियालो राजस्थान के तहत जिले में 1200 हैक्टेयर क्षेत्र में 2 लाख 55 लाख पौधे लगाये गये है। वहीं वन क्षेत्र से विस्थापित किये जाने वाले परिवारों को राहत दिलाने के लिए आवश्यक प्रस्ताव सक्षम स्तर को भिजवाने के लिए डीएफओ को निर्देशित किया गया है। उन्होंने मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी गोपाल लाल मीणा को निर्देशित करते हुए कहा कि जिन विद्यालयों में शौचालय अभी तक निर्मित नहीं है।

कार्यालय नगर निगम, कोटा दक्षिण, राजस्थान
राजीव गांधी भवन, दशहरा मैदान, सी.ए.डी. सर्किल–कोटा
email : nnksouth@gmail.com, websites : www.urban,rajasthan.gov.in/nnks, Ph.: 0744-2502142

क्रमांक :– ननिको/दक्षिण/निर्माण/2025/463–476 दिनांक :– 11.07.2025

ई–निविदा संशोधन सूचना 02

नगर निगम कोटा दक्षिण द्वारा जारी ई–निविदा सूचना संख्या 18/2025–26 क्रमांक 328–342 दिनांक 16 जून 2025 की तिथियों एवं प्रोसेसिंग फिस में निम्नानुसार संशोधन किया जाता है। संवेदक ई–निविदा संशोधन सूचना प्रपत्र नगर निगम कोटा की वेबसाईट http://kotamcsouth.org.com, www.urban.rajasthan.gov.in/nnks, http://sppp.raj.nic.in, http://eproc.rajasthan.gov.in से प्राप्त कर सकेंगे।

क्र. सं.	विवरण	पूर्व में दिनांक	संशोधित दिनांक
1	निविदा डाउनलोड करने की तिथि (वेबसाईट से)	20.06.2025 से 11.07.2025 तक	20.06.2025 से 15.07.2025 तक
2	निविदा की धरोहर राशि, निविदा शुल्क व प्रोसेसिंग शुल्क व तकनिकी बिड के दस्तावेज ऑन–लाईन अपलोड करने की तिथि	20.06.2025 से 11.07.2025 तक	20.06.2025 से 15.07.2025 तक
3	निविदा/तकनिकी बिड खोलने की तिथि	14.07.2025 (प्रातः 11:00 बजे)	16.07.2025 (प्रातः 11:00 बजे)
4	वित्तीय बिड खोलने की तिथि	तकनिकी बिड परीक्षण के पश्चात्	तकनिकी बिड परीक्षण के पश्चात्
	निविदा कार्य संख्या	प्रोसेसिंग फिस	संशोधित प्रोसेसिंग फिस
1	02	500/-	1500/-
2	03	500/-	2000/-
3	04	500/-	2000/-
4	05	500/-	2000/-
5	06	500/-	2000/-
6	07	500/-	2000/-

शेष यथावत रहेगा।

अधीक्षण अभियन्ता
नगर निगम कोटा दक्षिण

राज.संवाद/सी/25/6272

चाकू दिखाकर लूट करने वाली भीलवाड़ा कालबेलिया गैंग के दो सदस्य गिरफ्तार

पुलिस ने रैकी करने वाले दुपहिया वाहन को जब्त किया

जयपुर। बिन्दायका थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चाकू दिखाकर लूट करने वाली भीलवाड़ा कालबेलिया गैंग के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया है। साथ ही पुलिस ने रैकी करने वाले दुपहिया वाहन (बाइक) ट्रॉली सहित वारदात प्रयुक्त चाकू भी जब्त किया है। इसके अलावा वारदात की रेकी करने में मिले पांच हजार रुपये भी बरामद किए गए है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) अमित बुडानिया ने बताया कि बिन्दायका थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चाकू दिखाकर लूट करने वाली भीलवाड़ा कालबेलिया गैंग के शातिर बदमाश राकेश नाथ कालबेलिया निवासी बडलियास जिला भीलवाड़ा और नाथु नाथ कालबेलिया निवासी बागौर जिला भीलवाडा हाल करणी विहार जयपुर को बापर्दा गिरफ्तार किया है। वहीं पुलिस ने आरोपित राकेश नाथ व उसकी भाभी शारदा देवी उर्फ जानी देवी द्वारा रेकी करने में प्रयुक्त वाहन एक मोटरसाइकिल जिसमें ट्रोली लगी हुई है को भी जब्त किया है।

पुलिस ने गैंग के शातिर बदमाश राकेश नाथ कालबेलिया व नाथु नाथ कालबेलिया को बापर्दा गिरफ्तार किया

- आरोपियों के द्वारा कचरा बीनने के बहाने से महिलाओं को साथ रखकर रेकी करते है तथा रेकी के दौरान बुजुर्ग व्यक्तियों जिन्होने सोने चांदी के गहने पहन रखे हो के बारे मे जानकारी जुटाते

पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपियों के द्वारा कचरा बीनने के बहाने से महिलाओं को साथ रखकर रेकी करते है तथा रेकी के दौरान बुजुर्ग व्यक्तियों जिन्होने सोने चांदी के गहने पहन रखे हो के बारे मे जानकारी जुटाते है। इसके बाद अपने साथियों के साथ मिलकर रात के समय लूट या चोरी करने की योजना बनाते है। रेकी करने वाले लोग अलग होते है व वारदात करने वाले लोग अलग होते है ।

वारदात करने जाने से पहले अपना फोन आदि घर पर ही छोडकर जाते है ताकि ट्रेक नहीं हो सके तथा वारदात करने के बाद फरार होकर अपने गांव भीलवाड़ा में चले जाते है । इसके अलावा अपने नाम की सिम निकालकर अपने रिश्तेदारों व अन्य लोगो को दे देते है।

रेकी करने के लिये अलग वाहन प्रयोग करते है तथा वारदात में अलग लोगों के द्वारा अलग वाहन प्रयोग करते है तथा घटना स्थल के आस पास से अपना डेरा खाली कर फरार हो जाते है।

कुमावत को एड-हॉक कमेटी का कंवीनर बनाने को चुनौती

जयपुर। राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन की एड-हॉक कमेटी के कन्वीनर के तौर पर दीनदयाल कुमावत को नियुक्त करने के खिलाफ हाईकोर्ट में याचिका दायर की गई है। सवाई माधोपुर जिला क्रिकेट संघ की ओर से दायर इस याचिका पर 18 जुलाई को सुनवाई होगी।

याचिका में अधिवक्ता मधुसुदन सिंह ने बताया कि याचिकाकर्ता क्रिकेट संघ की वर्तमान कार्यकारिणी को साल 2022 से 2026 के लिए चुना गया था। वहीं सरकारिता विभाग ने गत 27 जून को दीनदयाल कुमावत को आरसीए की एड-हॉक कमेटी का कन्वीनर नियुक्त किया है।

यह नियुक्ति नियमों के खिलाफ है। एड-हॉक कमेटी का कंवीनर वह व्यक्ति ही बन सकता है, जो आरसीए चुनाव लडने के लिए पात्र हो। दीन दयाल कुमावत का सवाई माधोपुर से कोई रिश्ता ही नहीं है। वे ना तो सवाई माधोपुर में जन्मे और ना ही वहां निवास करते हैं।

- याचिका में अधिवक्ता मधुसुदन सिंह ने बताया कि याचिकाकर्ता क्रिकेट संघ की वर्तमान कार्यकारिणी को साल 2022 से 2026 के लिए चुना था

यहां तक की वे सवाई माधोपुर के किसी प्राइमरी क्रिकेट क्लब के पदाधिकारी भी नहीं है। ऐसे में वे जिला संघ के किसी पद के लिए भी पात्र नहीं हैं। इसके बावजूद भी उन्हें एड-हॉक कमेटी का कंवीनर बनाया गया है। इसलिए उनके नियुक्ति आदेश को रद्द किया जाए।

मोदी ने डॉक्यूमेंट्री "विकास भी-विरासत भी" के निर्माण पर प्रसन्नता व्यक्त की

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चित्तौडगढ़ सांसद सीपी जोशी को चित्तौडगढ़ संसदीय क्षेत्र में विकास कार्यों पर आधारित डॉक्यूमेंट्री "विकास भी-विरासत भी" के निर्माण पर एक सराहनापूर्ण संदेश पत्र भेजा है।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पत्र भेजकर चित्तौडगढ़ सांसद सीपी जोशी के नेतृत्व में हो रहे प्रगति कार्य की सराहना की

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने पत्र में चित्तौड़गढ़ की ऐतिहासिक सांस्कृतिक और वीरता की परंपरा का उल्लेख करते हुए सांसद सीपी जोशी के नेतृत्व में क्षेत्र में हो रहे विकास कार्यों की प्रशंसा की साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य, आधारभूत ढांचे का विकास, कौशल विकास कार्यक्रमों के विस्तार, युवाओं के सशक्तिकरण, ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण और पर्यटन को बढ़ावा देने जैसे महत्वपूर्ण प्रयासों को भी उल्लेखनीय बताया है। उन्होंने जनप्रतिनिधि के रूप में सांसद सीपी जोशी की सक्रिय भूमिका और जनता से जुड़ाव की विशेष रूप से सराहना की।

प्रधानमंत्री मोदी ने "वोकल फॉर लोकल" अभियान के अंतर्गत चित्तौड़गढ़ की पारंपरिक शिल्प, हस्तशिल्प और सांस्कृतिक धरोहरों को वैश्विक पहचान मिलने पर संतोष व्यक्त किया है। उन्होंने यह भी कहा कि विकास की इस ऐतिहासिक यात्रा में जन-जन तक कल्याणकारी योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित करना सरकार का प्रमुख उद्देश्य है। सांसद सीपी जोशी ने प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह हम सभी के लिए प्रेरणास्पद क्षण है।

सार-समाचार

अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल रस्तोगी को कार्यकाल दिया

राजदीपक रस्तोगी

जयपुर। केबिनेट की नियुक्ति समिति की अनुशंषा पर माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा राजस्थान उच्च न्यायालय के अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल राजदीपक रस्तोगी को ऐतिहासिक पांचवें कार्यकाल में नियुक्ति दी गई। यह नियुक्ति अभी 3 महिने के लिए दी गई है। केबिनेट नियुक्ति समिति के अध्यक्ष प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्वंय है ज्ञात हो कि इससे पूर्व भी रस्तोगी को चौथा कार्यकाल दिया गया था जो अपने आप मे इतिहास था और अब पांचवा कार्यकाल देकर इतिहास पर इतिहास रच दिया है। रस्तोगी ने अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल पर 28.07.2014 को नियुक्त हुए थे और उसके पश्चात निरन्तर इस पद पर चौथी बार नियुक्त होकर इतिहास रचा था। रस्तोगी ने अपने कार्यकाल के दौरान भारत सरकार को लगभग 95 प्रतिशत केसेज में सफलता दिलाकर एवं 18000 करोड रूपये का राजस्व भारत सरकार के पक्ष में बचाकर एक इतिहास रचा है।

देवनानी से पुलिस महानिदेशक की मुलाकात

जयपुर । राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी से बुधवार को यहां विधान सभा में राजस्थान के नवनियुक्त पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा ने शिष्टाचार मुलाकात की। पुलिस महानिदेशक शर्मा ने विधान सभा अध्यक्ष देवनानी का पुष्प गुच्छ भेंट कर अभिवादन किया। देवनानी ने इस नवीन दायित्व के लिए शर्मा को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। विधान सभा अध्यक्ष देवनानी ने पुलिस महानिदेशक से विधान सभा, विधायक आवास परिसर व कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान और अजमेर से संबंधित विभिन्न सुरक्षा व्यवस्थाओं पर चर्चा की। देवनानी से भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी राजीव कुमार शर्मा की राज्य के पुलिस महानिदेशक के रूप में पदभार ग्रहण के पश्चात यह पहली शिष्टाचार भेंट थी।

आयुक्त पटेल ने ली बैठक

जयपुर। हेरिटेज निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल ने बुधवार को भवन निर्माण शाखा कार्मिकों की बैठक ली। इस दौरान निगम आयुक्त ने बैठक में निगम अधिकारियों को अवैध निर्माणों की शिकायतों की डिटेल ऑडिट कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिन अवैध निर्माण को सीज किया गया, वहां पर निरीक्षण कर निगरानी रखी जाएं। जिससे कि सीज के दौरान अन्य निर्माण नहीं हो सकें। इसके अलावानिरीक्षण के दौरान की सीज भवन की फोटो अपलोड की जाएं, कम से कम तीन बार की विजिट फोटो जियो टैग वाली अपलोड की जाएं। वहीं, बैठक में आयुक्त डॉ निधि पटेल ने जोन के द्वारा की जा रही अवैध निर्माणों के सीज प्रकरणों का एक रजिस्टर भी दर्ज करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि शपथ पत्र देने के बाद नियमानुसार भवन की सीज खुलने के बाद भी 60 दिन तक अवैध निर्माण की मॉनिटरिंग की जाएं और रिकॉर्ड सुरक्षित रखें। साथ ही कहा कि शिकायतों के निस्तारण करते हुए निगम कार्मिकों की शिकायत मिलने पर कनिष्ठ अभियंता, गजधर और अन्य शाखा के कर्मचारियों पर की सख्त कार्रवाई जाएगी।

प्रेम जाल में फांस कर युवती से दुष्कर्म

जयपुर। शास्त्री नगर थाना इलाके में रिश्तेदार युवक द्वारा प्रेम जाल में फांस कर एक युवती से दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। विरोध करने पर आरोपित रिश्तेदार ने शादी करने का झांसा देकर घर से भगा ले जाकर देहशोषण कर वापस छोड़ दिया। इस संबंध में थाने में पीड़ित युवती ने आरोपित रिश्तेदार के खिलाफ मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने बताया कि शास्त्री नगर की रहने वाली 25 वर्षीय युवती ने मामला दर्ज करवाया है कि रिश्तेदार होने के कारण आरोपित का घर पर आना-जाना था। बातचीत के दौरान आरोपित रिश्तेदार ने उसे प्रेम जाल में फांस लिया। मिलने आने पर अकेला पाकर आरोपित ने उसके साथ जबरदस्ती की। विरोध करने पर आरोपी ने शादी करने का झांसा देकर दुष्कर्म किया। शादी करने का झांसा देकर लगातार देहशोषण करता रहा। आरोप है कि शादी करने की कहकर आरोपित रिश्तेदार उसे घर से भगाकर ले गया। लिव-इन में रखकर आरोपित ने उसके साथ देहशोषण किया। जिसके बाद उसे वापस घर छोड़कर चला गया। शादी करने का दबाव बनाने पर आरोपित ने मना कर दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है।

रोहिणी विहार बढारणा में 33 केवी सब-स्टेशन का कार्य पूर्ण

जयपुर। जयपुर नगर वृत्त-उत्तर के अन्तर्गत सिटी डिवीजन-7 क्षेत्र के रोहिणी विहार बढ़ारणा में 33/11 केवी सब-स्टेशन का कार्य पूर्ण कर इससे विद्युत आपर्ति प्रारम्भ कर दी गई है। इस उपकेन्द्र के निर्माण पर 4.43 करोड़ रूपए की लागत आयी है। इस सब स्टेशन को 33 केवी विद्युत सप्लाई 220 केवी जीएसएस वीकेआई और 33/11 सब-स्टेशन हरमाड़ा से की जाएगी। सब-स्टेशन से 11 केवी के सात फीडर निकाले गए हैं जिनसे देव विहार, रोहिणी विहार, बढारणा, केरियों की ढाणी, चन्दिजा की ढाणी, भगवती नर्सरी, हरमाडा घाटी एवं मनसा माता रोड़ क्षेत्र की विद्युत सप्लाई में सुधार होगा और लगभग 8 हजार विद्युत उपभोक्ताओं को बेहतर विद्युत आपूर्ति मिलेगी।

आजीवन कारावास की सजा काट रहा बंदी खुली जेल से भागा

जयपुर। मालपुरा गेट थाना इलाके में स्थित सांगानेर खुला बंदी शिविर से आजीवन कारावास की सजा काट रहा बंदी फरार हो गया। इस सम्बंध में खुला बंदी शिविर प्रभारी ने थाने में मामला दर्ज करवाया है।

जांच अधिकारी महिला हेड कांस्टेबल धोली बाई ने बताया कि खुला बंदी शिविर प्रभारी ने मामला दर्ज करवाया कि बंदी गोपाल लाल मीणा हत्या के एक मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहा था। 15 जुलाई को वह सुबह काम पर गया था शाम वह रोल कॉल पर नहीं आया। इस पर उससे सम्पर्क करने का प्रयास किया,लेकिन उसका फोन बंद आया।

आरोपी गिरफ्तार

जयपुर। कानोता थाना पुलिस ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए 01.01 ग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक सहित एक बदमाश को गिरफ्तार किया है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है। एसआई सुभाष ने बताया कि पुलिस कमिश्नरेट की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए 01.01 ग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक सहित कालू उर्फ आमिर को लखेसरा रोड गिरफ्तार किया है।

हटाए अस्थाई अतिक्रमण

जयपुर। हेरिटेज निगम की सतर्कता शाखा ने बुधवार को अस्थाई अतिक्रमण को हटा दिया। इस दौरान सतर्कता शाखा की टीम ने पांच ट्रक सामान भी जब्त किया है। निगम हेरिटेज आयुक्त डॉ निधि पटेल के निर्देश पर दस्ते ने सूरजपोल, पाड़ा मंडी, ईदगाह, हवा महल रोड, चांदी की टकसाल, आमेर रोड, बड़ी चौपड़, त्रिपोलिया बाजार, छोटी चौपड़, चांदपोल, किशनपोल बाजार में कार्रवाई सड़क और बरामदे से अस्थाई अतिक्रमण को हटा दिया।

दो दिन तक थाने की सफाई करने की सजा के साथ कार्रवाई बंद

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने जानलेवा हमला करने के मामले में पांच युवकों को शहर के अशोक नगर थाने की दो दिन तक सफाई करने की सजा देते हुए राजीनामे के आधार पर प्रकरण में कार्रवाई बंद कर दी है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश अनुराग व अन्य की आपराधिक याचिका को स्वीकार करते हुए दिए। अदालत ने कहा कि नए आपराधिक कानून में सामुदायिक सेवा की सजा का प्रावधान है। ऐसे में याचिकाकर्ता स्वच्छता अभियान के तहत दो दिन तक अशोक नगर थाने की सफाई करेंगे। याचिका में अधिवक्ता राजेश शर्मा ने अदालत को बताया कि 24 मई 2025 को सरदार पटेल मार्ग पर 23 से 25 वर्ष के निवाई के कुछ युवकों पर इसी आयुवर्ग के बांदीकुई के कुछ लडकों ने हमला कर दिया था।। इस दौरान एक युवक का सिर फूट गया। इसे लेकर पुलिस ने जानलेवा हमले का मामला दर्ज किया। याचिका में कहा गया कि दोनों ही पक्ष एक दूसरे को जानते तक नहीं थे। इसके अलावा याचिकाकर्ता युवकों के खिलाफ आज तक अन्य कोई आपराधिक मामला दर्ज नहीं है। वहीं दोनों पक्षों के बीच राजीनामा भी हो चुका है। ऐसे में मामले में चल रही आपराधिक कार्रवाई को बंद किया जाए।

मिलावट के लंबित मामलों के निस्तारण के दिए निर्देश

जयपुर। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण के केन्द्रीय मुख्य कार्यकारी अधिकारी जी. कमला वर्धन ने कहा कि राजस्थान में मिलावट रोकथाम एवं खाद्य सुरक्षा को लेकर सेंपलिंग कार्यवाही के साथ-साथ आमजन में खाद्य सुरक्षा के प्रति जन-जागरुकता के लिए बेहतर प्रयास किए जा रहे हैं। प्रदेश में मिलावट के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान से आमजन में जागरूकता बढ़ी है तथा मिलावट पर प्रभावी रोकथाम हो रही है। उन्होंने मिलावट रोकने के लिए दर्ज किए जा रहे केसेज की जानकारी ली एवं इनके त्वरित निस्तारण के साथ सतत निगरानी के निर्देश दिए। केन्द्रीय सीईओ कार्यों की समीक्षा कर रहे थे। अतिरिक्त जिला कलक्टर, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी तथा खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की क्षेत्रीय समीक्षा बैठक में उन्होंने मिलावट रोकथाम के लिए खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के प्रावधानों के तहत किए जा रहे प्रयासों, लम्बित केसेज, मैनपॉवर सहित विभिन्न मामलों पर विस्तार से समीक्षा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

'केंद्र सरकार समाज के सभी वर्गों के विकास के लिए कटिबद्ध है'

जयपुर। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री रामदास अठावले ने आज जयपुर में प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा किकांग्रेस और राहुल गांधी एससी ,एसटी वर्ग को लेकर झूठ फैला रहे है और समाज में फूट डालने की कोशिश कर रहे हैं। संविधान बदलने जैसी बातें करके लोगों को गुमराह कर रहे हैं लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि संविधान को किसी के बाप का बाप भी नहीं बदल सकता है। उन्होंने महाराष्ट्र में मराठी भाषा को लेकर गरमाई राजनीति और माहौल को लेकर कहा कि महाराष्ट्र में मराठी होने पर मुझे गर्व है लेकिन हिंदी बोलने वाले लोगों के साथ मारपीट करना गलत है। महाराष्ट्र में मराठी लोगों का जितना विकास में योगदान है उतना ही योगदान गैर मराठी लोगों का भी है। मुंबई में 60 आबादी गैर मराठी की है। बड़े-बड़े उद्योगपति गैर मराठी है। कहा कि बालासाहेब ठाकरे ने शिवसेना का गठन मराठियों के अधिकारों को लेकर किया था लेकिन राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे इसके विपरीत काम कर रहे हैं। महाराष्ट्र में जो लोग जन्म लेते हैं वे चाहे गैर मराठी ही क्यों ना हो उन्हें मराठी बोलना आता है लेकिन जो हिंदी बोलते हैं उनका अपमान नहीं होना चाहिए। वहां की सरकार इस पर कार्रवाई कर रही है। उन्होंने मोदी सरकार के काम ऑन और उपलब्धियां की जानकारी देते हुए कहा कि मोदी सरकार ने 25 करोड लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकाला है।

- मराठी के नाम पर ठाकरे परिवार की दादागिरी गलत, संविधान किसी के बाप का बाप भी नहीं बदल सकता - अठावले

केंद्र सरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सबको न्याय देने के लिए और समाज के हर वर्ग का विकास करने के लिए कटिबद्ध है। उन्होने कहा की केंद्र सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओ के माध्यम से 25 करोड़ लोगो को गरीबी रेखा से ऊपर लाने का प्रयास किया गया है।

हनी-ट्रैप में फंसाने की धमकी देकर ऐंठे नब्बे लाख

जयपुर। महेश नगर थाना इलाके में एक व्यवसायी को युवती ने प्रेम जाल (हनी-ट्रैप) में फंसाकर नब्बे लाख रुपए ऐंठने का मामला सामने आया है। पुलिस जानकारी में सामने आया कि आरोपित महिला ने झूठे दुष्कर्म के मामले में फंसाने की धमकी देकर ब्लैकमेल कर पचास लाख रुपए की डिमांड की। इस संबंध में थाने में पीड़ित व्यवसायी ने आरोपित युवती के खिलाफ मामला दर्ज कराया। पुलिस ने बताया कि सांगानेर निवासी 42 वर्षीय व्यवसायी ने मामला दर्ज करवाया है कि एक कंपनी के निदेशक है और वर्ष 2017 में उसकी कंपनी से समर इंटर्न कर आरोपित युवती ने नौकरी शुरू की थी। जिसके बाद सोशल मीडिया के जरिए व्यवसायी से सम्पर्क करने की कोशिश की। ध्यान नहीं देने पर व्यवसायी की पत्नी से दोस्ती कर मिलना-जुलना शुरू कर दिया। इसके बाद व्यवसायी के नजदीक आ गई। इसके बाद झूठे प्रेमजाल में फंसाकर शादी करने का झांसा देकर जरूरत के नाम पर रुपए वसूलना शुरू कर दिया। इसके बाद से आरोपित युवती शादी का झांसा देकर झूठ बोलकर अलग-अलग तरीके से ब्लैकमेलर युवती ने नब्बे लाख रुपए ऐंठ लिए।

रिश्वत प्रकरण में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक की जमानत याचिका खारिज, डीटीओ को राहत

जयपुर । राजस्थान हाईकोर्ट ने एसीबी चौकी, सवाई माधोपुर में तैनात होकर विभिन्न सरकारी अधिकारियों से रिश्वत लेने के मामले में आरोपी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र शर्मा की जमानत याचिका को खारिज कर दिया है। जस्टिस चंद्र प्रकाश श्रीमाली की एकलपीठ ने यह आदेश आरोपी की जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने कहा कि अनुसंधान में सामने आया है कि याचिकाकर्ता आरोपी ने दूसरे लोक सेवकों को ट्रेप करने की धमकी देकर रिश्वत ली है। ऐसे में आरोपी को जमानत पर रिहा नहीं किया जा सकता। दूसरी ओर अदालत ने प्रकरण में सवाई माधोपुर के जिला परिवहन अधिकारी रहे पून्याराम मीणा को जमानत पर रिहा करने के आदेश दिए हैं।

जमानत याचिका में सुरेन्द्र शर्मा की ओर से कहा गया कि उसे बिना किसी आधार के गत 20 मई को गिरफ्तार किया गया था। उसके कब्जे से कोई रिश्वत राशि भी बरामद नहीं हुई है। उसे सह आरोपी के साथ वार्तालाप के आधार पर आरोपी बनाया गया है। वहीं सह आरोपी विवेक सोनी को पूर्व में जमानत दी जा चुकी है। इसके अलावा उसके खिलाफ जांच करने से पूर्व अभियोजन स्वीकृति भी नहीं ली गई है। ऐसे में उसे जमानत पर रिहा किया जाए। जिसका विरोध करते हुए सरकारी वकील जयप्रकाश तिवाडी ने कहा कि याचिकाकर्ता सरकारी अधिकारियों को मोबाइल रिकॉर्डिंग का भय दिखाकर संगठित गिरोह के माध्यम से मासिक रूप से भारी रिश्वत लेता था।

इस संबंध में जून, 2024 को आम जन की ओर से परिवाद दिया गया था। सह आरोपी दलाल रामराज मीणा के मोबाइल से हुई बातचीत के आधार पर याचिकाकर्ता को अपराध में लिप्त पाया गया और उसे अभिरक्षा में लिया गया। ऐसी स्थिति में उसके खिलाफ अभियोजन स्वीकृति की जरूरत भी नहीं थी। इसलिए आरोपी की जमानत याचिका को खारिज किया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए अदालत ने आरोपी की जमानत याचिका को खारिज कर दिया है।

'नीलाम खानों को परिचालन में लाने के लिए राज्य सरकार गंभीर'

जयपुर। खान, भू विज्ञान एवं पेट्रोलियम के प्रमुख सचिव टी. रविकान्त ने कहा है कि प्रमुख खनिजों की नीलामी में समूचे देश में अग्रणी होने के साथ ही अब नीलाम खानों को परिचालन में लाने में भी राजस्थान देश के अग्रणी राज्यों में शुमार हो जाएगा। अगले तीन से चार माह में आवश्यक अनुमतियों की औपचारिकताएं पूरी कराकर करीब 10 प्रधान खनिज खानों को परिचालन में लाया जा सकेगा। उन्होंने स्टेक होल्डर्स से भी कहा कि वे तय समय सीमा में आवश्यक औपचारिकताएं व सबंधित स्थानों पर आवेदन प्रस्तुत करें ताकि समय पर अनुमतियां जारी हो सके।

प्रमुख सचिव खान टी. रविकान्त बुधवार को आरआईसी में खान, वन एवं पर्यावरण, सीया, जीएसआई, आईबीएम व स्टेक होल्डर्स के साझा मंच को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि नीलाम खानों को जल्द से जल्द परिचालन में लाना राज्य सरकार की प्राथमिकता है और मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा लगातार इस बात पर जोर दे रहे हैं कि संबंधित विभाग परस्पर सहयोग व समन्वय से नीलाम खानों को आवश्यक अनुमतियां जारी कर परिचालन के समन्वित प्रयास करें ताकि प्रदेश में खनिज क्षेत्र में निवेश, रोजगार और राजस्व में बढ़ोतरी हो सके। उन्होंने बताया कि 2016 से नीलामी प्रावधान के बाद से अब तक केवल 5 खानों में कार्य आरंभ हो सका है। हमारा प्रयास है कि अगले माहों में प्राथमिकता से कार्य करते हुए 10 नई खानों में कार्य आरंभ हो जाएं। रविकान्त ने कहा कि स्टेक होल्डर्स अनुमतियों के लिए आवश्यक आवेदन करने में अनावश्यक देरी ना करे।

रविकान्त ने सीया से आग्रह किया कि वै एक मानक चैक लिस्ट उपलब्ध करादें ताकि स्टेक होल्डर्स द्वारा उसी के अनुसार आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत किए जा सके।

श्रद्धालु कर सकेंगे ज्योतिर्लिंग का रुद्राभिषेक-हवन

जयपुर। सावन माह में भगवान भोलेनाथ की भक्ति में लीन छोटीकाशी के श्रद्धालु दूसरे सोमवार की पूर्व संध्या पर आराध्य देव गोविंद देवजी मंदिर में महाकाल का महाभिषेक करेंगे। आगामी रविवार, 20 जुलाई को यहां द्वादश ज्योतिर्लिंग का पूजन और रूद्राभिषेक का भव्य आयोजन होगा। श्रद्धालु आराध्य देव के दर्शन के साथ-साथ आशुतोष भगवान का पूजन और अभिषेक का पुण्य लाभ भी उठा सकेंगे। मंदिर महंत अंजन कुमार गोस्वामी के सान्निध्य में बुधवार को ठाकुर राधा गोविंद देवजी के श्रीचरणों में आयोजन का पोस्टर अर्पित किया। इससे पूर्व प्रथम पूज्य मोतीडूंगरी गणेशजी मंदिर में आयोजन के निर्विघ्न रूप से संपन्न होने की प्रार्थना की। इस मौके पर मोतीडूंगरी गणेश मंदिर के महंत कैलाश शर्मा, गायत्री परिवार राजस्थान के समन्वयक ओमप्रकाश अग्रवाल, सनातन बोर्ड संघर्ष समिति राजस्थान के संयोजक राहुल द्विवेदी, गुर्जर समाज युवा अध्यक्ष गौरव गुर्जर, कुलदीप सुलोनिया और रवि मीणा ने आयोजन के पोस्टर का विमोचन किया। गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी में देवमाता गायत्री और गुरुसत्ता को भी भावभरा आमंत्रण दिया गया। गोविंद देवजी मंदिर के सेवाधिकारी मानस गोस्वामी ने बताया कि सावन माह में अधिक से अधिक श्रद्धालु भगवान भोलेनाथ की पूजा और अभिषेक कर सकें।

रणनीति से सिलिकॉन तक: सप्त शक्ति टेक सेमिनार का शुभारंभ

जयपुर। सप्त शक्ति कमान द्वारा बहुप्रतीक्षित तकनीकी सेमिनार "नेक्स्ट जनरेशन कॉम्बैट - शेपिंग टूमारोज मिलिट्री टुडे" का शुभारंभ आज जयपुर मिलिट्री स्टेशन में सेंटर फॉर लैण्ड वॉरफेयर स्टडीज़ और सोसायटी ऑफ़ इंडियन डिफ़ेंस मैन्युफैक्चरस के सहयोग से हुआ। इस आयोजन की परिकल्पना लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदरसिंह, जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ, साउथ वेस्टर्न कमांड द्वारा की गई थी। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी की "विकसित भारत" के निर्माण में परिवर्तनकारी भूमिका पर एक प्रेरक उद्घाटन भाषण दिया।

लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदरसिंह(बीच में) ने सेमिनार "नेक्स्ट जनरेशन कॉम्बैट - शेपिंग टूमारोज मिलिट्री टुडे" का शुभारंभ किया।

यह सेमिनार अग्रणी विशेषज्ञों, सैन्य रणनीतिकारों और रक्षा क्षेत्र के नवोन्मेषकों को एक मंच पर लेकर आई, जहाँ बदलते युद्ध परिदृश्य और निर्णायक बढ़त बनाए रखने के लिए आवश्यक तकनीकी उन्नितयों पर गहन विचार-विमर्श हुआ।

अपने उद्घाटन भाषण में, लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदरसिंह ने इस बात पर बल दिया कि भारतीय सेना को आधुनिक और भविष्य के युद्धों की बहुआयामी चुनौतियों का सामना करने के लिए तेजी से अनुकूलन और नवाचार अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने ग्रे ज़ोन युद्ध की जटिलताओं को रेखांकित किया और इस बात पर जोर दिया कि हाइब्रिड खतरों का मुकाबला करने के लिए परिष्कृत क्षमताओं का विकास अत्यंत आवश्यक है,जो युद्ध और शांति की रेखाओं को धुंधला कर देते हैं। उन्होंने ऑपरेशन "सिंदूर" की सफलता में उन्नत प्रणालियों, सटीक आयुध, खुफिया, निगरानी और टोही क्षमताओं, विशेष रूप से ड्रोन की प्रभावी तैनाती की भूमिका को रेखांकित किया।

उन्होंने निर्णय लेने की क्षमता को बेहतर बनाने, संसाधनों के अनुकूल उपयोग और संचालन की गति एवं सटीकता बढ़ाने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अपार संभावनाओं की सराहना की। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि घातक स्वायत्त हथियार प्रणालियों के विकास और तैनाती में मजबूत नैतिक ढांचे, मानवीय निगरानी और अंतरराष्ट्रीय मानवतावादी कानूनों का पालन अत्यावश्यक है। उन्होंने साउथ वेस्टर्न कमांड और मालवीया नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के बीच रक्षा प्रौद्योगिकी के संयुक्त स्वदेशीकरण, अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने के लिए समझौता ज्ञापन की सराहना की।

राजधानी जयपुर में पेट्रोल चोर गैंग सक्रिय

जयपुर। वैशाली नगर थाना इलाके में पेट्रोल चोर गैंग सक्रिय हैं। जानकारी के अनुसार गैंग के लोग बाइक पर घूमकर रेकी करते है और फिर उसके बाद रात को कारों से पेट्रोल चोरी करते है। वहीं अगर लोगों के जागने पर उनसे बचने के लिए गुलेल से हमला कर भाग जाते है। पुलिस फुटेज के आधार पर पेट्रोल चोर गैंग के बदमाशों की तलाश कर रही है।

उप मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में जिले की प्रगति व आपदा प्रबंधन पर उच्चस्तरीय मंथन

■ बजट घोषणाओं, जल प्रबंधन और विकास योजनाओं की समीक्षा : उप मुख्यमंत्री ने दिए निर्देश

ब्यावर (निसं)। राजस्थान सरकार की उप मुख्यमंत्री एवं ब्यावर जिला प्रभारी मंत्री दिया कुमारी की अध्यक्षता में आज कलेक्ट्रेट सभागार, अजमेर में ब्यावर एवं अजमेर जिले के जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में आपदा प्रबंधन, अतिवृष्टि, जल निकासी, सड़क स्थिति, बजट घोषणाओं तथा राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं की प्रगति की गहन समीक्षा की गई।

बैठक में कैबिनेट मंत्री सुरेश सिंह रावत, मसूदा विधायक वीरेंद्र सिंह कानावत, अजमेर संभागीय आयुक्त शक्ति सिंह राठौड़, जिला कलेक्टर कमल राम मीना, जिला कलेक्टर अजमेर सहित दोनों जिलों के विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।बैठक के दौरान उप मुख्यमंत्री ने जिला कलेक्टर से नवसृजित जिले ब्यावर में राज्य सरकार की बजट घोषणाओं एवं फ्लैगशिप स्कीमों के क्रियान्वयन की विस्तार से जानकारी ली। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी विभागीय अधिकारी योजनाओं को जनहित में समयबद्ध रूप से पूर्ण करें एवं जिन योजनाओं में मुख्यालय स्तर से मार्गदर्शन अथवा अनुमति अपेक्षित हो, उनकी सूचना त्वरित रूप से जयपुर भेजी जाए, जिससे निर्णय शीघ्रता से लिया जा सके। उन्होंने 'पंच गौरव' कार्यक्रम के अंतर्गत पर्यटन व खेल गतिविधियों की संभावनाओं पर भी चर्चा की और संबंधित अधिकारियों को स्थानीय स्तर पर नवीन प्रस्ताव प्रस्तुत करने को कहा।उप मुख्यमंत्री द्वारा जिले में अतिवृष्टि से उत्पन्न जल भराव की स्थिति, जल निकासी व्यवस्था, नालों की सफाई तथा नदी और कचरा प्रबंधन के तहत चल रहे कार्यों की प्रगति की भी जानकारी ली गई।

उन्होंने देवमाली क्षेत्र को पर्यटन दृष्टिकोण से विकसित करने हेतु 2 करोड़ 30 लाख रुपये के प्रस्ताव पर चर्चा की एवं अधीक्षण अभियंता, सार्वजनिक निर्माण विभाग को क्षेत्र में आवागमन को सुगम बनाने हेतु आवश्यक प्रस्ताव तैयार कर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि देवमाली में पर्यटन विकास से स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा।कैबिनेट मंत्री सुरेश सिंह रावत ने कहा कि बजट घोषणाओं के तहत स्वीकृत कार्यों की प्रगति अपेक्षा से धीमी है, इसे गंभीरता से लेते हुए संबंधित विभाग शीघ्र गति प्रदान करें। उन्होंने विशेष रूप से पीडब्ल्यूडी विभाग को निर्देशित किया कि वर्तमान मानसून में जिन सड़कों पर आवागमन में कठिनाई हो रही है, वहां प्राथमिकता से मरम्मत व सुधार कार्य करवाया जाए। उन्होंने हरियालो राजस्थान अभियान के अंतर्गत सभी विभागों को वृक्षारोपण के कार्यों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।मसूदा विधायक वीरेंद्र सिंह कानावत ने बैठक में अपने विधानसभा क्षेत्र की चिकित्सा व्यवस्थाओं एवं सड़क निर्माण से संबंधित मुद्दों को प्रमुखता से रखा। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा सेवाओं की सुलभता बढ़ाने और सड़क संपर्क को बेहतर बनाने की आवश्यकता बताई, जिस पर उप मुख्यमंत्री ने संबंधित विभागों को शीघ्र समाधान के निर्देश दिए।जिला कलेक्टर कमल राम मीना ने बैठक में एक विस्तृत प्रेजेंटेशन के माध्यम से राज्य सरकार की बजट घोषणाओं, योजनाओं और अन्य गतिविधियों की प्रगति की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि नवगठित जिले ब्यावर में बजट घोषणाओं एवं अन्य आवश्यकताओं के दृष्टिगत कुल 202 प्रकरणों में 345.2643 हैक्टेयर भूमि का आवंटन / आरक्षण किया गया है। साथ ही, विशेष अभियान के तहत आवंटित विद्यालय भवन और खेल मैदान हेतु कुल 241 पट्टों का वितरण किया गया है। बजट घोषणा वर्ष 2024-25 के अंतर्गत कुल 18 प्रकरणों में से 14 में भूमि आवंटन आदेश जारी किए जा चुके हैं, जबकि 3 में भूमि की आवश्यकता नहीं है और 1 प्रकरण जिला स्तर पर लंबित है। वर्ष 2025-26 के अंतर्गत कुल 29 प्रकरणों में से 20 में आदेश जारी हो चुके हैं, 5 में आवश्यकता नहीं है और 4 प्रकरण लम्बित हैं, जिनमें से 1 जिला स्तर व 3 राजस्व स्तर पर लंबित हैं। बैठक में वर्षा की स्थिति पर भी रिपोर्ट प्रस्तुत की गई, जिसमें बताया गया कि दिनांक 15 जून से 15 जुलाई 2025 तक नवगठित जिले की आठ तहसीलों में औसतन 3108.3 मिमी वर्षा दर्ज की गई। वर्षा प्रबंधन और राहत कार्यों को लेकर सभी उपखंड अधिकारियों को सतर्कता और तत्परता के निर्देश दिए गए।समीक्षा बैठक में विभागवार योजनाओं की भी विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई। इसमें राजस्व विभाग द्वारा नामान्तरण व न्यायालयीन प्रकरणों की तहसीलवार रिपोर्ट, स्वामित्व योजना की प्रगति, ग्रामीण विकास व पंचायती राज विभाग की योजनाएं, प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), मिशन हरियालो राजस्थान, पंडित दीनदयाल उपाध्याय गरीबी मुक्त गांव योजना, स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण), मुख्यमंत्री शहरी रोजगार गारंटी योजना, चिकित्सा विभाग एवं आयुष्मान भारत - प्रधानमंत्री स्वास्थ्य आधारभूत संरचना मिशन (-), पशुपालन, मुख्यमंत्री शिक्षित राजस्थान अभियान, खनिज विभाग, स्वायत्त शासन, प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना, पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना, जल संसाधन विभाग, मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान तथा कृषि विभाग की योजनाएं सम्मिलित रहीं।बैठक के समापन पर उप मुख्यमंत्री महोदया ने उपस्थित समस्त अधिकारियों को निर्देशित किया कि नवसृजित जिले में राज्य सरकार की योजनाओं को समयबद्ध, पारदर्शी और संवेदनशील तरीके से लागू करते हुए जन अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयास करें। बैठक में एसीईओ गोपाल लाल सहित समस्त जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

गौ सेवा को मिला बढ़ावा

भीलवाड़ा। जाइंट्स ग्रुप ऑफ टेक्सटाइल सिटी भीलवाड़ा द्वारा आज जाइंट्स वेलफेयर फाउंडेशन के वर्ल्ड चेयरपर्सन एस.पी. चतुर्वेदी की एक दिवसीय आधिकारिक यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष के.एल. गिरहोत्रा और स्पेशल कमेटी सदस्य एस.के. जैन भी उपस्थित रहे।

आम सूचना

मेरी माता छोटी पत्नि कालू जाट निवासी ग्राम दादिया की मृत्यु दिनांक 01.11.2015 को मेरे निवास स्थान पर ग्राम दादिया में हो गई थी। जिसका पूर्व में इन्द्राज ग्राम पंचायत दादिया में नहीं करवाया था। अब मैं मेरी माता छोटी जाट का मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए अराई तहसील कार्यालय में आवेदन किया है। मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने बाबात जिस किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो 7 दिन में मय दस्तावेज के साथ अराई तहसीलदार के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें। बाद मियाद कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं होगी। - प्रार्थी- लाला पुत्र कालू जाट, निवासी ग्राम दादिया तहसील अराई अजमेर

आम सूचना

मेरी पत्नि श्रीमती प्रेम देवी पत्नि गोकुल जाट निवासी ग्राम दादिया की मृत्यु 15.02.1997 को मेरे निवास स्थान पर ग्राम दादिया में हो गई थी। जिसका पूर्व में इन्द्राज ग्राम पंचायत दादिया में नहीं करवाया गया था। अब मैं मेरी पत्नि श्रीमती प्रेम देवी का मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए अराई तहसील कार्यालय में आवेदन किया है। मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने बाबात जिस किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो 7 दिन में मय दस्तावेज के साथ अराई तहसीलदार के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें। बाद मियाद कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं होगी। - प्रार्थी- गोकुल पुत्र माधु जाट, निवासी ग्राम दादिया तहसील अराई अजमेर

आम सूचना

मेरे पिता कूल दतक पुत्र छोगा जाति जाट निवासी ग्राम दादिया की मृत्यु दिनांक 01.11.1994 को मेरे निवास स्थान पर ग्राम दादिया में हो गई थी। जिसका पूर्व में इन्द्राज ग्राम पंचायत दादिया में नहीं करवाया था। अब मैं मेरे पिता कालू दतक पुत्र छोगा जाट का मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए अराई तहसील कार्यालय में आवेदन किया है। मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने बाबात जिस किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो 7 दिन में मय दस्तावेज के साथ अराई तहसीलदार के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें। बाद मियाद कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं होगी। - प्रार्थी- लाला पुत्र कालू जाट, निवासी ग्राम दादिया तहसील अराई अजमेर

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

लोक सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती संजू देवी की ग्राम लोहागल देवनगर के खसरा नंबर 1014 भूखण्ड संख्या 411 में क्षेत्रफल 200 वर्गगज के भूखण्ड की पत्रावली नियमन हेतु प्रक्रियाधीन है। उक्त नियमन के संबंध में दैनिक समाचार पत्र में विज्ञप्ति जारी कर 7 दिवस की आपत्ति आमंत्रित की जाती है। अतः किसी भी हितबद्धकारी को इस नियमन के संबंध में आपत्ति हो तो सूचना के 7 दिवस के भीतर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा नियमन की कार्यवाही कर दी जायेगी। उपायुक्त(उत्तर),अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

नाम परिवर्तन

मेरा सही व वास्तविक नाम तेजु पुत्र रतन उर्फ छगना है। जबकि मेरी एल आई सी पॉलिसी संख्या 187894497 में मेरा नाम तेजु जी खारोल पुत्र छगना खारोल दर्ज है। जबकि रतन उर्फ छगना मेरे ही पिताजी के सही व वास्तविक नाम है। मेरी एल आई सी पॉलिसी में तेजु पुत्र रतन उर्फ छगना दर्ज कर भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना पहचाना जाए।

आम सूचना

मेरे पिता श्रवण गुर्जर पुत्र छितर निवासी गांव रलावता तहसील किशनगढ़ जिला अजमेर की मृत्यु दिनांक 25 मई 2008 को मेरे निवास स्थान पर हो गई, जिनका मृत्यु प्रमाण पत्र बनाने के लिए तहसीलदार कार्यालय किशनगढ़ में आवेदन किया है। इस संबंध में किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो मय दस्तावेज 7 दिवस में तहसीलदार कार्यालय किशनगढ़ में संपर्क करे। प्रार्थी-सोराज पुत्र श्रवण गुर्जर

आम सूचना

मेरे दादाजी श्री गजानंद सेकसरिया पुत्र जुहारमल सेकसरिया जाति अग्रवाल निवासी सेकसरिया सदन शिवाजी नगर, मदनगंज- किशनगढ़ जिला अजमेर का स्वर्गवास मेरे निवास स्थान पर दिनांक 15 अक्टूबर 1960 को हो गया है, जिनका मृत्यु प्रमाण पत्र बनाने के लिए तहसीलदार कार्यालय किशनगढ़ में आवेदन किया है। इस संबंध में किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो मय दस्तावेज 7 दिवस में तहसीलदार कार्यालय किशनगढ़ में संपर्क करे। प्रार्थी-दीनदयाल सेकसरिया पुत्र रामलाल सेकसरिया

शिक्षकों की भारी कमी पर ग्रामीणों में आक्रोश

■ बिंधियाभाटा गांव के पास बबलू के कांटे पर स्कूली बच्चों, महिलाओं और अभिभावकों ने सड़क पर बैठकर घंटों आवागमन बाधित रखा

भीलवाड़ा। जिले के जहाजपुर थाना क्षेत्र के बिंधियाभाटा उच्च माध्यमिक विद्यालय में शिक्षकों की भारी कमी और सुविधाओं के अभाव को लेकर मंगलवार को ग्रामीणों ने आक्रोश जताते हुए देवली-जहाजपुर मुख्य सड़क पर जाम लगा दिया। बिंधियाभाटा गांव के पास बबलू के कांटे पर स्कूली बच्चों, महिलाओं और अभिभावकों ने सड़क पर बैठकर घंटों आवागमन बाधित रखा।

ग्रामीणों ने जानकारी देते हुए बताया कि विद्यालय 12वीं कक्षा तक मान्यता प्राप्त है, लेकिन स्कूल में मात्र 4 से 5 शिक्षक ही कार्यरत हैं, जिससे बच्चों की पढ़ाई बुरी तरह प्रभावित हो रही है। इसके अलावा स्कूल में बैठने के लिए पर्याप्त कक्षा-कक्ष भी नहीं हैं, जिससे छात्रों को खुले में या एक ही कमरे में ठूंस-ठूंस कर बिठाया और पढ़ाया जा रहा है।गुस्साए ग्रामीणों ने स्कूल के प्रिंसिपल को हटाने की भी मांग की और आरोप लगाया कि प्रिंसिपल बच्चों की शिक्षा पर ध्यान नहीं देते और स्कूल की व्यवस्था लगातार बिगड़ती जा रही है।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय विंध्याभाटा में अध्यापकों के 16 पद स्वीकृत हैं जिसमें से 6 पद भरे हैं और अधिकतर विषयों के अध्यापक नहीं हैं साथ ही विद्यालय में कक्षा 9 से 12 तक व्यावसायिक शिक्षा का विषय होते हुए भी राज्य सरकार ने व्यावसायिक शिक्षकों को भी हटा दिया जिससे छात्रों का भविष्य अंधकार में है। स्कूल में शिक्षक लगाने की मांग को लेकर ग्रामीणों ने जहाजपुर देवली मार्ग पर झाड़ियां रखकर लगाया जाम मौके पर काफी संख्या में ग्रामीणों व अभिभावकों की भीड़ इकट्ठा हो गई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस व प्रशासन मौके पर पहुंचा। अधिकारियों ने महिलाओं और अभिभावकों से वार्ता कर समझाइश का प्रयास किया। इस दौरान सड़क के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और आमजन को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। वही ब्लॉक शिक्षा अधिकारी के आश्वासन के बाद ग्रामीण व छात्र, छात्राओं ने जाम खोला।

'पाठशाला' का शुभारंभ

अजमेर, (कासं)। राजस्थान समग्र कल्याण संस्थान द्वारा ग्राम केसरपूरा में 'पाठशाला – एक मूल्य आधारित शिक्षा केंद्र' की शुरुआत की गई। इस केंद्र का उद्घाटन ग्राम सरपंच शक्ति सिंह रावत ने फीता काटकर किया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई, जिसके बाद चयनित बालिकाओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। यह केंद्र 10 से 18 वर्ष की आर्थिक रूप से कमजोर बालिकाओं को शिक्षा, जीवन-कौशल, उद्यमिता और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ने हेतु स्थापित किया गया है।

कार्यालय नगर परिषद किशनगढ जिला (अजमेर) राज

क्रमांक : .न.प.कि./नाम हस्तान्तरण/2025/1746 **आम सूचना** दिनांक : 14/07/2025

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्व ग्राम मदनगंज के खसरा संख्या 645/2 पर स्थित 'जयदीप विहार ए' आवासीय (भूखण्ड सं. ए-06 क्षेत्रफल 166.66 वर्गगज में से विखंडित भूखण्ड क्षेत्रफल 111.11 वर्गगज) पर श्री पवन कुमार जैन पुत्र श्री बच्छराज जैन ने आवेदन प्रस्तुत कर नाम हस्तान्तरण चाहा गया है। उक्त भूखण्ड की सीमाएं निम्नानुसार है-

पूर्व : 40 फीट चौडा रास्ता | पश्चिम : साकेत विहार

उत्तर : भूखण्ड संख्या ए-06 में से विखंडित भूखण्ड | दक्षिण : भूखण्ड सं. ए-05

अतः उक्त प्रकरण में किसी भी व्यक्ति / संस्था को किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो लिखित में सूचना प्रकाशन के 07 दिवस में प्रस्तुत करे बाद किसी प्रकार की कोई आपत्ति/ऐतराज मान्य नही होगा। बाद मियाद किसी भी आपत्ति पर विचार नहीं किया जायेगा।

प्रभारी नगर परिषद किशनगढ

अजमेर विकास प्राधिकरण,अजमेर

-आम सूचना-

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि प्राधिकरण की हरिभाऊ उपाध्याय नगर मुख्य योजना के आवासीय भूखंड संख्या बी 62 क्षेत्रफल 90 वर्ग मीटर के अंतरिति श्री चित्रेश वैद पुत्र श्री सुशील कुमार वैद निवासी अजमेर की मृत्यु दिनांक 30.05.2023 को होने पर मृत्यु प्रमाण पत्र व सजरा रिपोर्ट संलग्न कर मृतक के वारिसों क्रमशः सुश्री हर्षा जैन पुत्री एवं श्री कार्तिक जैन पुत्र श्री चित्रेश वैद निवासी अजमेर द्वारा अपने सह हिस्सेदार श्रीमती कुशाल वैद पत्नी स्वर्गीय श्री चित्रेश वैद निवासी बी 62 हरिभाऊ उपाध्याय नगर मुख्य अजमेर के पक्ष में निष्पादित पंजीकृत हक त्याग पत्र दिनांक 11.7.2025 के आधार पर नामांतरण हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। उक्त नामांतरण किये जाने के संबंध में किसी को आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के भीतर आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज करावें। उक्त नियत अवधि पश्चात कोई आपत्ति स्वीकार योग्य नहीं होगी व आवेदकों के नाम नामांतरण की कार्यवाही की जा सकेगी। - योजना प्रभारी,अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

कार्यालय नगर परिषद किशनगढ जिला (अजमेर) राज

क्रमांक : .न.प.कि./कृषि भूमि नियमन/2025/757 **आम सूचना** दिनांक : 19/06/2025

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि नगर परिषद किशनगढ़ में राजस्व ग्राम मदनगंज के खसरा 304/3 का भूखण्ड संख्या बी-11 का पार्ट का कुल क्षेत्रफल 166.66 वर्गगज का आवासीय प्रयोजनार्थ पट्टा चाहने हेतु कृषि भूमि नियमन के तहत आवेदन प्रस्तुत किया है। उक्त आवेदित भूखण्ड नियमन में संबंधित किसी व्यक्ति/संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस सूचना के प्रकाशन की दिनांक से 07 दिवस में इस कार्यालय को लिखित में आपत्तियां/मय साक्ष्य/विवरण सहित कार्यालय समय में दर्ज करावें।

क्र.सं.	प्रार्थी का नाम	राजस्व ग्राम का नाम एवं खसरा नं. व क्षेत्रफल	प्रस्तावित कृषि भूमि नियमन
1	श्री राज कुमार वैष्णव पुत्र श्री रतनलाल वैष्णव निवासी विद्या विहार कॉलोनी हाउसिंग बोर्ड मदनगंज-किशनगढ़	किशनगढ़ 304/3 166.66 वर्गगज	आवासीय प्रयोजनार्थ पट्टा चाहने हेतु

आयुक्त नगर परिषद किशनगढ

कार्यालय नगर निगम अजमेर

क्रमांक : .न.नि.अ/भवन/25-26/169 **आपत्ति सूचना** दिनांक : 15.07.25

श्री सुनील ढाबरिया पुत्र श्री सुरेन्द्र ढाबरिया निवासी ए-5 दादा भाई कॉलोनी एस.बी.आई. बैंक के पीछे नसीराबाद रोड अजमेर द्वारा एक भूखण्ड ए.एम.सी. नं. 355/7 390/40 का एक भाग है जो वाके मोती कटला अजमेर में स्थित है जिसका क्षेत्रफल 163.46 व.मी. है। भूमि के वर्तमान मास्टर प्लान 2033 के अनुसार व्यवसायिक मानचित्र स्वीकृति हेतु निर्धारित प्रपत्र में इस कार्यालय आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है। प्रस्तावित भू-भाग की सीमाएं निम्नानुसार है।

पूर्व : इसी जायदाद का भाग | पश्चिम : खुला चौक व सम्पत्ति श्री उदयमल जी की

उत्तर : सम्पत्ति उदयमल जी की | दक्षिण : शेष भाग जायदाद विक्रेता की है।

अतः जरिए इस सूचना के पूर्व सर्व साधारण को सूचित किया जाता हैं कि किसी भी व्यक्ति / संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो इस सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर-अन्दर किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय समय में ठोस दस्तावेजों सहित अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता हैं। बाद मियाद किसी भी आपत्ति पर विचार नहीं किया जायेगा। उपायुक्त नगर निगम, अजमेर

कार्यालय नगर परिषद, पुष्कर जिला अजमेर राजस्थान

क्रमांक : .न.प.पु./भूमि 2025/166 **उजरदारी सूचना** दिनांक : 15/07/2025

निम्न आवेदक ने अपनी वसीयत/क्रयशुदा/बख्शीसशुदा सम्पति के नामान्तरण हेतु नगर परिषद पुष्कर में आवेदन किया है जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था इत्यादि को उक्त कार्यवाही में कोई आपति हो तो अपनी आपति विज्ञप्ति प्रकाशन के 7 दिवस के अंदर ठोस सबूत मय दस्तावेज के आधार पर नगर परिषद पुष्कर के कार्यालय में प्रस्तुत कर सकते हैं। बाद मियाद कोई आपति मान्य नहीं होगी एवं परिषद द्वारा अग्रिम कार्यवाही प्रस्तावित कर दी जायेगी।

कं.सं.	आवेदक का नाम मय पिता/पिता	स्थान	चतुर्थ सीमा	
1	श्रीमती अरूणा पाराशर पत्नि श्री सुमित पाराशर	प्लॉट नं. 73 क्षेत्रफल 166.66 वर्गगज, ब्रह्मा विहार कॉलोनी बासेली पुष्कर	पूर्व-प्लॉट सं. 74 पश्चिम- प्लॉट सं. 72	उत्तर- प्लॉट सं. 75 व 71 दक्षिण- रास्ता

आयुक्त नगर परिषद पुष्कर

कार्यालय नगर परिषद किशनगढ जिला (अजमेर) राज

क्रमांक : .न.प.कि./नाम हस्तान्तरण/2025/1748 **आम सूचना** दिनांक : 14/07/2025

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्व ग्राम मदनगंज के खसरा संख्या 645/2 पर स्थित 'जयदीप विहार ए' आवासीय (भूखण्ड सं . 05 क्षेत्रफल 166.66 वर्गगज) पर श्री पवन कुमार जैन पुत्र श्री बच्छराज जैन ने आवेदन प्रस्तुत कर नाम हस्तान्तरण चाहा गया है। उक्त भूखण्ड की सीमाएं निम्नानुसार है-

पूर्व : 40 फीट चौडा रास्ता | पश्चिम : साकेत विहार

उत्तर : भूखण्ड संख्या ए-06 | दक्षिण : 30 फीट चौडा रास्ता

अतः उक्त प्रकरण में किसी भी व्यक्ति / संस्था को किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो लिखित में सूचना प्रकाशन के 07 दिवस में प्रस्तुत करे बाद किसी प्रकार की कोई आपत्ति/ऐतराज मान्य नही होगा। बाद मियाद किसी भी आपत्ति पर विचार नहीं किया जायेगा। प्रभारी नगर परिषद किशनगढ

कार्यालय नगर निगम अजमेर

क्रमांक : योजना/2025-26/ सार्वजनिक सूचना दिनांक :

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती लीला देवी पत्नी श्री प्रकाश चन्द निवासी ए-32 लक्ष्मण चौक, जादूगर अजमेर के द्वारा नगर निगम की आनासागर सर्क्यूलर रोड योजना के आवासीय भूखण्ड संख्या एच-9 क्षेत्रफल 328 वर्गगज को अपने नाम से नामान्तरण करवाये जाने बाबत दस्तावेज संलग्न कर आवेदन सं. LSG/AJMER/MUT/2025-26/138608 दिनांक 08.07.2025 को नामान्तरण हेतु ऑनलाईन आवेदन प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेजों के अनुसार उक्त भूखण्ड मूल आवंटी श्री प्रकाश चन्द पुत्र श्री रमेशचन्द के नाम से दर्ज है जिसकी लीज डीड दिनांक 29.05.2004 संलग्न किया गया है। श्री प्रकाश चन्द का स्वर्गवास दिनांक 02.01.2012 को हो चुका है। सजरा प्रमाण पत्र के आधार पर श्रीमती लीला देवी (पत्नी) श्री अमित कुमार (पुत्र), श्री आशीष कुमार ममोदोनिया (पुत्र) एवं श्री अभिषेक महावर(पुत्र) विधिक वारिस है। उपरोक्त वारिसों ने जरिये पंजीकृत हकत्याग पत्र दिनांक 03.12.2024 द्वारा अपने सहहिस्सेदार श्रीमती लीला देवी के पक्ष में हकत्याग पत्र निष्पादित किया गया है। उक्त प्रकरण का निष्पादन राजस्थान नगर पालिका अधिनियम 2009 की धारा 116 के तहत आवेदित है जिसका निष्पादन धारा 118 के तहत प्रक्रियाधीन किया गया है। इस संबंध में सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आपत्ति प्रकाशन के 07 कार्य दिवस के लिए आवेदन के साथ प्रस्तुत दस्तावेजों को अजमेर नगर निगम कार्यालय की योजना शाखा में देखने/पढ़ने के लिए खुला रखा गया है इस अवधि में किसी भी हितबद्ध व्यक्ति/आम खास को कोई आपत्ति उज्र हो तो सूचना के प्रकाशन के 07 कार्य दिवस में मय पुख्ता दस्तावेजों के साथ अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है बाद मियाद नियमानुसार प्रकरण का निस्तारण कर दिया जावेगा। (कीर्ति कुमावत), उपायुक्त नगर निगम, अजमेर

कार्यालय नगरपालिका बिजयनगर जिला ब्यावर राजस्थान

क्रमांक-न.पा.बि./निर्माण.स्वी./2025/1837 आम सूचना दिनांक:16.07.2025

सर्वसाधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि निम्नांकित मकान निर्माण हेतु निम्न भवन निर्माण पत्रावली प्राप्त हुई है, अगर किसी को आपत्ति/उज्र हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 07 दिवस में मय सबूत के अधेहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं, बाद मियाद, गुजरने पर कोई उज्र/आपत्ति मान्य नहीं होगी-

भवन निर्माण

फाईल नं.	आवेदक नाम	भूखण्ड का विवरण	भूखण्ड का माप	प्रयोजनार्थ
57	पुष्पा शर्मा पुत्र रामप्रसाद शर्मा	जैन कॉलोनी बिजयनगर ख.सं. 306 से 311 व 319 से 322 भू.सं. 86	125.40 SQ.MTR	आवासीय
58	मन्जू पारिक पत्निश्यामलाल पारीक	वैशालीनगर राजस्व ग्राम बरल द्वितीय ख.सं. 39 से 45,46/1,47/1,50/1 भू.सं. 7,8, 19, 20 का प्रा.नं. ए-3	55.74 SQ.MTR	आवासीय
59	पदमसिंह पुत्र कान्तिलाल मुणोत	वर्धमान सागर बरल द्वितीय ख.सं. 2561/1184 व 2604/2560 भू.सं. 15 का 1/2 उत्तरी हिस्सा प्रा.नं.15-ए	73.15 SQ.MTR	आवासीय
60	संजीव कोठारी पुत्र कन्हैयालाल कोठारी	सालासर दरबार सिटी ख.सं. 63/1 भू. सं. 172 का उत्तरी हिस्सा व 173 दक्षिणी हिस्सा	74.32 SQ.MTR	आवासीय
61	संजीव कोठारी पुत्र कन्हैयालाल कोठारी	सालासर दरबार सिटी ख.सं. 63/1 भू. सं. 170 का उत्तरी हिस्सा व 171 दक्षिणी हिस्सा	74.32 SQ.MTR	आवासीय

-अधिशाषी अधिकारी

कंडक्टर और एक अन्य युवक को गिरफ्तार किया

भीलवाड़ा। जिले की कारोई थाना पुलिस ने नाकेबंदी के दौरान लग्जरी बस में की जा रही शराब तस्करी का खुलासा करते हुए 4 लाख 32 हजार कीमत की शराब के साथ बस के चालक, कंडक्टर और एक अन्य युवक को गिरफ्तार किया। कारोई थाना अधिकारी सुरेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया उप तहसील कारोई के सामने नाकेबंदी कर वाहनों की जांच कर रहे थे। इस दौरान जिंग ट्रेवल बस आई जिसको रोक कर चेकिंग की गई तो बस के पीछे डिग्गी में सवारी के समान के साथ तीन बड़े ट्रॉली बैग भी मिलें।

निबंध प्रतियोगिता में मनीषा कुमारी प्रथम

ब्यावर (निसं)। डॉ. भीमराव अंबेडकर फाउंडेशन, (अम्बेडकर पीठ), सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, मूंडला, जयपुर द्वारा वर्तमान परिदृश्य में अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता विषय पर आयोजित जिला एवं राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता 2024 में ब्यावर जिले की श्री वद्धर्मान शिक्षण समिति द्वारा संचालित श्री वद्धर्मान कन्या पी.जी. महाविद्यालय की छात्राओं ने शानदार प्रदर्शन करते हुए महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया ।महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. आर.सी.लोढ़ा ने बताया कि इस प्रतियोगिता में ब्यावर जिले से केवल तीन छात्राओं का चयन हुआ जिनमे से दो छात्राएं वद्धर्मान कन्या महाविद्यालय की रही । विज्ञान संकाय की छात्रा मनीषा कुमारी ने प्रथम स्थान प्राप्त कर 5100 का पुरस्कार अर्जित किया, वही छात्रा हीना बानो ने तृतीय स्थान प्राप्त कर 2100 का पुरस्कार प्राप्त किया ।श्री वद्धर्मान शिक्षण समिति के मंत्री डॉ. नरेन्द्र पारख ने विजयी छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित की ।

संगम समूह ने पौधे व ट्री गार्ड का वितरण किया

■ पटेल स्कूल सभागार भामाशाह द्वारा जीर्णोद्धार पश्चात लोकार्पित

■ ब्यावर सेवा और सहयोग के अनूठे जज्बे का शहर : कलक्टर

■ जिले की धरोहर विकास में प्रशासन की सोच व प्रयास निखार लायेंगे : विधायक

ब्यावर (निस) भारतीय सांस्कृतिक निधी (इन्टैक) ब्यावर अध्याय के तत्वावधान में मंगलवार को राजकीय पटेल उच्च माध्यमिक विद्यालय सभागार का क्षेत्रीय विधायक शंकरसिंह रावत के मुख्य आतिथ्य तथा जिला कलक्टर कमलराम मीणा की अध्यक्षता में भामाशाह संजय गर्ग व गणपत सर्राफ (स्वर्ण गंगा तथा कनक सागर ज्वैलर्स परिवार) द्वारा कराये गये जीर्णोद्धार के बाद लोकार्पण किया गया। समारोह के विशिष्ट अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी(माध्यमिक)अजय गुप्ता एवम (प्रारम्भिक) अनिल शर्मा सहित नप राजस्व अधिकारी विकास कुमावत आमंत्रित रहे।

समारोह को संबोधित करते हुए विधायक शंकरसिंह रावत ने कहाकि ब्यावर की बसावट इसके संस्थापक कर्नल चार्ल्स डिक्सन की सुन्दर सोच तथा वास्तु शिल्प की बहुत ही गहरी सूझबूझ का प्रमाण है। ब्यावर जिले के ही टॉडगढ़ में रहकर कर्नल टॉड ने राजस्थान का इतिहास लिखा और सबसे पहले इसे राजपुताना नाम दिया। इस जिले की ऐतिहासिक महत्ता है और स्वाधीनता संग्राम में इसका भारी योगदान है। मगरे के बहादुर युवा मातृभूमि की सेवा हेतु सेना की नौकरी को प्राथमिकता से चुनते हैं। यह औद्योगिक विकास की उर्वरा भूमि है। इस जिले के विकास में प्रशासन की सकारात्मक सोच और दूरगामी दृष्टिकोण वाले निर्णय इसकी मजबूत नींव का कार्य करेंगे। विधायक ने जिला प्रशासन से शहरवासियों के आवागमन के सुगम सिटी हाइवे के निर्माण की भी जरूरत बताई और कहाकि जिले को हर लिहाज से सक्षम व समृद्ध बनाने में अधिकारियों की अच्छी भूमिका सदा याद की जायेगी। इस अवसर पर विधायक श्री रावत ने शिक्षा व सामाजिक सेवा के क्षेत्र में भामाशाह संजय गर्ग व गणपत सर्राफ परिवार को भी धन्यवाद दिया और कहाकि युवा पीढी के सपनों को साकार करने में आपके अर्जित धन का एक अंश भी काम आता है तो इससे बड़ा कोई पुण्य नहीं है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए जिला कलक्टर कमलराम मीणा ने बहुत ही प्रेरक उद्गार व्यक्त करते हुए कहाकि दान में सबसे उत्तम शिक्षा दान कहा गया है। शिक्षा के किसी भी तरह के विकास में किया गया खर्च समाज को आगे बढ़ाने पर किये निवेश की तरह है और इस योगदान का पुण्य सबसे बड़ा है। उन्होंने इन्टैक कन्वीनर के प्रयासों को भी धरोहर संरक्षण की दिशा में सराहनीय बताया। कलक्टर मीणा ने कहाकि ब्यावर के लोगों में सेवा और सहयोग का अनूठा जज्बा है। यहां परिश्रमी उद्यमी, बहादुर सैनिक, ऊर्जावान प्रतिभाएं और दूसरों की पीड़ा समझने वाले संवेदनशील लोग खूब हैं। उन्होंने कहाकि ब्यावर जिले में विकास की असीम संभावनाएँ हैं और अस्पताल, नगर परिषद, पानी, बिजली, सड़क जैसी समस्याओं को दूर करने हेतु प्रशासन पूरा चौकस है।उन्होंने आमजन से भी अपील की कि वे अपनी प्रशासन सम्बंधी दिक्कत को बेझिझक उनको बतावें, वाजिब समस्या में राहत दिलाने का पूरा प्रयास करेंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ वन्दे मातरम् गायन से किया गया। प्रिंसीपल अब्दुल हनीफ खान ने स्वागत भाषण दिया और पटेल स्कूल की जल निकासी की समस्या की ओर ध्यान दिलाया। युवा सामाजिक कार्यकर्ता प्रशान्त पाबूवाल ने स्व. शुभम गर्ग का परिचय देते हुए।

भारत सरकार

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय

दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, 5वीं मंजिल, पंडित दीनदयाल अंत्योदय भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

वर्ष 2025-26 के लिए विकलांग छात्रों (दिव्यांगजन) के लिए छात्रवृत्ति

दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग निम्नलिखित योजनाओं के तहत दिव्यांग छात्रों को छात्रवृत्ति प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है-

(i) प्री-मैट्रिक, पोस्ट-मैट्रिक, उच्च श्रेणी की शिक्षा
(ii) विकलांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय फैलोशिप (एनएफपीडब्ल्यूडी)
(iii) राष्ट्रीय विदेशी छात्रवृत्ति

2 आवेदकों के लिए निर्देशः

(i) विकलांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय फैलोशिप (एनएफपीडब्ल्यूडी) के लिए यह फैलोशिप नियमित और पूर्णकालिक एम.फिल./पीएचडी पाठ्यक्रम करने वाले उम्मीदवारों को प्रदान की जाती है। छात्रों को फैलोशिप प्रदान करने के लिए चयन यूजीसी राष्ट्रीय में प्राप्त अंकों/मेरिट के आधार पर किया जाएगा। पात्रता परीक्षा (यूजीसी-नेट) और यूजीसी वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (यूजीसी-सीएसआईआर) परीक्षाएं राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) द्वारा जून और दिसम्बर चक्रों में आयोजित की जाती है। मेरिट सूची एनटीए द्वारा अखिल भारतीय आधार पर बेंचमार्क विकलांगता की श्रेणी से संबंधित पात्र उम्मीदवारों में से तैयार की जाएगी, जिन्होंने जेआरएफ और नेट दोनों के लिए आवेदन किया था, लेकिन केवल नेट के लिए अर्हता प्राप्त की। पात्र उम्मीदवारों को अंतिम पुरस्कार पत्र दिए जाते है और अन्य आवश्यक दस्तावेजों के साथ इच्छाशक्ति को निर्धारित समय सीमा के भीतर जमा करने का अनुरोध किया जाता है।

(ii) राष्ट्रीय प्रवासी छात्रवृत्ति योजना के लिए आवेदन ऑफलाइन प्राप्त किए जाते हैं।

(iii) आवदकों को सलाह दी जाती है कि वे प्री-मैट्रिक, पोस्ट मैट्रिक और टॉप क्लास शिक्षा योजनाओं के लिए राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल की वेबसाइट www.scholarships.gov.in (साइट का लिंग www.depwd.gov.in पर भी उपलब्ध है) या राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल के मोबाइल ऐप पर ऑनलाइन आवेदन करें।

(iv) पात्रता मानदंड और आवेदन भरने के निर्देश सहित योजनाओं का विवरण www.depwd.gov.in पर उपलब्ध है।

(v) आवेदकों को सलाह दी जाती है कि वे छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करते समय सही जानकारी प्रदान करें।

3. आवेदन की समय-सीमा-
(i) राष्ट्रीय विदेशी छात्रवृत्ति के लिए आवेदन पूरे वर्ष ऑफलाइन प्राप्त किए जाते हैं।
(ii) राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल नीचे दिए गए विवरण के अनुसार छात्रवृत्ति योजनाओं के लिए आवेदन करने हेतु छात्रों के पंजीकरण के लिए खुला है-

राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल पर ऑनलाईन आवेदन जमा करने की तिथि।	(i) प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति	उद्घाटन तिथि 25.06.2025 अंतिम तिथि 31.08.2025
	(ii) पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति (iii) शीर्ष श्रेणी छात्रवृत्ति	उद्घाटन तिथि 25.06.2025 समापन तिथि 31.10.2025

नोट-प्री-मैट्रिक, पोस्ट-मैट्रिक और टॉप क्लास योजनाओं के स्लॉट में नए और नवीनीकरण दोनों मामले शामिल है। सभी नवीनीकरण मामलों के निपटान के बाद बचे हुए स्लॉट के लिए ही नए मामलों पर विचार किया जाएगा। इस प्रकार, वर्ष में स्लॉट की निश्चित संख्या के कारण, केवल पात्रता मानदंड पूरा करने पर ही छात्रवृत्ति का लाभ नहीं मिलेगा।

4 पात्रता मानदंड-

i छात्रवृत्तियाँ भारतीय नागरिकों के लिए खुली है।

ii बेंचमार्क विकलागता वाला व्यक्ति अर्थात 40 प्रतिशत से कम विकलांगता नहीं हानी चाहिए, तथा सक्षम चिकित्सा प्राधिकारी द्वारा जारी विकलांगता प्रमाण पत्र होना चाहिए।

iii किसी भी कक्षा में अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति केवल एक वर्ष के लिए उपलब्ध होगी। यदि किसी छात्र को एक कक्षा दोहरानी पड़ती है, तो उसे दूसरे (या उसके बाद के) वर्ष के लिए छात्रवृत्ति नहीं मिलेगी।

(iv) इस योजना के अंतर्गत छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्र को कोई अन्य छात्रवृत्ति/वजीफा नहीं मिलेगा। इस योजना के अतर्गत छात्र को कोई अन्य छात्रवृत्ति/वजीफा स्वीकार करने की तिथि से कोई छात्रवृत्ति नहीं दी जाएगी।

किसी भी छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत लाभ प्राप्त करने के लिए विकलागता प्रमाण पत्र के साथ विशिष्ट विकलांगता पहचान (यूडीआईडी) अनिवार्य है।

(vi) छात्रवृत्ति का लाभ उठाने के लिए आवेदकों को आधार आधारित बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण से गुजरना पड़ सकता है।

(vii) राष्ट्रीय विदेश के लिए, आवेदक के पास प्रासंगिक मास्टर डिग्री या बैचलर डिग्री में पचपन प्रतिशत (55%) अंक या समकक्ष ग्रेड होना चाहिए।

CBC 38117/11/0008/2526

मुझे हमेशा से मोटरसाइकिल और ऑफ-रोडिंग का शौक रहा है। जब मैंने देखा कि आईएसआरएल विश्वस्तरीय प्रतिभाओं को एक साथ ला रहा है, घरेलू एथलीटों का समर्थन कर रहा है। मैं इसका हिस्सा बनना चाहता हूं।
- सलमान खान

बॉलीवुड स्टार, आईएसआरएल के दूसरे सीजन के अनावरण पर।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

सुनील छेत्री

भारतीय फुटबॉल टीम के स्टार खिलाड़ी और कप्तान सुनील छेत्री ने भारतीय फुटबॉल की वर्तमान स्थिति पर चिंता जताई है। हालांकि, उन्हें उसमें सुधार की उम्मीद भी दिख रही है। बता दें कि, शीर्ष स्तर के फुटबॉल टूर्नामेंट इंडियन सुपर लीग यानी को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित किए जाने से खेल जगत चिंतित, आहत और डरा हुआ है। लीग में बेंगलुरु एफसी की ओर से खेलने वाले छेत्री ने कहा कि, उन्हें देश में इस खेल के भविष्य को लेकर आशंकाएं व्यक्त करने वाले फोन कॉल और संदेशों की बाढ़ आ गई है।

क्या आप जानते हैं ?... रंजीता ने वर्ष 2021 में चंडीगढ़ में आयोजित ओपन नेशनल जूडो टूर्नामेंट में 40 किलोग्राम वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए अपनी खेल यात्रा की प्रभावशाली शुरुआत की।

पंत का रन आउट और करुण का आउट होना भारत की हार के दो अहम पल रहे : शास्त्री

लंदन, 16 जुलाई। लॉर्ड्स में खेला गया तीसरा टेस्ट मैच इंग्लैंड और भारत के बीच एक जबरदस्त मुकाबला रहा, जिसमें ज्यादातर समय दोनों टीमों के बीच कोई ख़ास फर्क नहीं पड़ा। लेकिन आखिरकार मेजबान टीम ने बढ़त हासिल कर ली और कड़े मुकाबले में जीत हासिल की।

जोफ्रा आर्चर और बेन स्टोक्स की अगुवाई में इंग्लैंड के गेंदबाजों ने चौथे दिन के आखिरी और पांचवें दिन के शुरुआती सत्र में नाटकीय रूप से भारतीय टीम को धराशायी कर दिया और 193 रनों के लक्ष्य का पीछा कर रही भारत की टीम को 170 रनों पर समेट दिया। हालांकि आईसीसी के नंबर 1 टेस्ट ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा ने जबरदस्त वापसी की। एक रोमांचक टेस्ट मैच में, जो लगातार आगे-पीछे होता रहा, शास्त्री ने उन अहम पलों की ओर इशारा किया जिन्होंने पलड़ा इंग्लैंड के पक्ष में झुका दिया, ठीक उस समय जब भारत का पलड़ा भारी लग रहा था।

रवि शास्त्री ने आईसीसी रिव्यू के नवीनतम संस्करण में कहा, इस टेस्ट मैच में मेरे लिए टर्निंग पॉइंट, सबसे पहले, पहली पारी में ऋषभ पंत का आउट होना था। बेन स्टोक्स, लंच के समय दाहिने छोर पर हिट करने और उसे सफलतापूर्वक आउट करने के लिए अद्भुत सूझबूझ का परिचय देते हैं। क्योंकि भारत बढ़त बना सकता था और वे ड्राइवर सीट पर थे।

भारतीय उप-कप्तान पंत 74 रन बनाकर खेल रहे थे, लेकिन स्टोक्स की शानदार फील्डिंग ने उन्हें तीसरे दिन लंच के समय ड्रेसिंग रूम वापस भेज दिया।

शास्त्री ने कहा, यह कहने के बाद, दूसरी पारी में एक बार फिर 40/1 के स्कोर पर, मुझे लगा कि करुण नायर की एकाग्रता में बहुत बड़ी चूक थी, एक सीधी गेंद, एक न चलने वाली गेंद, को छोड़ देना और इंग्लैंड के लिए रास्ता खोल देना। मुझे लगता है कि उस आउट होने के समय ने स्थिति बदल दी।

उन्होंने कहा, क्योंकि आपने देखा होगा कि जब सिराज ने बल्लेबाजी की, जब बुमराह ने बल्लेबाजी की, जब जडेजा ने बल्लेबाजी की, एक बार जब गेंद 40 ओवर पुरानी हो गई, तो उन्होंने मुश्किल से कोई गलती की।

शास्त्री ने कहा, उनका डिफेंस मज़बूत था और लंच के समय 82 रनों का लक्ष्य हासिल करने के लिए, आपको लगता था कि अगले 10 मिनट में यह काम पूरा हो जाएगा। लेकिन उस 82 या 83 रनों को 22 रनों पर लाना एक बड़ी उपलब्धि थी। उन्होंने कहा, इससे पता चलता है कि अगर चौथे दिन, अंत में, शीर्ष क्रम थोड़ा और मजबूत और मानसिक रूप से मजबूत होता, तो यह मैच भारत का होता। शास्त्री का मानना है कि मैच के कुछ चरणों में भारत शीर्ष पर था, लेकिन इंग्लैंड को जरूरी मौकों का फायदा उठाने के लिए पूरा श्रेय दिया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा, इंग्लैंड की तारीफ करनी होगी। जब हालात मुश्किल हुए, तो उन्होंने उन मौकों का पूरा फायदा उठाया। और जब उन्हें कोई रास्ता दिखाई दिया, तो उन्होंने उसे पूरी तरह से तोड़ दिया। उन्होंने कहा, उस पिच पर मुश्किल से ही कुछ था, और अगर आपने पिछले दिन दो विकेट कम खोए होते, तो मुझे लगता है कि भारत उस लक्ष्य का पीछा कर लेता। लॉर्ड्स टेस्ट एक क्लासिक मैच था, जिसमें दोनों टीमों ने पहली पारी में 387 रन बनाए थे, लेकिन चौथे दिन वाशिंगटन सुंदर की चार विकेट की शानदार गेंदबाजी ने इंग्लैंड को 192 रन पर ढेर कर दिया।

शास्त्री ने 2021 में उसी मैदान पर पिछली बार भारत की रोमांचक जीत से तुलना की, जब वह उस समय मुख्य कोच थे। उन्होंने कहा, इसने मुझे 2021 के टेस्ट मैच की बहुत याद दिला दी। सिर्फ उस मौके पर भारत ने पहले बल्लेबाजी की थी। स्कोरलाइन बहुत समान थी, 300, 300 और फिर दूसरी पारी में पतन। उस समय भारत जीता था। इस बार इंग्लैंड जीता।

शास्त्री ने कहा, लेकिन यह एक रोमांचक सीरीज है और दो और मैच बाकी हैं। कुछ भी हो सकता है। भारत तुरंत वापसी कर सकता है और अगर ऐसा होता है, तो ओवल (अंतिम टेस्ट) एक रोमांचक मुकाबला होगा। सीरीज के पंद्रह दिन रोमांचक रहे हैं। और कई बार, मुझे लगता है कि भारत 3-0 से आगे हो सकता था। थोड़ी सी किस्मत के साथ, भारत 3-0 से आगे हो सकता था।

शास्त्री ने इंग्लैंड के कप्तान की अथक मेहनत की तारीफ की, जिससे उन्हें तीन बड़े विकेट मिले। शास्त्री ने कहा, स्टोक्स जब ये स्पैल फेंक रहे थे, तो मुझे पता था कि एजबस्टन में कुछ होने वाला है क्योंकि उनके पास कुछ खास था। शास्त्री ने कहा, वह लॉर्ड्स के लिए जोश से भरे थे और उन्होंने आखिरी दिन यह कर दिखाया। आठ ओवर, नौ ओवर के स्पैल। एक समय तो इंग्लैंड के लिए जीत हासिल करने के लिए अंत में 10 ओवर ही काफी थे। अब दोनों टीमें पांच मैचों की आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप सीरीज के चौथे मुकाबले के लिए मैनचेस्टर रवाना होंगी, जहां इंग्लैंड 2-1 से आगे है।

भारत की अंडर-19 और इंग्लैंड के बीच खेला गया पहला यूथ टेस्ट रहा ड्रॉ

बेकेनहम, 16 जुलाई। हमजा शेख (112) की शतकीय और राल्फी एल्बर्ट और जैक होम की जूझारू पारियों की बदौलत इंग्लैंड की अंडर-19 टीम भारत के खिलाफ खेले गये पहले यूथ टेस्ट मैच को आखिरी दिन ड्रॉ कराने में सफल रही। 350 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंग्लैंड मैच के आखिरी दिन मंगलवार को दूसरी पारी में सात विकेट पर 270 रन ही बना सकी। भारत की अंडर-19 टीम ने दूसरी पारी में विहान मल्होत्रा के (63) और आरएस अम्ब्रिश के (53) रनों की बदौलत इंग्लैंड को 63 ओवर में 350 रनों का लक्ष्य दिया था। आर्ची वॉन ने इंग्लैंड के लिए 84 रन देकर छह विकेट लिए।

इंग्लैंड, तीन विकेट जल्दी गंवाने के बाद हमजा शेख और बेन मेयस के बीच 119 रनों की साझेदारी हुई। मेयस 51 रन बनाकर आउट हुए। वहीं शेख 112 रनों की पारी खेलकर रनआउट हुये। जब रियू 50 रन बनाने के बाद आउट हुए तो भारत को जीत की उम्मीद जगी लेकिन अंत में राल्फी एल्बर्ट और जैक होम ने 11.5 ओवर तक बल्लेबाजी करते हुए ड्रॉ सुनिश्चित किया।

इससे पहले भारत ने आखिरी दिन की शुरुआत 229 रनों की बढ़त और सात

विकेट हाथ में के साथ की। जहां मल्होत्रा 34 और अभिज्ञान कुंडु क्रीज पर थे। मल्होत्रा को अपने अर्धशतक तक पहुंचने में केवल 15 मिनट लगे जब उन्होंने वॉन की गेंद पर कवर ड्राइव लगाते हुए चौका लगाया, लेकिन कुछ ही देर बाद वह रियू की गेंद पर आउट भी हो गए। बारिश के बाद जब मैच दोबारा शुरू हुआ तो रियू ने लंच से पहले भारत के दो और विकेट झटक लिये। कुंडु 11 रनों पर ग्रीन के हाथों लपके गए और राहुल कुमार हुक के प्रयास में विकेट के पीछे जेम्स मिंटो के द्वारा लपके गए। वॉन ने मोहम्मद इनान को पांच और हेनिन पटेल को रॉकी फ्लिंटॉफ के द्वारा कैच कराकर अपना पांचवां विकेट लिए। इससे लंच तक भारत का स्कोर 8 विकेट पर 209 रन था। इसके बाद भारतीय टीम 57.4 ओवर में 248 रन पर सिमट गई। अब इंग्लैंड को जीत के लिए 350 रनों का लक्ष्य मिला। दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरी इंग्लैंड की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने सलामी बल्लेबाज ए वॉन मात्र तीन रन बनाकर देवेंद्रन की गेंद पर विकेट के पीछे कैच आउट हो गए। इसके बाद जेडन डेनली ने अंम्ब्रिश को हुक करने की कोशिश की और वैभव सूर्यवंशी ने 19 रन पर बाउंड्री पर कैच पकड़ लिया। जबकि फ्लिंटॉफ ने सिंह को ड्राइव करने की कोशिश की और 11 रन पर चावड़ा ने लांग ऑन पर कैच पकड़ा। फिर भी मेयस जब सात रन पर थे तब देवेंद्रन के हाथों उन्हें जीवनदान मिला। चायकाल तक इंग्लैंड का स्कोर 3 विकेट पर 83 रन था और उस समय भी लक्ष्य का पीछा जारी था।

शेख ने सिंह की गेंद पर छक्का लगाकर अपना अर्धशतक पूरा किया, लेकिन इंग्लैंड को एक बड़ा झटका तब लगा जब दोनों बल्लेबाज विकेटकीपर छोर पर थे और भारत ने गलत स्टंप पर गेंद फेंकी, जिससे मेयस को सुरक्षित वापसी का मौक़ा मिल गया। उन्होंने एक शानदार स्वीप शॉट लगाकर अपना अर्धशतक पूरा किया। मेयर (51) अम्ब्रिश की गेंद कैच आउट हुए। रियू के आने और तुरंत आक्रामक होने के बाद, दोनों टीमों के बीच हाथ मिलाने की आशंकाएं ख़त्म हो गईं।

लॉर्ड्स में धीमी ओवर गति के लिए इंग्लैंड पर जुर्माना, डब्ल्यूटीसी अंक भी कटे

दुबई, 16 जुलाई। लॉर्ड्स टेस्ट में धीमी ओवर गति के कारण इंग्लैंड के विश्व टेस्ट चैंपियनशिप में दो अंक काटे गए हैं, साथ ही उन पर जुर्माना भी लगा है। इसकी वजह से इंग्लैंड के अब डब्ल्यूटीसी तालिका में 24 की जगह 22 हो गए हैं और उनका अंक प्रतिशत भी 66.67 से 61.11 हो गया है। इस कारण से अब वे ऑस्ट्रेलिया और श्रीलंका के बाद दूसरे से तीसरे स्थान पर खिसक गए हैं। इंग्लैंड पर मैच फीस का 10 प्रतिशत जुर्माना भी लगाया गया है। डब्ल्यूटीसी खेल शर्तों के अनुच्छेद 16.11.2 के अनुसार, समय को ध्यान में रखने के बाद प्रत्येक ओवर के लिए एक अंक का दंड दिया जाता है। इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने अपनी गलती मानी है, जिसके बाद कोई आधिकारिक सुनवाई की जरूरत नहीं पड़ी। तीसरे टेस्ट को जीतकर इंग्लैंड ने सीरीज में 2-1 की बढ़त बना ली। यह एक उच्च दबाव और रोमांच वाला मैच रहा, जिसमें खिलाड़ियों के बीच गर्मागर्मी भी देखी गई। व्यक्तिगत प्रदर्शन में जोफ्रा आर्चर का सबसे तेज स्पैल, जो रूट और केएल राहुल का शतक और जसप्रीत बुमराह का पांच विकेट शामिल रहा। मैच की तीव्रता जल्द ही बढ़ गई जब दोनों टीमें पहली पारी में 387 के समान स्कोर पर रह गई, जिससे टेस्ट दूसरी पारी में भी बराबरी पर आ गया।

जडेजा इंग्लैंड में 1000 रन पूरे करने के करीब

लंदन, 16 जुलाई। दुनिया के नंबर एक आलराउंडर भारत के रवींद्र जडेजा इंग्लैंड में 1000 रन पूरा करने के करीब पहुंच गए हैं। जडेजा ने लॉर्ड्स में इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे टेस्ट में भारत की दूसरी पारी में नाबाद 61 रन बनाये लेकिन भारत यह मुकाबला 22 रन से हार गया। जडेजा का यह लगातार चौथा अर्धशतक था। उन्होंने बर्मिंघम और लॉर्ड्स दोनों में जुड़वां फिफ्टी लगाईं। उनसे पहले इंग्लैंड में लगातार चार 50 स्कोर बनाने वाले केवल दो भारतीय बल्लेबाज हैं - सौरव गांगुली (2002) और ऋषभ पंत (2022 और 2025)। लॉर्ड्स में आखिरी दिन उनकी नाबाद 61 रन की पारी टेस्ट की चौथी पारी

में उनका पहला 50 स्कोर था।

इंग्लैंड में जडेजा ने टेस्ट में नंबर 6 या उससे नीचे बल्लेबाजी करते हुए 942 रन बनाए हैं। इस लिस्ट में मेहमान बल्लेबाजों में उनसे ज्यादा रन सिर्फ गैरी सोबर्स (1097) ने बनाए हैं। इंग्लैंड में उनके नाम एक शतक और सात अर्धशतक हैं, गैरी सोबर्स (9) के बाद दूसरे स्थान पर हैं।

भारत ने सोमवार को सातवां विकेट गिरने के बाद जितनी गेंदें (301) खेलीं। यह टेस्ट की चौथी पारी में आखिरी तीन साझेदारियों में खेली गई सबसे अधिक गेंदें हैं। इससे पहले रिकॉर्ड 294 गेंदों का था, जो इंग्लैंड ने 2015 में दुबई में पाकिस्तान के खिलाफ बनाया था (नोट: गेंदों का डेटा 1998 से उपलब्ध है)। जडेजा और जसप्रीत बुमराह ने 22 ओवर तक साझेदारी निभाई। यह पिछले दस वर्षों में भारत के लिए 9वें या 10वें विकेट के लिए सबसे लंबी साझेदारी है।

कर्नाटक हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को आरसीबी भगदड़ रिपोर्ट सार्वजनिक करने का आदेश दिया

बेंगलुरु, 16 जुलाई। कर्नाटक हाई कोर्ट ने राज्य सरकार को आदेश दिया है कि वह चार जून को हुई भगदड़ की घटना पर अपनी स्थिति रिपोर्ट सार्वजनिक करे, जिसने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की एम चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर हुई आईपीएल जीत के जश्न को गहरा धक्का पहुंचाया था। इस त्रासदी में 11 लोगों की मौत हुई थी और 50 से अधिक लोग घायल हुए थे। राज्य सरकार ने हाई कोर्ट से इस रिपोर्ट को गोपनीय रखने का अनुरोध किया था, लेकिन कोर्ट ने सोमवार, 14 जुलाई को स्पष्ट रूप से कहा कि इस तरह की गोपनीयता के लिए कोई कानूनी आधार नहीं है, और ये केवल सरकार की दृष्टि में तथ्यों की प्रस्तुति है। कोर्ट ने सरकार को यह रिपोर्ट मामले के अन्य पक्षों - आरसीबी, कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ (केएससीए) और डीएनए एंटरटेनमेंट नेटवर्क्स, जो फ्रेंचाइजी के इवेंट पार्टनर हैं - को सौंपने का भी निर्देश दिया है। इस बीच फ्रेंचाइजी एक विस्तृत सीआईडी जांच और केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण (सीएटी) की दो सदस्यीय पीठ की रिपोर्ट का इंतजार कर रही है। यह पीठ सरकारी और सार्वजनिक सेवकों से जुड़े मामलों की जांच करने वाला अर्ध-न्यायिक निकाय है। आरसीबी और डीएनए के वरिष्ठ अधिकारियों ने पिछले एक महीने में अपने बयान जमा कराए हैं। फैसले की कोई तय तारीख अभी सार्वजनिक नहीं की गई है।

लुंगी ने डेन स्टेन को पछाड़ा, ऐसा करने वाले द. अफ्रीका के तीसरे गेंदबाज बने

हरारे, 16 जुलाई। साउथ अफ्रीका के तेज गेंदबाज लुंगी एनगिडी ने हमवतन दिग्गज डेन स्टेन को पछाड़ दिया है। वह साउथ अफ्रीका के लिए सबसे ज्यादा टी20 विकेट लेने वाले तीसरे गेंदबाज बन गए हैं। न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले टी20 मैच के दौरान एनगिडी ने ये खास उपलब्धि हासिल की। जिम्बाब्वे, साउथ अफ्रीका और न्यूजीलैंड के बीच त्रिकोणीय टी20 सीरीज आयोजित की गई है। हरारे क्रिकेट ग्राउंड पर पहले मुकाबले में न्यूजीलैंड और साउथ अफ्रीका आमने-सामने हैं। साउथ अफ्रीका ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। लुंगी एनगिडी ने टिम सीफर्ट का विकेट लेकर एक खास उपलब्धि हासिल की। एनगिडी, डेल स्टेन को पीछे छोड़ते हुए टी20 सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले तीसरे साउथ अफ्रीकी गेंदबाज बन गए हैं। पूर्व अफ्रीकी तेज गेंदबाज डेल स्टेन ने 47 टी20 मैच में 64 विकेट लिए थे।

लक्ष्य सेन, सात्विक-चिराग जापान ओपन के राउंड-ऑफ-16 में

टोक्यो, 16 जुलाई। लक्ष्य सेन और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी तथा चिराग शेट्टी की भारतीय जोड़ी ने बुधवार को अपने-अपने मुकाबलों में जीत दर्ज कर जापान ओपन 2025 के अगले दौर में जगह बना ली है। सेन ने संयमित प्रदर्शन करते हुए चीन के वांग झेंग जिंग को 21-11, 21-18 से हराया। सेन का दूसरे दौर में जापान के स्टार खिलाड़ी कोडाई नाराओका से मुकाबला होगा। वहीं पुरुष युगल के मुकाबले में, सात्विक और चिराग ने अपने अभियान की शानदार शुरुआत की और दक्षिण कोरिया के कांग मिन-ह्युक और की डोंग-जू की जोड़ी को 21-18, 21-10 से हराकर अंतिम 16 में प्रवेश किया। पीवी सिंधु और उन्नति हुड्डा महिला एकल ड्रॉ के पहले दौर में ही हारकर बाहर हो गईं।

विराट और रोहित अब सिर्फ वनडे मैच खेलते हुए दिखेंगे : बीसीसीआई

नई दिल्ली, 16 जुलाई। पहले टी20 और फिर टेस्ट से संन्यास के बाद अब टीम इंडिया के दो दिग्गज विराट कोहली और रोहित शर्मा अब सिर्फ वनडे मैच खेलते हुए दिखेंगे। लेकिन सवाल ये है कि, ये दोनों दिग्गज क्या अभी वनडे अंतर्राष्ट्रीय मैचों में भारत की तरफ से खेलते दिखेंगे? हालांकि, माना ये भी जा रहा है कि, दोनों का लक्ष्य 2027 का एकदिवसीय वर्ल्ड कप खेलने और भारत को फिर चैंपियन बनाने का है। फिर भी क्या वे तब तक खेल पाएंगे? ये सवाल तो बाद में आएगा, अभी तो सवाल यही है कि क्या वे वनडे में दिखेंगे इसे लेकर अब बीसीसीआई ने बड़ा अपडेट दिया है।

दरअसल, बीसीसीआई के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने विराट और रोहित के वनडे भविष्य पर अनिश्चितता के छंटे बादलों को साफ कर दिया है। शुक्ला ने न्यूज एजेंसी एएनआई से बातचीत में दो टूक कहा कि टेस्ट और टी20 से संन्यास ले चुके हैं ये दोनों दिग्गज एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैचों के लिए उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने कहा कि, मैं इसे एकदम से स्पष्ट कर देना चाहता हूं।

शुक्ला ने न्यूज एजेंसी एएनआई से बातचीत में दो टूक कहा कि टेस्ट और टी20 से संन्यास ले चुके ये दोनों दिग्गज एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैचों के लिए उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने कहा कि, मैं इसे एकदम से स्पष्ट कर देना चाहता हूं।

राजीव शुक्ला ने विराट कोहली और रोहित शर्मा को लेकर कहा कि, हमें उनकी कमी हमेशा खलेगी, वो महान बल्लेबाज हैं और हमारे लिए अच्छी बात है कि वनडे के लिए वो सब उपलब्ध हैं। उन्होंने आगे कहा कि दो टूक के बाद अब इस बात की उम्मीद बढ़ गई है कि विराट कोहली और रोहित शर्मा 2027 में दक्षिण अफ्रीका और जिम्बाब्वे में होने वाले वनडे वर्ल्ड कप में दिख सकते हैं।

फिलहाल, भारतीय टीम अभी इंग्लैंड के दौरे पर है जहां देशों के बीच 5 टेस्ट मैच की सीरीज चल रही है। 3 टेस्ट हो चुके हैं जिनमें भारत को एक में जीत और 2 में हार मिली है। सीरीज का अगला टेस्ट 23 जुलाई से मैनचेस्टर में खेला जाएगा। आखिरी और पांचवां मैच 31 जुलाई से 4 अगस्त तक खेला जाएगा।

रूट ने फिर हासिल की नंबर 1 टेस्ट बल्लेबाज रैंकिंग

दुबई, 16 जुलाई। इंग्लैंड के जो रूट ने अपने शानदार प्रदर्शन की बदौलत लॉर्ड्स में भारत पर 22 रनों की जीत के साथ आईसीसी पुरुष टेस्ट बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष स्थान हासिल कर लिया है। रूट (888 रेटिंग अंक) ने 104 और 40 रनों की पारी की बदौलत हमवतन हैरी ब्रूक (862) को पछाड़कर नंबर 1 स्थान हासिल किया, जिससे मेजबान टीम ने पांच मैचों की सीरीज में 2-1 की बढ़त बना ली। रूट का यह आठवां शीर्ष स्थान है और 34 साल की उम्र में, वह दिसंबर 2014 में 37 वर्षीय कुमार संगकारा के बाद से नंबर 1 पर पहुंचने वाले सबसे उम्रदराज बल्लेबाज हैं। ऑस्ट्रेलियाई स्टीव स्मिथ (816) भी जमैका में वेस्टइंडीज के खिलाफ कम स्कोर वाले मैच में किए गए शानदार प्रदर्शन की बदौलत शीर्ष 10 में एक स्थान ऊपर चढ़े हैं। स्मिथ ने मेहमान टीम की जीत में 48 रन बनाए, जबकि उनके साथी कैमरन ग्रीन 46 और 42 रन की पारी की बदौलत 16 स्थान की छलांग लगाकर 29वें (619) स्थान पर पहुंच गए।

न्यूजीलैंड ने दक्षिण अफ्रीका को 21 रनों से हराया

हरारे, 16 जुलाई। टिम रॉबिंसन (नाबाद 75) और बेवन जैकब्स (नाबाद 44) की शानदार पारियों के बाद जेकब डफी और मैट हेनरी (तीन-तीन विकेट) की दमदार गेंदबाजी की बदौलत न्यूजीलैंड ने त्रिकोणीय श्रृंखला के दूसरे टी-20 मुकाबले में बुधवार को दक्षिण अफ्रीका को 21 रनों से हरा दिया।

176 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी दक्षिण अफ्रीका के लिए लुआन-ड्रे प्रेटोरियस और रीजा हेंड्रिक्स की सलामी जोड़ी ने पहले विकेट के लिए 34 रन जोड़े। चौथे ओवर में मैट हेनरी ने लुआन-ड्रे प्रेटोरियस 17 गेंदों में (27) को आउटकर न्यूजीलैंड को पहली सफलता दिलाई। अगले ही ओवर में जेकब डफी ने रूबिन हरमन (एक) को आउटकर पवेलियन भेज दिया। मिचेल सैंटनर ने रीजा हेंड्रिक्स (16) को बोल्ड कर दक्षिण अफ्रीका को तीसरा झटका दिया।

सेनुरन मुथुसामी सात रन बनाकर ईश सोढ़ी का शिकार बने। कप्तान रासी वान डेर डुसेन (छह) रनआउट हुये। इसके बाद 12वें ओवर में मैट हेनरी ने डेवाल्ड ब्रेविस को आउटकर न्यूजीलैंड को छठी सफलता दिलाई। डेवाल्ड ब्रेविस ने 18 गेंदों में तीन छक्के और एक चौका लगाते हुए (35) रनों की पारी खेली। 14वें ओवर की पहली गेंद

पर सोढ़ी ने कॉर्बिन बॉश (आठ) को पगबाधा आउट किया। 18वें ओवर में जेबक डफी ने जॉर्ज लिंडे (30) को कॉन्वे के हाथों कैच आउट कराकर दक्षिण अफ्रीका को आठवां झटका दिया। इसक बाद वेन मफाका (शून्य) को डफी ने चलता कर दिया। 19वें ओवर की दूसरी गेंद पर मैट हेनरी ने गेराल्ड कोएत्जी (17) को आउट कर दक्षिण अफ्रीका की पारी का 152 के स्कोर पर अंत कर दिया।

उच्च न्यायालय जयपुर में एक रिट याचिका दायर

आरसीए की तदर्थ समिति के कन्वीनर के रूप में दीनदयाल कुमावत की नियुक्ति पूरी तरह अवैध : चौधरी

जयपुर, 16 जुलाई। जिला क्रिकेट संघ सवाई माधोपुर की विधिवत निर्वाचित कार्यकारिणी अध्यक्ष रामराज चौधरी, सचिव डॉ. सुमीत गर्ग, कोषाध्यक्ष कमलेश गुर्जर द्वारा उच्च न्यायालय, जयपुर में एक रिट याचिका दायर की गई है। इस याचिका में यह अपील की गई है कि राजस्थान क्रिकेट संघ की तदर्थ समिति के कन्वीनर के रूप में दीनदयाल कुमावत की नियुक्ति पूरी तरह अवैध, असंवैधानिक और न्यायालय के पूर्व आदेशों के प्रतिकूल है, क्योंकि दीनदयाल कुमावत नाम का व्यक्ति वर्तमान में जिला क्रिकेट संघ सवाई माधोपुर की विधिक मान्यता प्राप्त कार्यकारिणी का प्राइमरी सदस्य भी नहीं है। जिला क्रिकेट संघ सवाई माधोपुर की वैध कार्यकारिणी को पूर्व में न्यायालय व अपीलीय प्राधिकारी द्वारा अंतिम आदेशों में मान्यता दी जा चुकी है, जिन पर अब तक किसी भी उच्च न्यायालय द्वारा कोई रोक नहीं लगाई गई है। ऐसे व्यक्ति को कन्वीनर नियुक्त करना न्यायालयों के आदेशों की अवमानना और खेल संघों की स्वायत्तता पर सीधा प्रहार है। अत: रिट याचिका में उच्च न्यायालय से अनुरोध किया गया है कि दीनदयाल कुमावत की नियुक्ति को तुरंत प्रभाव से निरस्त किया जाए, जिससे जिला क्रिकेट संघ सवाई माधोपुर की वैधानिक और लोकतांत्रिक ढंग से निर्वाचित कार्यकारिणी के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप रोका जा सके। जिला क्रिकेट संघ सवाई माधोपुर यह स्पष्ट करता है कि वह न्यायालय के आदेशों और खेल संघों की लोकतांत्रिक व्यवस्था का सम्मान करता है और किसी भी प्रकार की अवैध नियुक्ति या हस्तक्षेप का पूरी मजबूती से विरोध करता रहेगा।

वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स 2025 में भारतीय महिला बास्केटबॉल टीम का हिस्सा बनेगी

जयपुर, 16 जुलाई। राजस्थान ने बास्केटबॉल में भारत का नाम रोशन किया है। लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान, ग्वालियर की दो राजस्थानी खिलाड़ी मानवी श्रीवास्तव, जयपुर और सोनल महला, सीकर राजस्थान और महाराष्ट्र की संजना पिंटो, वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स 2025 में भारतीय महिला बास्केटबॉल टीम का हिस्सा बनेंगी। यह प्रतियोगिता 16 जुलाई से 27 जुलाई तक जर्मनी के राइन-रुहर में आयोजित हो रही है। तीनों खिलाड़ी आज जर्मनी के लिए रवाना हुईं, भारत का प्रतिनिधित्व करने का सपना लिए हुए। राजस्थान की दो बेटियों का चयन, राज्य के लिए गर्व की बात है और यह दर्शाता है कि प्रदेश खेलों, विशेषकर बास्केटबॉल, में नई ऊंचाइयों को छू रहा है। यह सफलता खिलाड़ियों की मेहनत और एलएनआईपीई के उत्कृष्ट प्रशिक्षण का परिणाम है।

आरसीए एडहॉक कमेटी मीटिंग आज आयोजित होगी

जयपुर 16 जुलाई। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत ने बताया कि राजस्थान क्रिकेट संघ एडहॉक कमेटी मीटिंग कल दिनांक 17 जुलाई को दोपहर 4 बजे आरसीए ऑफिस, आरसीए अकादमी, सवाई मान सिंह स्टेडियम पर आयोजित की जाएगी।

ब्रिटेन की तारा पर डोपिंग मामले में 4 साल का प्रतिबंध

लंदन, 16 जुलाई। खेल पंचाट ने ब्रिटेन की महिला टेनिस खिलाड़ी तारा मूर पर डोपिंग अपराध के लिए चार साल का प्रतिबंध लगाया है। खेल पंचाट न्यायालय (कैस) ने अंतरराष्ट्रीय टेनिस इंटीग्रिटी एजेंसी (आईटीआईए) की अपील पर सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि प्रदर्शन बढ़ाने वाली दवाओं के सेवन के लिए मूर को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए। मूर पर चार साल का प्रतिबंध तत्काल प्रभाव से लागू होगा।

एसएमएस स्टेडियम में डोपिंग रोधी शिक्षा एवं जागरूकता सेमीनार 18 को नाडा के विकास त्यागी और ओपी शर्मा करेंगे खिलाड़ियों को जागरूक

जयपुर, 16 जुलाई। राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद द्वारा डोपिंग रोधी शिक्षा एवं जागरूक्ता सेमीनार का आयोजन 18 जुलाई को प्रात: 11 बजे से सवाई मानसिंह इंडोर स्टेडियम में किया जायेगा। राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के सचिव राजेन्द्र सिंह सिसोदिया ने बताया कि राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजेंसी (नाडा) ने खेल परिषद के प्रशिक्षको और खिलाडियों के लिए शुक्रवार को एक सेमीनार का आयोजन किया है। इस सेमीनार का मुख्य उद्देश्य खेलों में स्वच्छ वातावरण तैयार करने और डोप-मुक्त वातावरण बनाना है। साथ ही शिक्षा, परीक्षण और प्रवर्तन के माध्यम से डोपिंग को रोककर खेलों की अखंडता और एथलीटों के स्वास्थ्य की रक्षा करना है। उन्होने बताया कि इन सब चीजो के दुष्प्रभावों से प्रशिक्षको व खिलाडियों को जागृत किया जायेगा।

उन्होने बताया कि इस सेमीनार के द्वारा खिलाडियों को नशीली दवाईओं व इंजेक्शन आदि के दुष्प्रभावें के बारे में गाईड किया जायेगा, जिससे वे आने वाले समय में इन सभी से दूर रहें। सेमीनार में नाडा के डोप कन्ट्रोल ऑफिसर कम एजुकेटर विकास त्यागी खिलाडियों व प्रशिक्षको को नाडा के बारे में बताएंगे साथ ही ओपी शर्मा, डोप कन्ट्रोल ऑफिसर कम एजुकेटर भी सेमीनार में अपने विचार व्यक्त करेगें। राजेन्द्र सिंह सिसोदिया ने बताया कि सेमीनार में एथलीटों और सभी संबंधित प्रशिक्षको, अभिभावक, फिजियोथेरेपिस्ट, टीम मैनेजर और पोषण विशेषज्ञो का भाग लेना अनिवार्य है। इसमें खेल परिषद के संविदा प्रशिक्षको सहित सभी प्रशिक्षक व संबंधित खेलो के खिलाडी भाग लेंगे।

मुख्य खेल अधिकारी व द्रोणाचार्य पुरस्कार विजेता वीरेन्द्र पूनिया ने बताया कि डोपिंग से खिलाडियों का न केवल खेल करियर प्रभावित होता है, बल्कि उनके स्वास्थ्य पर भी विपरित प्रभाव पडता है। इस लिए उन्होने एथलीटो को इन चीजो से दूर रहने की सलाह दी।

'अगर भारत, ब्राज़ील और चीन ने रुस से तेल खरीदना जारी रखा तो आर्थिक प्रतिबंध लगाए जाएंगे'

ट्रंप के बाद अब नाटो के महासचिव ने भी खुली धमकी दी

- नाटो चीफ ने पत्रकारों से कहा कि, पुतिन को फोन कर शांति वार्ता में गंभीर होने को कहें नहीं तो भारत, चीन और ब्राज़ील को इसकी उलटी मार झेलनी होगी।

वॉशिंगटन, 16 जुलाई। नाटो के महासचिव मार्क रुटे ने बुधवार, 15 जुलाई को चेतावनी दी कि अगर ब्राजील, चीन और भारत जैसे देश रूस के साथ अपना व्यापार करना जारी रखते हैं तो उन पर भी आर्थिक प्रतिबंध (सेकेंडरी सैंक्शंस के रूप में) लगाए जा सकते हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक दिन पहले ही यूक्रेन के लिए नाटो के माध्यम से नए हथियारों की घोषणा की थी और साथ में 50 दिनों में शांति समझौता नहीं होने की स्थिति में रूस से सामान खरीदने वाले देशों पर 100 प्रतिशत के सेकेंडरी टैरिफ लगाने की धमकी भी दी थी। ट्रंप के इस ऐलान के अगले दिन नाटो महासचिव अमेरिकी कांग्रेस में सीनेटरों के साथ बैठक को संबोधित कर रहे थे और यहीं पर उन्होंने ब्राजील, चीन और भारत जैसे देशों को यह धमकी दी।

रुटे ने सोमवार को राष्ट्रपति ट्रंप से मुलाकात की थी। उन्होंने बुधवार को पत्रकारों से कहा, इन तीन देशों को मेरा परामर्श, विशेष रूप से यह है कि यदि आप अभी बीजिंग में रहते हैं, या दिल्ली में हैं, या आप ब्राजील के राष्ट्रपति हैं, तो आप शायद इस पर गौर करना चाहेंगे, क्योंकि यह आपको बहुत भारी पड़ सकता है।

रुटे ने कहा, "तो कृपया व्लादिमीर पुतिन को फोन करें और उन्हें बताएं कि उन्हें शांति वार्ता के बारे में गंभीर होना होगा, नहीं तो इसकी उलटी मार ब्राजील, भारत और चीन को बड़े पैमाने पर झेलनी होगी।"

रिपब्लिकन अमेरिकी सीनेटर थॉम टिलिस ने इन कदमों की घोषणा के लिए ट्रंप की तारीफ की, लेकिन कहा कि 50 दिन की देरी उन्हें "चिंतित" करती है।

उन्होंने कहा कि उन्हें चिंता है कि पुतिन युद्ध जीतने के लिए 50 दिनों का उपयोग करने की कोशिश करेंगे, या हत्या करने और संभावित रूप से बातचीत के आधार के रूप में अधिक जमीन हथियाने के बाद शांति समझौते पर बातचीत करने के लिए बेहतर स्थिति में होंगे।

उन्होंने कहा, "इसलिए हमें आज यूक्रेन की वर्तमान स्थिति को देखना चाहिए और कहना चाहिए, चाहे आप अगले 50 दिनों में कुछ भी करें, आपका कोई फायदा होने नहीं जा रहा है।"

स्वर्ण मंदिर को लगातार तीसरे दिन बम की धमकी

अमृतसर, 16 जुलाई। अमृतसर स्थित स्वर्ण मंदिर को एक बार फिर बम से उड़ाने की धमकी मिली है। ये लगातार तीसरा दिन है, जब इस तरह की धमकी फिर दी गई है।

इस धमकी को लेकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) ने पुलिस को इसकी शिकायत दी है। कमेटी ने पुलिस से पूरे मामले की जांच करके धमकी देने वालों पर तुरंत एक्शन लिए जाने की मांग की है। एसजीपीसी के अध्यक्ष हरजिंदर सिंह धामी ने कहा कि दरबार साहिब के संबंध में लगातार धमकियाँ मिल रही हैं। बीते लंबे समय से मैं देख रहा हूं कि समूची मानवता के आस्था के केन्द्र दरबार साहिब पर समय-समय पर हमले भी हुए और इसे नुकसान भी पहुंचाया जाता रहा है। 1984 में भी बहुत बड़ा नुकसान किया गया था। 14 जुलाई से लगातार धमकियां मिल रही हैं।

- शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने पुलिस में शिकायत कर जल्द ही एक्शन लेने की मांग की है।

चाहो तो साथ आ जाओ, फड़नवीस ने उद्धव ठाकरे को दिया ऑफर

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस के इस ऑफर से महाराष्ट्र की राजनीति में खलबली मच गई है

- फड़नवीस ने कहा कि महायुति गठबंधन 2029 तक तो सत्ता में ही रहेगा।

पुणे, 16 जुलाई। महाराष्ट्र की राजनीति में एक बार फिर हलचल मच गई है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने विधानसभा में बड़ा बयान देते हुए कहा कि 2029 तक भाजपा या उनका गठबंधन विपक्ष में जाने वाला नहीं है। उन्होंने शिवसेना (उद्धव गुट) प्रमुख उद्धव ठाकरे को इशारों में सत्ता पक्ष में शामिल होने का ऑफर भी दिया। यह बयान उस वक्त आया है जब बृहन्मुंबई महानगरपालिका चुनाव नजदीक हैं और राजनीतिक समीकरण तेजी से बदल रहे हैं।

भाजपा की यह रणनीति बीएमसी चुनाव से पहले शिवसेना (उद्धव गुट) की स्थिति को कमजोर करने का प्रयास भी हो सकती है।

विधान परिषद सत्र के दौरान बोलते हुए देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि कम से कम 2029 तक हमारे विपक्ष में जाने की कोई संभावना नहीं है। भरी विधान परिषद में उन्होंने कि उद्धव जी चाहें तो इस तरफ आने के बारे में सोच सकते हैं।

कम से कम 2029 तक तो हम विपक्ष में नहीं आएंगे। इस बयान के बाद अब एक और संभावित गठबंधन की अटकलें तेज हो गई हैं। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि यह विचार एक अलग तरीके से किया जा सकता है, जिससे यह बयान और ज्यादा सियासी मायनों से भर गया है।

पिछली बार बीएमसी में शिवसेना और भाजपा के बीच कांटे की टक्कर थी। बीएमसी फिलहाल उद्धव ठाकरे गुट के नियंत्रण में है। भाजपा चाहती है कि इस बार वह बीएमसी पर कब्जा करे और इसके लिए वह सभी राजनीतिक समीकरण साधने में जुट गई है।

एसीबी केस ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

क्रमोन्नत करने के लिए जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में आवेदन किया था। अभियुक्त कनिष्ठ लेखाकार शीशराम ने मान्यता से पहले निरीक्षण करने को कहा। बाद में 3 मई, 2008 को फोन कर 8 मई को समस्त रिकॉर्ड एवं खर्चे के नाम पर छः हजार रुपए लेकर आने को कहा। एसीबी ने 12 मई, 2008 को शीशराम को पांच हजार रुपए लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया था।

दादिया में गुरुवार...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

संबंध में विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों को आमजन के लिए जरूरी सुविधाएं एवं बारिश के मौसम को ध्यान में रखते हुए उचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया।

कार्यक्रम की तैयारी के लिए जहां राज्य सरकार पूरी तरह से लगी हुई है, वहीं, उसके साथ भाजपा की ओर से भी तैयारी की जा रही है। प्रशासन द्वारा दादिया में बड़ा सभा स्थल तैयार किया गया है, जिसमें प्रदेश के करीब 1 लाख लोग शामिल होंगे। इसके लिए दादिया में रिंग रोड पर स्थित सभा स्थल में तीन डोम बनाए गए हैं। इन तीनों डोम में लगभग एक लाख लोगों के बैठने की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा सहकार उत्सव व रोजगार मेले का भी आयोजन किया जाएगा, जिसमें अलग-अलग स्टॉल लगाई जाएंगी। सभा स्थल पर एक मंच तैयार किया गया है और तीन डोम, पार्किंग एवं सारी व्यवस्थाएं की गई है।

सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक, सांसद मदन राठौड़, सीपी जोशी, मुख्य सचिव सुधांश पंत, पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा सहित, संबंधित उच्चाधिकारी मुख्यमंत्री के साथ थे।

हाईकोर्ट ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रार्थी के पक्ष में स्टे दे रखा था। वहीं, शिकायतकर्ता ने उसके खिलाफ 2022 में एफआईआर दर्ज कराई थी। पुलिस ने इस एफआईआर पर कार्रवाई करते हुए 28 मई 2025 को प्रार्थी को अचानक ही अवैध रुप से गिरफ्तार कर लिया। इस कार्रवाई से पहले पुलिस ने न तो उसे कोई नोटिस दिया और न ही गिरफ्तारी का कोई कारण बताया, जबकि सुप्रीम कोर्ट कह चुका है कि गिरफ्तारी से पहले आरोपी को नोटिस देना और इसका कारण लिखित में बताना जरूरी है। इस प्रकार प्रार्थी के संवैधानिक अधिकारों के साथ-साथ, सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का भी उल्लंघन हुआ है।

आतंकियों ने पहलगाम में पर्यटकों की हत्या करने के बाद जश्न मनाया था

एक चश्मदीद गवाह ने एनआईए को दिए बयान में कहा कि आतंकियों ने हवा में गोलियां दागी थीं

- एनआईए, जो पहलगाम हमले की जांच कर रही है, ने उक्त गवाह को "स्टार प्रोटैक्टेड" श्रेणी में रखा है।
- गवाह ने बताया कि आतंकी तीन ही थे, दो तो उनके स्थानीय मददगार थे, गवाह ने उन दोनों की पहचान की है।

श्रीनगर, 16 जुलाई। पहलगाम बैसरन में 26 निर्दोष नागरिकों की हत्या का आतंकियों ने जश्न मनाते हुए हवा में गोलियां भी दागी थीं। इसके बाद वे वहां से अपने किसी सुरक्षित ठिकाने की तरफ निकल गए।

यह जानकारी इस जघन्य कांड की जांच कर रही राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने जम्मू कश्मीर पुलिस की मदद से चिन्हित किए गए एक स्थानीय गवाह से हासिल की है। इसी गवाह ने आतंकियों के पकड़े गए दो मददगारों परवेज अहमद जोथड़ और बशीर अहमद जोथड़ को वहीं पास में एक पहाड़ी पर कुछ सामान के साथ देखा था।

आपको बता दें कि 22 अप्रैल 2025 को लश्कर-ए-तैयबा के आतंकियों ने, जिनकी संख्या पहले पांच तक बताई जा रही थी तथा अब तीन बताई जाती है, ने बैसरन पहलगाम में 25 पर्यटकों और एक स्थानीय घोड़ेवाले की हत्या की थी। इस जघन्य कांड को अंजाम देने वाले आतंकी अभी तक सुरक्षाबलों की पकड़ से दूर हैं।

एनआइए ने अभी तक इस मामले में उनके दो स्थानीय मददगारों परवेज अहमद जोथड़ और बशीर अहमद जोथड़ को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। इसके अलावा एनआइए ने एक स्थानीय नागरिक का भी पता लगाया है, जिसे आतंकियों ने बैसरन से निकलते हुए रोका था।

एनआइए से जुड़े सूत्रों के अनुसार, इस मामले में अभी तक जिन गवाहों के बयान दर्ज किए हैं, उनमें सबसे अहम यही एक स्थानीय गवाह है। एनआइए ने इसे जम्मू कश्मीर पुलिस की मदद से चिन्हित किया है। पूछताछ में इसने बताया कि मौत का नंगा नाच खेलने के बाद आतंकी जब बैसरन से निकल रहे थे तो वहीं रास्ते में उसका सामना आतंकियों से हुआ था। आतंकी तीन ही थे।

उन्होंने पहले उसे भी पर्यटक समझा, लेकिन जब उसने कहा कि वह पर्यटक नहीं, स्थानीय नागरिक है, तो पहले उन्होंने उससे उसका नाम पूछा और फिर उसे कलमा पढ़ ने को कहा। उसने अपना नाम बताया और कलमा भी पढ़ ा। इससे आतंकियों को उसके मुस्लिम व स्थानीय कश्मीरी होने का यकीन हो गया। उन्होंने उसे छोड़ दिया और फिर वहीं उसी समय हवा में ऐसे गोलियां दागी, जैसे वे किसी जीत का जश्न मना रहे हों।

उक्त गवाह के अनुसार, उसने वहीं कुछ ही दूरी पर परवेज और बशीर को भी खड़े देखा था। उनके पास कोई सामान था। वे दोनों पहले से ही आतंकियों का इंतजार कर रहे थे। उक्त गवाह के अनुसार, वह स्थानीय होने के कारण इन दोनों को अच्छी तरह से पहचानता है। उसने हमलावर आतंकियों में सुलेमान उर्फ सुलेमानी उर्फ हाशिम के शामिल होने की भी पुष्टि की है।

एनआइए ने उक्त गवाह को स्टार प्रोटेक्टिड की श्रेणी में रखा है। उसने जिस जगह आतंकियों के साथ आमना, सामना होने की जानकारी दी है, एनआइए ने वहां से कुछ चले हुए कारतूस भी बरामद किए हैं।

कांग्रेस शासन में लगे सरकारी वकीलों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नियुक्त हुए थे। याचिकाकर्ताओं के कार्यकाल को 5 अगस्त, 2024 को, नए वकीलों की नियुक्ति नहीं होने के आधार पर, बढ़ाया गया था। फिर गत 3 जुलाई को उन्हें इस पद से रिलीव कर दिया गया और उनके पद का कार्यभार दूसरे सरकारी वकीलों को दे दिया। याचिका में कहा गया कि पांच अगस्त के आदेश के बाद से अब तक परिस्थितियों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। याचिकाकर्ताओं के स्थान पर नई नियुक्ति नहीं की गई और दूसरे सरकारी वकीलों को ही अतिरिक्त कार्यभार दिया गया है। याचिका में कहा गया कि राज्य सरकार ने उन्हें राजनीतिक कारणों के चलते मनमानी से रिलीव किया है। ऐसे में रिलीव करने के आदेश को रद्द किया जाए।

मामले की सुनवाई करते हुए, एकलपीठ ने रिलीव आदेशों की क्रियान्विति पर अंतरिम रोक लगाते हुए संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया है।

'न्यायिक सेवा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

है कि इस अनिवार्यता से दिव्यांगों एवं ट्रांसजेन्डर उम्मीदवार भी नुकसान में रहेंगे, क्योंकि उन्हें अदालतों तथा लॉ चैम्बर्स में समावेशी इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी प्रभावित करेगी।

याचिका में बार काउंसिल ऑफ इंडिया पर भी सवाल उठाए गए हैं कि वह, लिटिगेशन के दौरान, छात्रों के हितों की रक्षा में विफल रही है। इसमें कहा गया है कि बीसीआई न तो उच्च फीस, न ही अनियमित कानून कॉलेजों, और न ही वकीलों को समय पर पंजीकरण देने जैसी समस्याओं का समाधान कर सकी है।

कुल मिलाकर, बीसीआई की नियामक निष्क्रियता, खराब जवाबदेही तथा पारदर्शिता के अभाव के कारण न केवल कानूनी शिक्षा की गुणवत्ता में कमी आई है, बल्कि न्यायिक संकट में भी इसका योगदान रहा है, जिसका बोझ अभ्यर्थियों, खासतौर से वंचित वर्ग तथा कानून-संबंधी पृष्ठभूमि से रहित अभ्यर्थियों पर पड़ रहा है। अगर मुद्दा क्षमता एवं तैयारी का है, तो इसका मूल कारण केवल वकालत के अनुभव की कमी में नहीं, बल्कि संबंधित सिस्टम की असफलता में निहित है, क्योंकि बीसीआई इन समस्याओं का समाधान नहीं कर सकी है तथा इस प्रकरण में बीसीआई की खामोशी और भी ज्यादा चिंताजनक है। पुनर्विचार याचिका में मांग की गई है कि मई 2025 के फैसले पर रोक लगाई जाये, इस नियम को 2026 बैच से लागू किया जाये, प्रभावित होने वाले उम्मीदवारों को अधिकतम उम्र सीमा में छूट दी जाये तथा इस नियम के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए विशेषज्ञ आयोग का गठन किया जाये। याचिका में अदालत से यह भी अनुरोध किया गया है कि बीसीआई को नामांकन और कॉलेज मान्यता प्रणाली में सुधार के निर्देश दिये जाये। इससे पहले, अधिवक्ता चंद्र सेन यादव ने भी एक याचिका दायर की थी, जिसमें इस नियम (तीन वर्ष की अनिवार्य वकालत) को संविधान के अनुच्छेद 14 और 16 के तहत मौलिक अधिकारों का उल्लंघन बताया गया था। सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय आलोचना का विषय बन गया है, विशेषकर इस कारण कि यह महिलाओं को न्यायिक सेवा की ओर बढ़ने से रोक सकता है या उनकी न्यायिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा होने में देरी कर सकता है।

चंद्रबाबू...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पर्दे के पीछे, 2027 के संभावित राजनीतिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए गंभीर पुनर्विचार की प्रक्रिया चल रही है।

भारतीय सेना ने आकाश प्राइम एयर डिफेंस सिस्टम का सफल परीक्षण किया

परीक्षण लद्दाख में 15,000 फीट से अधिक की ऊंचाई पर किया गया

- रक्षा अधिकारियों ने बताया कि इस सिस्टम ने ऑपरेशन सिंदूर में भी शानदार प्रदर्शन किया था।

नई दिल्ली, 16 जुलाई। भारतीय सेना ने बुधवार को स्वदेशी रूप से विकसित किए गए आकाश प्राइम एयर डिफेंस सिस्टम का सफल परीक्षण किया। यह परीक्षण लद्दाख क्षेत्र में 15,000 फीट से अधिक की ऊंचाई पर किया गया। परीक्षण सेना ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में हुआ, जिन्होंने इस प्रणाली को विकसित किया है।

परीक्षण के दौरान सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों ने बहुत तेज गति से उड़ रहे हवाई लक्ष्यों पर सीधा प्रहार किया। यह परीक्षण बहुत अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्र में किया गया।आकाश प्राइम सिस्टम अब भारतीय सेना की हवाई सुरक्षा की तीसरी और चौथी यूनिट (रेजिमेंट) का हिस्सा बनेगा। इसका मतलब है कि अब यह नई प्रणाली सेना की और दो टुकड़ियों में शामिल की जाएगी ताकि दुश्मन के हवाई हमलों से और बेहतर तरीके से रक्षा की जा सके।

रक्षा अधिकारियों के अनुसार, इस प्रणाली ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भी बहुत अच्छा प्रदर्शन किया था। उस समय पाकिस्तान की सेना द्वारा चीनी विमानों और तुर्किये के ड्रोन से किए गए हवाई हमलों को इस प्रणाली ने सफलतापूर्वक नाकाम किया था। आकाश प्राइम सिस्टम भारत की रक्षा तकनीक में आत्मनिर्भर बनने की बड़ी कोशिश का हिस्सा है, खासकर वायु सुरक्षा जैसे अहम क्षेत्र में।

सुप्रीम कोर्ट ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कहा कि इस मामले में फिल्म डायरेक्टर के साथ कन्हैयालाल के बेटे को भी जान से मारने की धमकी मिल रही है। इस पर कोर्ट ने निर्देश दिए कि इस मामले में संबंधित कमीशन और एसपी इसका आंकलन करें।

इंडिगो फ्लाइट की मुंबई में इमरजैंसी लैंडिंग

नई दिल्ली, 16 जुलाई। दिल्ली से गोवा जा रही इंडिगो फ्लाइट को मुंबई में इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी क्योंकि विमान का एक इंजन फेल हो गया था। मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर इंडिगो फ्लाइट को इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी।

इंडिगो प्रवक्ता ने कहा कि दिल्ली से मनोहर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे, गोवा के लिए उड़ान भरते समय उड़ान संख्या 6ई 6271 में तकनीकी खराबी का पता चला। प्रक्रियाओं का पालन करते हुए, विमान को दूसरी दिशा में मोड़ दिया गया और मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतारा गया।

- दिल्ली से गोवा जा रही फ्लाइट का एक इंजन फेल हो गया था।

सूत्रों ने बताया कि एयरबस ए320एनईओ से संचालित इस उड़ान की रात 9.52 बजे आपातकालीन लैंडिंग हुई। उड़ान में सवार लोगों की संख्या का तुरंत पता नहीं चल सका है।

इंडिगो ने बयान जारी कर कहा कि विमान यात्रा पूरी करने के लिए एक वैकल्पिक विमान की व्यवस्था की गई है।

भारत को "फिफ्थ जैनरेशन"...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हेलीकॉप्टर 2015 में अमेरिका और बोइंग के साथ हुए समझौते के तहत मिले थे। इस बार जो छह अपाचे मिल रहे हैं, वे 2020 में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की भारत यात्रा के दौरान हुए 600 मिलियन डॉलर के सौदे का हिस्सा हैं, और इन्हें भारतीय सेना को दिया जाएगा।

अपाचे के साथ-साथ, भारत के घरेलू फाइटर जेट प्रोग्राम एएमसीए को भी बड़ा प्रोत्साहन मिला है। सरकार ने इसके "एग्ज़ीक्युटिव मॉडल" को मंजूरी दे दी है। यह फाइटर जेट पूरी तरह से भारत में बनेगा और 5वीं पीढ़ी का स्टैल्थ फाइटर होगा, जिसमें गहराई तक घुसकर हमला करने की क्षमता होगी। यह भारत को अमेरिका, रुस व चीन के समकक्ष पहुंचा देगा, जिनके पास उनके देश में ही बने पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान हैं।

इस प्रोजेक्ट का नेतृत्व डीआरडीओ और एरोनॉटिकल डेवलपमेंट एजेंसी (एडीए) कर रही हैं, और इसमें एचएएल (हिन्दुस्तान एटोनॉटिकल लिमिटेड) भी सहयोग कर रहा है। यह दो इंजन वाला मल्टी-रोल फाइटर होगा, जिसमें स्टैल्थ, सुपरक्रूज़, इंटरनल वेपन बे, और एडवांस इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर सिस्टम जैसी खूबियाँ होंगी। इसे भविष्य में अपग्रेड करने के लिए मॉड्यूलर डिज़ाइन में बनाया जाएगा, जिसमें बिना पायलट के उड़ान की क्षमता भी शामिल हो सकेगी।

सरकारी मंजूरी के बाद, अब दो टैक्नॉलजी डैमोंस्ट्रेटर और पांच लिमिटेड सीरीज़ प्रोडक्शन यूनिट बनाए जाएंगे। इसका पहला उडान परीक्षण अभी वर्षों दूर है और माना जा रहा है यह 2030 के आसपास काम करने लगेगा। लेकिन यह कदम भारत की 'आत्मनिर्भर भारत' योजना के तहत रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक मजबूत इशारा है। इस समय भारतीय वायुसेना एसयू-30 एमकेएल और राफेल जैसे चौथी पीढ़ी के विमानों पर निर्भर है। जब तक एएमसीए पूरी तरह तैयार नहीं होता, भारत 5वीं पीढ़ी के कुछ विमान बाहर से खरीदना जारी रख सकता है। लेकिन डिज़ाइन, निर्माण और रक्षा निर्यात क्षमता की दिशा में एएमसीए भारत की दीर्घकालिक सोच है।

अपाचे हेलीकॉप्टरों की तैनाती और एएमसीए प्रोजेक्ट की मंजूरी भारत की दोहरी रणनीति को दर्शाती है। एक ओर, अभी के लिए क्षमता की कमी को पूरा करना, और दूसरी ओर, भविष्य के लिए स्वदेशी रक्षा ढांचा खड़ा करना। एक तरफ अपाचे जांचा परखा "अजेय उड़न दुर्ग" है, और दूसरी ओर एएमसीए तकनीकी संप्रभुता की एक साहसी योजना है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा मैसर्स अरावली प्रिन्टर्स, राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर (राजस्थान) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 65015/96, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34 फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908